इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

बी.ई.एस-ई.–131
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खंड

4

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन

इकाई 13
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन 7

इकाई 14
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता का सुनिश्चयन 35

इकाई 15
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र 67

इकाई 16
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान 88

विशेषज्ञ समिति

प्रो. आई. के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रो. श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रो. परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
एवं प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

प्रो. प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.,राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रो. अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एन. के. दाश
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एम. सी. शर्मा (कार्यक्रम समन्वयक-बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सह-समन्वयक, बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित संकाय सदस्य (शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू)

प्रो. डी. वेंकटेश्वरलू
प्रो. अमिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आईशा कन्नाड़ी
डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेत कुरुविल्ला
डॉ. निराधार डे

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम योगदान (पुनरीक्षण से पूर्व अंग्रेजी)

प्रो. एस. पाण्डा
स्ट्राइड, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम पुनरीक्षण (अंग्रेजी)

डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी,
(इकाई 13, 14, 15 एवं 16)
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

आरूप, विषयवस्तु एवं भाषा संपादन
डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक दल (हिन्दी)

अनुवादक

डॉ. आरती आनंद, (इकाई 13)
पोस्ट–डाक्टरल फैलो, एच.पी.यूनिवर्सिटी, शिमला

डॉ. दया शंकर मिश्रा, (इकाई 14)
राष्ट्रीय संस्कृति विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रो. बी. एस. डागर, (इकाई 15 एवं 16)
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, एम.डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

भाषा पुनरीक्षण एवं प्रूफ रीडिंग
श्री चन्द्रशेखर (पूर्व रिसर्च असिस्टेंट)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामाग्री निर्माण

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

श्री एस.एस वेंकटाचलम
सहायक कुल सचिव, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

जनवरी, 2018

©इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2018

ISBN-978-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

शिक्षा विद्यापीठ एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, प्रो. सरोज पाण्डेय, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक :

बी.ई.एस.ई.-131 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खंड 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षाः उद्भव एवं विकास

इकाई 1 ऐतिहासिक विकास

इकाई 2 सैद्धान्तिक आधार

इकाई 3 भारतीय अनुभव

इकाई 4 वैश्विक अभ्यास

खंड 2 दूरस्थ शिक्षणः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संसाधनों का स्वरूप एवं विकास

इकाई 5 स्व-अधिगम सामग्रियों का स्वरूपण

इकाई 6 मुक्त-एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु मीडिया एवं प्रौद्योगिकी

इकाई 7 स्व-अधिगम मुद्रित सामग्रियों का विकास

इकाई 8 ई-अधिगम संसाधनों का विकास

खंड 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाएँ

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षार्थी तथा स्व-निर्देशित अधिगम

इकाई 10 दूरस्थ शिक्षण में परामर्श एवं अनुशिक्षण

इकाई 11 शिक्षार्थी निष्पत्ति का आंकलन

इकाई 12 शिक्षार्थी सहायता प्रणाली एवं सेवाएँ

खंड 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन

इकाई 13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन

इकाई 14 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन

इकाई 15 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र

इकाई 16 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

खण्ड 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन

खण्ड की प्रस्तावना

हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संसाधनों के स्वरूप एवं विकास सहित दूरस्थ शिक्षण तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में आवश्यक शिक्षार्थी सहायता सेवाओं का क्रमशः खण्ड 1, 2 तथा 3 में चर्चा किया है। आप दूरस्थ शिक्षण तथा संस्थागत संरचना के अंतर्गत विभिन्न स्तरों पर स्थापित संरचनाओं के माध्यम से होने वाले अधिगम की सहायता हेतु सहायता सेवाओं को समझ गए होंगे। परंतु इन संरचनाओं, इनके कार्यों, प्रक्रियाओं, कार्यक्रमों, लागतों आदि को निरंतर प्रबंधित, समन्वयन तथा पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता होती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चियन हेतु समय-समय पर इनका मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सिद्धान्त एवं व्यवहार में सुधार के लिए शोध के योगदान का अपना महत्व है। अतः यह खण्ड मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन के इन पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करता है।

यह खण्ड (अर्थात् खण्ड 4) इस पाठ्यक्रम का अंतिम खण्ड है। चार इकाइयों (इकाई 13 – 16) से निर्मित यह खण्ड, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र एवं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन तथा शोध का एक परिदृश्य प्रस्तुत करता है।

इकाई 13, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन, सामान्य रूप में प्रबंधन के कार्यों एवं प्रक्रियाओं तथा द्विपद्धति, एकल पद्धति एवं संगठनात्मक (कन्सोर्टियम) पद्धति के संगठनात्मक संरचना के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की शैक्षिक, प्रशासनिक तथा औद्योगिक उप-पद्धति के विशेष संदर्भ में चर्चा करती है।

इकाई 14, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन, गुणवत्ता के सुनिश्चयन के मुद्दों तथा मानकों और निवेश प्रक्रिया एवं उत्पाद मूल्यांकन पर बल के साथ कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकारों का भी वर्णन करती है।

इकाई 15, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र, निवेश एवं उपभोग के रूप में (दूरस्थ) शिक्षा की अवधारणाओं तथा शिक्षा के माध्यम से मानवीय पूँजी निर्माण के महत्व तथा राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की व्याख्या करती है। यह विभिन्न प्रकार की लागतों का वर्णन, लागतों को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मापक के अर्थशास्त्र की व्याख्या भी करती है।

इकाई 16, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान, ज्ञान की निकाय तथा इसकी प्रस्तुति के लिए दूरस्थ शिक्षा में शोध के योगदान को आलोकित करती है तथा शोध प्रवृत्तियों के साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रणालीगत एवं क्रियात्मक शोध पर ध्यान केन्द्रित करती है।

इस खण्ड के अध्ययन के पश्चात् आप :

- विभिन्न प्रकार के मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में सम्मिलित पद्धतियों, प्रणालियों तथा संगठनात्मक संरचनाओं की तुलना कर सकेंगे;

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दों, मानकों, चुनौतियों, पद्धतियों तथा साधनों का विश्लेषण कर सकेंगे;

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु शिक्षा के अर्थशास्त्र की अवधारणाओं का अनुप्रयोग कर सकेंगे;

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबंधन व्यवस्थाओं का मूल्यांकन कर सकेंगे; तथा दिए गए संदर्भों में उनके अभ्यासों को न्यायसंगत ठहरा सकेंगे; तथा

- शोध प्रवृत्तियों को समझ सकेंगे तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में प्रणालीगत एवं क्रियात्मक शोध की आवश्यकता एवं महत्व की प्रशंसा कर सकेंगे।

इस खण्ड में इकाइयों का स्वरूप एवं प्रस्तुति पाठ्यक्रम के अन्य खण्डों की इकाइयों के समान है। इस खण्ड में विषयवस्तु तक आपकी पहुँच में सहायता हेतु हम आपको सुझाव देते हैं कि आप "खण्ड 1 की प्रस्तावना" के अंतर्गत दिए गए इकाइयों के स्वरूपों की योजनाबद्ध प्रस्तुति तथा अन्य विवरणों को देखिए या प्रत्यास्मरण कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रबंधन के प्रकार्य एवं प्रक्रियाएँ : एक परिदृश्य

- 13.2.1 संस्थागत प्रबंधन : मुख्य प्रकार्य
- 13.2.2 संस्थागत निर्णयन प्रक्रिया
- 13.2.3 प्रबंधन सूचना तंत्र

13.3 प्रबन्धन मुद्दे

- 13.3.1 गुणवत्ता नियंत्रण एवं सेवा प्रबन्धन
- 13.3.2 उत्तरदायित्व
- 13.3.3 तकनीकी नवाचारों का प्रबन्धन
- 13.3.4 विपणन
- 13.3.5 संजाल/प्रसार

13.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था प्रबन्धन : विभिन्न प्रतिमान

- 13.4.1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान/व्यवस्थाएँ
- 13.4.2 एकल एवं द्वैध व्यवस्था वाले संस्थानों की तुलना
- 13.4.3 दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का कन्सोर्टियम प्रतिमान

13.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

- 13.5.1 इग्नू की संगठनात्मक संरचना
- 13.5.2 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की संगठनात्मक संरचना
- 13.5.3 पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थानों/दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों की संगठनात्मक संरचना

13.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के उपतंत्र

- 13.6.1 प्रशासनिक उपतंत्र
- 13.6.2 शैक्षणिक उपतंत्र
- 13.6.3 औद्योगिक उपतंत्र

13.7 सारांश

13.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

13.9 संदर्भ ग्रंथ

13.10 इकाई अंत अभ्यास

13.0 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के प्रथम खंड में आपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्भव एवं विकास के बारे में जानकारी प्राप्त की। द्वितीय खंड में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संसाधनों के स्वरूप तथा विकास एवं अन्य विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। तृतीय खंड में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाओं के बारे में समझा। इन तीन खंडों के अध्ययन के उपरांत आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विकास, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थी आँकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रिया समेत मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में समग्र बोध

हो चुका होगा। फिर भी, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के बारे में आपकी समझ अधूरी है यदि आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी न हो।

इसलिए, इस खंड में (खंड 4, जो इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है), हमारा प्रयास आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के योजना एवं प्रबन्धन के बारे में जानकारी प्रदान करना है। इस प्रयास के रूप में, इस इकाई में हम दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन व्यवस्था की रूपरेखा, दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विभिन्न उपतंत्रों में अंतर्संबंध तथा इन संस्थानों के प्रकार्यों, प्रक्रियाओं तथा प्रबन्धन मुद्दों और प्रतिमानों के बारे में जानेंगे।

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन में निहित प्रकार्यों एवं प्रक्रियाओं के बारे में समझ सकेंगे;
- विभिन्न मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संगठनात्मक संरचना का वर्णन कर सकेंगे;
- प्रबंधन सूचना तंत्र की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विभिन्न प्रतिमानों की तुलना कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन में निहित मुद्दों पर चर्चा कर सकेंगे; और
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न कार्यात्मक उप-प्रणालियों या उपतंत्रों के मध्य अंतर्संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।

13.2 प्रबंधन के प्रकार्य एवं प्रक्रियाएँ : एक परिदृश्य

किसी शिक्षण संस्थान के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित निर्णयन प्रक्रिया एवं उसकी प्रकृति पर संगठन और संरचना का गहरा प्रभाव होता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान भी इससे अलग नहीं हैं। दूरस्थ शिक्षा संस्थान की संरचना इसको एवं उपतंत्रों के संगठन एवं प्रबन्धन को निर्धारित करती हैं। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा संस्थान की प्रकृति और प्रकार के आधार पर इसकी संरचना निर्धारित होती है। एक संस्थान स्वतंत्र एवं स्वायत्त हो सकता है, चाहे एकल व्यवस्था वाला या दोहरी व्यवस्था वाला (जिसमें औपचारिक एवं दूरस्थ शिक्षा दोनों का प्रावधान होता है)। दोहरी व्यवस्था वाले संस्थानों में अध्यापक, दोनों प्रकार के विद्यार्थियों (नियमित एवं दूरस्थ विद्यार्थी) को पढ़ा सकता है या फिर इनमें अलग-अलग अध्यापकों का प्रावधान हो सकता है। एक संस्था चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसमें संगठनात्मक संरचना या तो ऊपर से नीचे उपागम या फिर नीचे से ऊपर की उपागम (सहयोगी प्रतिमान) अपनाई जा सकती है। विभिन्न उपतंत्रों को स्वतंत्र रूप से संचालित किया जा सकता है और प्रबंधन सूचना तंत्र (Management Information System - MIS) की सहायता से समन्वय किया जा सकता है या केन्द्रीय स्तर पर इन्हें नियंत्रित या पर्यवेक्षण किया जा सकता है। व्यवस्था एवं इसके उपतंत्रों में कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास एवं इन अभ्यासों से प्राप्त परिणामों का उपयोग संस्था की संगठनात्मक संरचना पर निर्भर करता है।

निम्नलिखित तीन उपभागों में हम दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संरचना एवं प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। यह विभिन्न उप प्रणालियों या उप तंत्रों के प्रबंधन पर अधिक चर्चा और इस इकाई के अलग भागों में प्रस्तुत कुछ मुद्दों के विश्लेषण के लिए मजबूत आधार प्रदान करेगा।

13.2.1 संस्थागत प्रबंधन : मुख्य प्रकार्य

संस्थागत प्रबंधन में, संस्था निर्माण एवं विकास केन्द्रीय पहलू हैं। एक संगठन आंतरिक रूप से विकसित होने का प्रयास करता है ताकि यह विकसित रूप से कार्य करने की क्षमता ग्रहण कर सके तथा समाज पर एक प्रभाव छोड़ सके। दूसरे शब्दों में, एक संस्था अपने कार्यों में नवाचार एवं उत्कृष्टता प्रदर्शित करने का प्रयास करती है, तो साथ ही साथ यह समाज में परिवर्तन लाने और उसके प्रबंधन करने में भी सहायक होती है। प्रभावशीलता एवं कार्य कुशलता, किसी भी सुप्रबंधित संस्थान के महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं जो अपनी संस्कृति और लोकनीति स्थापित करने का प्रयास करता है।

एक संस्थान को आवश्यक सहायता एवं लचीलापन प्रदान करना चाहिए ताकि सभी को इससे जुड़े होने में गौरव महसूस हो। इसे प्रत्येक के समक्ष कुछ चुनौतियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि विकास हो सके। संस्थानों को परिवर्तन एवं नवाचार लाने चाहिए और अच्छी तरह प्रबंधित करना चाहिए जिससे सामाजिक विकास का रास्ता साफ हो सके। इसके लिए संस्थान को सर्वप्रथम नीति बनानी चाहिए तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य की प्रकार्य, शक्तियाँ एवं जिम्मेदारियाँ प्रदान करनी चाहिए। उत्तरदायित्व तय होना चाहिए तथा व्यक्तिगत या सामूहिक कार्य के लिए प्रावधान होना चाहिए। संस्थान के कार्यों में सामूहिकता एवं सभी की भागीदारी झलकनी चाहिए।

संगठन के अपने संदेश लक्ष्य, उद्देश्य तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना होती है। नवाचारों एवं बाहरी बदलावों या वातावरण में परिवर्तन के अनुसार नीतियाँ लचीली होनी चाहिए। इसलिए, संगठन को संस्थागत लक्ष्यों एवं कार्य योजना के अनुसार अपनी शक्तियों का उपयोग एवं जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए। इसके लिए एक स्पष्ट और ध्यान केंद्रित संगठनात्मक नीति की आवश्यकता है। एक संगठन में इसके सदस्यों को कार्यों का आवंटन करने के लिए आवश्यक प्रबंध जैसे संसाधन, प्रशिक्षण, आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। निर्णयन की जिम्मेदारी उच्च प्रबंधन स्तर की होती है, इसलिए ऊपर से नीचे की ओर का प्रतिमान या उपागम अपनाना चाहिए। लेकिन, एक संगठन अच्छे ढंग से कार्य करता है तथा अपने उद्देश्यों को अधिक प्राप्त कर सकता है यदि नीचे से ऊपर की ओर उपागम को निर्णय निर्धारण एवं कार्यान्वयन में अपनाया जाता है। पूर्व की तुलना में उत्तरार्द्ध बेहतर होगा क्योंकि इससे आपसी सहयोग, सामूहिक जिम्मेदारी तथा संस्थागत प्रतिबद्धता विकसित होती है।

संगठन में उचित और निष्पक्ष संप्रेषण होना चाहिए क्योंकि इसकी कमी के कारण संगठन में आलस्य, अव्यवस्था तथा संशयवाद की स्थिति पैदा होती है तथा संगठन की कार्यशीलता प्रभावित होती है। एक सुविकसित प्रबंधन सूचना तंत्र संगठन को प्रभावी एवं कुशल कार्य पद्धति की तरफ लेकर जाता है।

संगठन, इसकी कार्य पद्धति, कर्मचारी तथा संसाधनों का समय-समय पर मूल्यांकन होना चाहिए। मूल्यांकन का कार्य, संगठन की विभिन्न इकाइयों या विभागों द्वारा किया जाता है जिन्हें इसके लिए संस्थागत प्रमुख या प्राधिकरण द्वारा उपयुक्त शक्तियाँ प्रदान की जाती हैं। मूल्यांकन चर में संस्था ही शामिल होती है – नीति और मिशन, कर्मियों और उनके

निष्पादन, प्रक्रियाओं, संसाधनों का उपयोग और नियमित निगरानी और कार्यक्रम मूल्यांकन के मजबूत तंत्र हैं जिससे संगठन के प्रभावशीलता और दक्षता के उच्च स्थर को बनाये रखने के लिए उसे आवश्यक प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। मूल्यांकन, लोकतंत्रात्मक एवं सहयोगात्मक तरीके से होना चाहिए जिसमें संगठन के कर्मचारियों की भागीदारी होनी चाहिए ताकि मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग संस्था को अपने सुधार हेतु करने के लिए अधिक संभावना हो। संस्था की कमियों तथा अच्छाइयों को पहचाना जाना चाहिए तथा प्रबन्धन कौशलों को विकसित किया जाना चाहिए ताकि संगठनात्मक प्रभावशीलता सम्बन्धी निर्णयों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जा सके।

13.2.2 संस्थागत निर्णयन प्रक्रिया

संस्था में निर्णयन प्रक्रिया संगठन के कामकाज तथा कार्यक्रम मूल्यांकन की आवश्यकता और कार्यप्रणाली को निर्धारित करती है। संस्था में कुछ प्राधिकारी होते हैं जो संस्था के नियमों, कानूनों, अधिनियमों इत्यादि के अंतर्गत कार्य करते हैं तथा समग्र नीति निर्देशन प्रदान करते हैं। परंतु, दैनिक कार्यों के लिए संस्था या तो ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर की उपागम या सहभागिता उपागम को अपनाना चाहिए ताकि संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (Total Quality Management - TQM) के अंतर्गत निर्णय लिए जा सके।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन का अभिप्राय है कि संस्था का प्रत्येक व्यक्ति एवं गतिविधि संस्था के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में निर्देशित होता है। एक सुव्यवस्थित प्रबंधन सूचना तंत्र संप्रेषण तथा प्रभावी निर्णय लेने में सहायक होता है। प्रबंधन सूचना तंत्र का दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में अन्य औपचारिक शिक्षण संस्थानों की तुलना में ज्यादा महत्व एवं आवश्यकता है।

13.2.3 प्रबंधन सूचना तंत्र

प्रबंधन सूचना तंत्र में अनवरत्, अंतराल पर सूचनाओं का एकत्रीकरण, प्रक्रमण एवं पुनः प्राप्त करना शामिल होता है ताकि प्रबन्धन को प्रभावी किया जा सके। सही एवं उचित निर्णय लेने के लिए प्रणाली के निवेश, प्रक्रिया तथा उत्पादन एवं बाधाओं या समस्याओं के बारे में पता लगाने के लिए सूचना या डेटा बहुत आवश्यक है। प्रबंधन सूचना तंत्र के आधार पर मजबूतियों, कमियों, अवसरों एवं बाधाओं (SWOT - Strengths, Weaknesses, Opportunities, and Threats) का विश्लेषण, संस्था को आगे बढ़ने एवं नए बदलावों का प्रबन्धन करने के लिए बहुत सहायक होता है। प्रबंधन सूचना तंत्र एक निर्णय निर्माता को निवेश, प्रक्रिया तथा उत्पादन के बारे में उचित फैसले लेने में सक्षम बनाता है। प्रबंधन सूचना तंत्र सतत्, समयबद्ध उचित एवं उपयोगी होना चाहिए।

दूरस्थ शिक्षा संस्थान (distance teaching institution - DTI) में एक केन्द्रीय इकाई होनी चाहिए जो संस्था एवं इसकी विभिन्न पहलुओं, कार्यात्मक इकाइयां और गतिविधियों के बारे में सूचनाएँ एकत्रित एवं संग्रहित करे। इस इकाई के सूचना का उपयोग करने वालों से लगातार संवाद होते रहना चाहिए ताकि उच्च प्राधिकारियों को सही निर्णय लेने के योग्य बनाया जा सके। हालाँकि इसमें सूचना नियंत्रण का बहुत प्रभाव पड़ता है जो सूचना प्रसारण के बजाय उसके नियंत्रण पर अधिक बल देते हैं। यदि उचित एवं सूचनाओं पर आधारित निर्णय नहीं होंगे तो कर्मचारी संशयवादी हो जाएँगे तथा केन्द्रीय इकाई को उचित सूचनाएँ ही प्रदान नहीं करेंगे। अतः प्रबन्धन सूचना तंत्र का उचित प्रबंधन आवश्यक है। यह आवश्यक है कि एकत्रित सूचनाओं को स्थानीय क्षेत्रीय नेटवर्क – (local area network - LAN) – के द्वारा सही रूप में अभिक्रमित एवं संग्रहित किया जाए।

13.3 प्रबन्धन मुद्दे

किसी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्था एवं इसके उपतंत्रों के प्रबन्धन में बहुत सारे कारक शामिल होते हैं जो संस्था के प्रबन्धन, विकास एवं प्रबन्धन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित उपभागों में हम इन्हीं कुछ महत्वपूर्ण कारकों के बारे में चर्चा करेंगे जिन्हें किसी संस्था के प्रभावी कार्यशील होने के लिए लगातार मजबूत किया जाना आवश्यक है।

13.3.1 गुणवत्ता नियंत्रण एवं सेवा प्रबन्धन

गुणवत्ता, हालाँकि एक भटकाने वाली अवधारणा है। इसको परिभाषित करने की आवश्यकता है, इसके संकेतक विकसित करना है, प्रक्रियाओं की रूपरेखा निश्चित करना है, और किसी भी गतिविधि के निवेश, प्रक्रिया और उत्पादन चरणों में शामिल सभी लोगों द्वारा की गई क्रियाओं को नियंत्रित किया जाना है। किसी उद्देश्य के लिए उत्पाद की उपयुक्तता, इसकी गुणवत्ता को संदर्भित करती है (गुरी, 1987)। होल्ट (1990) के अनुसार, गुणवत्ता, औद्योगिक शब्दों में, त्रुटिमुक्त, पूरी तरह से विश्वसनीय उत्पाद और सेवाएँ, या ग्राहक किसी उत्पाद की गुणवत्ता को मापते हैं कि यह किसी निश्चित समय पर उनकी अपेक्षाओं को कैसे पूरा करती है। ये परिभाषाएँ, अच्छी गुणवत्ता अधिगम के लिए महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं या गतिविधियों को समझने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती हैं। अवब्रथ (2013) के अनुसार, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम की ''गुणवत्ता'' का निर्णय अधिगम की सामग्री के संदर्भ में किया जाता है; जो ऐसी धुरी है जिस पर संपूर्ण अधिगम उद्यम बदल जाता है। हालाँकि, एक पाठ्यक्रम, सिर्फ सामग्री से ज्यादा, यह शिक्षार्थी के अनुभव की संपूर्णता भी है। क्योंकि, यह मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रदान करने वाले का उद्देश्य अधिगम की स्थितियों का निर्माण करना है, इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि पाठ्यक्रम उत्पादन, वितरण और विद्यार्थी सहायता प्रणाली कितनी अच्छी तरह काम करती है, और परिचालन शर्तों में ये सभी कितनी अच्छी तरह से एकीकृत होते हैं। उत्कृष्ट सामग्री बेकार है, यदि विद्यार्थियों को वितरित न हों, घटिया/खराब/तुच्छ सामग्री का समय पर वितरित होने पर भी सीमित मूल्य है। उत्पादों के निर्माण और सेवाओं के प्रावधान को आगे बढ़ाने के लिए ऐसी प्रक्रियाएँ और संचालन हैं जो जब तक विफल नहीं होते हैं, वे दिखाई नहीं देते हैं। योग्य होने की तुलना में, उन्हें कम ध्यान दिया जाता है और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के ध्यान के लिए एक प्रमुख क्षेत्र है। इसलिए, गुणवत्ता नियंत्रण महत्वपूर्ण है, जोकि गुरी (1987) के अनुसार, "मुख्य रूप से एक ऐसी क्रिया है जो कार्यों को पूर्व निर्धारित मानकों पर समायोजित करती है।" गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता सुनिश्चयन तंत्रशीलता, संगठनात्मक प्रभाव और प्रदर्शन में योगदान करते हैं, लेकिन इसका पता, सभी हितधारकों, अधिकारियों, संकाय सदस्यों और अन्य कर्मचारियों, विद्यार्थियों, माता-पिता, सरकार और अन्य निधिकरण संस्थाओं, नियोजकों/नियोक्ताओं और बड़े पैमाने पर जनता के दृष्टिकोणों से लगाने की आवश्यकता है। सभी उप-प्रणालियों के लिए निष्पादन संकेतक विकसित किए जा सकते हैं और उन सभी लोगों द्वारा अनुपालन किया जाए, ताकि दिए गए निष्पादन के स्तर को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी को पूरा किया जा सके। हालाँकि, यह महसूस किया जा सकता है कि ये संकेतक गुणवत्ता के मुद्दे को पूरी तरह समझा/स्पष्ट नहीं कर सकते। कुछ गुणात्मक पहलुओं को पदाधिकारियों/कार्यकर्त्ताओं के निरंतर व्यावसायिक विकास और अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से संभालने की आवश्यकता है; और वास्तव में गुणवत्ता का स्तर व्यावसायिकता के स्तर, और दूरस्थ शिक्षण में लगे मानव संसाधनों पर निर्भर करता है। प्रमुख विचार अधिगम सामग्रियों की गुणवत्ता से और विद्यार्थियों को पेश की गई सहायक सेवाओं जैसे जानकारी, सामग्री प्रेषण, परामर्श,

परीक्षा इत्यादि से सम्बन्धित हैं। सरल विपणन दृष्टिकोण पूरी तरह से स्थिति का सामना करने में मदद नहीं कर सकता है क्योंकि अपने ग्राहकों तक पहुँचने में प्रदाताओं/कार्यकत्ताओं की पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

13.3.2 उत्तरदायित्व

एक बार कार्य आवंटित किए जाते हैं और जिम्मेदारी तय हो जाती है, प्रक्रिया की निरंतर निगरानी करना आवश्यक हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को दिए गए कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, निरंतर संचार और प्रतिबद्धता के साथ, प्रणाली में और उसके कार्यकरण में अधिक विश्वास को विकसित करने में योगदान (विचलित होने की बजाय) देते हैं। आमने-सामने शिक्षण के विपरीत, जहाँ अध्यापक शिक्षण के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं, दूरस्थ शिक्षा में समूह/टीम का काम शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति का योगदान प्रणाली की सफलता और इसकी प्रक्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण है। स्वायत्तता – प्रशासनिक, शैक्षिक और वित्तीय – तथा उत्तरदायित्व के बीच उचित संतुलन के साथ किसी भी प्रणाली के कार्य संचालन से अधिक लाभ लेने की अपेक्षा कर सकते हैं।

13.3.3 तकनीकी नवाचारों का प्रबन्धन

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, देर से, वितरण और अन्योन्यक्रिया/पारस्परिक क्रिया की प्रौद्योगिकियों पर निर्भर हो चुकी है। तकनीकियों का प्रयोग सामग्रियों के विकास में हो सकता है, लेकिन बड़े पैमाने पर संचार और सूचना प्रौद्योगिकियों जैसे दृश्य, श्रव्य, रेडियो, टेलीविजन, टेलीकांफ्रेंसिंग, इंटरनेट, वेब कॉफ्रेंसिंग सभी का उपयोग अधिगम के वितरण के लिए किया जाता है जिसे अब "वितरित शिक्षा" कहा जाता है। प्रौद्योगिकियों जैसे कम्प्यूटर (और इंटरनेट) प्रणाली के संचालन, सूचना भंडारण और प्रसार और अधिगम पैकेजों के विकास में शामिल हैं। ऐसी प्रणाली का रखरखाव मुश्किल है और साथ ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उप प्रणाली के संचालन की सफलता के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ, प्रौद्योगिकियों जैसे टेलीकांफ्रेंसिंग और संवादात्मक रेडियो परामर्श में बड़े नेटवर्क शामिल हो सकते हैं जिन्हें बनाए रखना या रखरखाव और प्रबंधित किया जाना चाहिए। इसलिए, उपयुक्त प्रौद्योगिकियों का विकल्प, भविष्य के तकनीकी विकास के साथ उनकी अनुकूलता, तकनीकी नवाचारों के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण है। अंततः, सफलता का माप यह निर्धारित करने में निहित है कि क्या तकनीकि वस्तुएँ अधिक प्रभावी ढंग से करने में और विद्यार्थियों द्वारा प्रभावी और सक्रिय अधिगम को सुगम बनाने में सहायता कर रही हैं।

13.3.4 विपणन

दूरस्थ शिक्षा संस्थान या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान लगातार अपने उत्पादों, सेवाओं और ब्रांड के विपणन में व्यस्त हैं। दूरस्थ शिक्षा, विशेष रूप से व्यावसायिक क्षेत्रों में और व्यावसायिक विकास जारी रखने के लिए संभावित ग्राहकों के लिए पेश किए गए कार्यक्रमों में गुणवत्ता, उपयुक्तता और लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी बन गए हैं। गुणवत्ता सुनिश्चयन और समुचित रूप से मान्यता प्रस्तुत किए जाने वाले मुद्दे बन गए हैं। मुख्यतः

i) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विपणन करने की आवश्यकता है (यदि कोई इसकी गुणवत्ता से इन-हाउस आश्वस्त हो); और

ii) किसी के दृष्टिकोण में व्यवसायी होने के लिए सेवा की गुणवत्ता को बढ़ाने की आवश्यकता है।

13.3.5 संजाल/प्रसार

संजाल/प्रसार, नेटवर्किंग और सहयोग दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की प्रभावी कार्य पद्धति के लिए महत्वपूर्ण हैं।। नेटवर्किंग (प्रसार) में शामिल हैं, संगठन के भीतर नेटवर्किंग, संपूर्ण विश्व में तकनीकी नेटवर्किंग (वास्तविक नेटवर्किंग सहित), विकास के लिए मानव नेटवर्किंग और उपयुक्त स्वयं-अध्ययन के पैकेज के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए उनका प्रभावी वितरण, संसाधन नेटवर्किंग और सहयोग जो प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए और लागत को कम करने के लिए हो सकते हैं। ऐसे नेटवर्क सहयोगी संस्थानों के बीच क्रेडिट स्थानांतरण, संयुक्त डिग्री कार्यक्रमों और शिक्षण-अधिगम संसाधनों का संयुक्त विकास और साझा करने का नेतृत्व करते हैं। संजाल/प्रसार, नेटवर्किंग और इनसे जुड़ी प्रक्रियाओं को ध्यानपूर्वक प्रबंधित करने की आवश्यकता है क्योंकि यह सावधानी के साथ संभाला जाने वाला एक बहुत संवेदनशील क्षेत्र है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) दूरस्थ शिक्षा में विपणन सेवाओं के सुधार और उचित प्रबन्धन पर अपने विचार लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था प्रबन्धन : विभिन्न प्रतिमान

दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संरचना को अलग-अलग तरीकों से वर्णित किया गया है। आइए, कुछ प्रतिमानों को देखें जो प्रबन्धन संरचना या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रणाली से प्रासंगिकता/संबद्धता रखते हैं।

13.4.1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान/व्यवस्थाएँ

आइए, सबसे पहले हम, दूरस्थ शिक्षा के तीन प्रकार के प्रबन्धन प्रतिमानों – संस्था-केन्द्रित, व्यक्ति-केन्द्रित, और समाज-आधारित प्रतिमान जो रंबल (1986) द्वारा वर्णित किए गए हैं, पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

- **संस्था-केन्द्रित प्रतिमान** में शिक्षा के व्यवस्थित प्रतिमान की प्रबलता है, अर्थात प्रणाली को और अधिक कुशल और किफायती बनाने के लिए प्रत्येक प्रयास किए जाते हैं। सभी कार्यकर्त्ताओं को महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते हैं जो कि जबावदेही और व्यक्तिगत जिम्मेदारी; और शैक्षिक संगठन के लिए पाठ्यक्रम सामग्रियों को विकसित करने वाले सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं (उदाहरण, यू.के.ओ.यू.; इग्नू)।

- **व्यक्ति-केन्द्रित प्रतिमान** में, सेवा के लिए विद्यार्थी एक प्रमुख व्यक्ति है, और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम अधिक व्यक्तिगत और पराक्रम्य है। अनुशिक्षक/सलाहकार व्यक्तिगत रूप से व्यक्तिगत विद्यार्थियों के अधिगम का पराक्रम्य और अनुवर्तन करते हैं। (अथबास्का मुक्त विश्वविद्यालय, कनाडा)।

- **समाज आधारित प्रतिमानों** में, दूरस्थ शिक्षा सामग्रियों का इस्तेमाल एक समुदाय की स्थिति में किया जाता है जहाँ एक अध्यापक, इन सामग्रियों के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समुदाय के सभी सदस्यों को शामिल करता है। अध्यापक, अधिगम के लक्ष्यों, अधिगम की विषयवस्तु, अधिगम सामग्री और मूल्यांकन की कार्यविधि/तंत्र को पहचानने में सहायता करने के लिए एक सुविधाकर्त्ता के रूप में कार्य करता है। (उदाहरण के लिए, कृषि विस्तार कार्यक्रम, पॉलो फ्रेयर का दमनकारी शिक्षाशास्त्र)।

फ्रीमैन (1997) ने छः प्रकार की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों की पहचान की है जो कि चरों के दो समूहों में आधारित हैं : (i) क्या संस्थान परिसर-आधारित है, या संगठन-आधारित है, या व्यक्तिगत-आधारित, और (ii) क्या यह गतिमान या स्वयं–गतिमान है।

प्रत्येक समूह से एक चर के संयोजन से गठित छह प्रकार की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियाँ (तीन गुणा दो) निम्नानुसार हैं :

- *गति परिसर-आधारित* मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक औपचारिक प्रणाली की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है, अर्थात् सेमेस्टर, व्याख्यान, समय-सारणी आदि, लेकिन एक ही समय में अधिगम में व्यक्तिगत जिम्मेदारी प्रदान करती है।

- *गति संगठन-आधारित प्रणाली* में, प्रशिक्षण या सतत् शिक्षा की आवश्यकता तब होती है जब हाथ में काम की इतनी माँग होती है, बजाय जब कर्मचारियों को इसकी आवश्यकता है। कंपनी में, लचीली अधिगम योजनाएँ इस प्रकार की मुक्त शिक्षा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- मुक्त विश्वविद्यालय, मुक्त अधिगम के *गति-व्यक्तिगत-आधारित प्रणाली* का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि वे सभी शिक्षण-अधिगम सामग्री और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो संगठन की तैयारियों की गति पर आधारित होते हैं, बजाय इसके जब विद्यार्थियों की उनकी आवश्यकता होती है। वहाँ सामग्रियों के प्रेषण, सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करने और परीक्षाओं का संचालन के लिए समय सीमाए हैं। विद्यार्थियों को उस अनुसूची का पालन करना होगा यदि वह उस सेमेस्टर/सत्र/अवधि में शैक्षिक कार्यक्रम को पूरा करना चाहें।

- स्वयं-गति परिसर-आधारित प्रणाली में अध्यापक-विद्यार्थी संपर्क और पारस्परिक क्रिया बहुत अधिक होती हैं। अनुशिक्षण और मूल्यांकन दोनों व्यक्तिगत विद्यार्थियों की जरूरतों पर आधारित है। विद्यार्थियों के बीच परस्पर अंतःक्रिया की भी संभावना है।

- *आत्म-गति संगठन-आधारित प्रणाली* में, अध्यापक या अनुशिक्षक का स्थान पंक्ति प्रबन्धन ले लेते हैं, और बजाय कक्षा में होने के विद्यार्थियों में अधिगम होता है, जब वे सभी काम कर रहे होते हैं।

- पुराने पत्राचार पाठ्यक्रम, *आत्म-गति व्यक्तिगत-आधारित* मुक्त शिक्षा प्रणाली के सबसे अच्छे उदाहरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपनी गति के आधार पर विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए संस्थान में पर्याप्त लचीनेपन की अनुमति दी गई है। हालाँकि, यह लचीलापन संगठनात्मक कठिनाइयाँ बन गयी हैं, क्योंकि विद्यार्थी अधिगम क्रम के विभिन्न बिन्दुओं पर है और शायद ही अध्यापक-विद्यार्थी में सपंर्क हैं।

ऊपर वर्णित प्रणाली के प्रकारों के बावजूद, एक दूरस्थ शिक्षण संस्थान या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान पर मुख्यालय, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों (या कार्यक्रम केन्द्रों/कार्य केन्द्रों आदि) के एक संगठनात्मक नेटवर्क/प्रसार के भीतर काम करते हैं। जबकि कार्यक्रम विकास गतिविधियों का मुख्यालय द्वारा काफी ध्यान रखा जाता है, कार्यक्रम क्रियान्वयन की गतिविधियाँ, मुख्यालय के कुछ विभाग/इकाई द्वारा केन्द्रीकृत समन्वय के साथ क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्रों की जिम्मेदारी होती है। मुख्यालय के भीतर, कई विद्यापीठ या अध्ययन विभाग हैं जो कार्यक्रम विकास गतिविधियों में शामिल हैं। सहायता विभाग, प्रवेश, सामग्री मुद्रण और वितरण, क्षेत्रीय सेवाएँ, मूल्यांकन, मीडिया उत्पादन, स्टॉफ प्रशिक्षण, अनुसंधान, मूल्यांकन और ऐसे कई कार्य जो कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में शामिल हैं, का प्रबंधन/संचालन करते हैं। इकाइयाँ जैसे कि सामान्य प्रशासन और अर्थव्यवस्था उपरोक्त सभी गतिविधियों का समर्थन करते हैं। जबकि सामग्री संरचना और विकास का अध्यापकों/शैक्षणिक कर्मियों द्वारा ध्यान रखा जाता है, अन्य सम्बन्धित गतिविधियों का ध्यान सम्बन्धित इकाइयों में अन्य कर्मचारियों द्वारा रखा जाता है। इसके लिए एक अच्छी तरह से संगठित और समन्वित पारस्परिक क्रिया और विभिन्न इकाइयों के निरीक्षण की एक प्रणाली की आवश्यकता है। तभी संगठन प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है, और इसके विद्यार्थियों की अधिकतम संतुष्टि प्रदान कर सकता है। आप यहाँ देख सकते हैं कि संस्थागत संरचना इसके प्रबन्धन पर प्रभाव डालती है।

मुक्त शिक्षा प्रणाली में, ज्यादातर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के दो प्रतिमानों से अवगत होते हैं, जैसे एकल प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान और दोहरी प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान। बेशक, देर से दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संघ/कंसोर्टियम प्रतिमान के प्रारंभ के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का तीसरा प्रतिमान उभरा है। इनमें से प्रत्येक प्रकार को संक्षेप में नीचे समझाया गया है।

एकल प्रणाली स्वायत्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को दर्शाती है जैसे मुक्त विश्वविद्यालय या मुक्त विद्यालय। इस तरह के संस्थान केवल दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए दूरस्थ शिक्षण गतिविधियों के संगठन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इन संस्थानों में ऑन-कैंपस नियमित विद्यार्थी नहीं होते हैं।

द्वैध प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान संकेत करते हैं कि संस्था आमने-सामने वाले नियमित कार्यक्रमों, साथ ही दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। भारत में पारंपरिक विश्वविद्यालय, परिसर-आधारित पाठ्यक्रमों और साथ ही पत्राचार पाठ्यक्रमों का आयोजन करते हैं। बेशक, पत्राचार पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रमों) पत्राचार कार्यक्रमों के संस्थानों द्वारा आयोजित किए जाते हैं, जो इन विश्वविद्यालयों की दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों के प्रसंकेतक हैं। एकल प्रणाली मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की पाठ्यक्रम विकास और परीक्षा के मामलों में आमने-सामने की प्रणाली के नियंत्रण में रहते हैं।

संघ/कंसोर्टियम प्रतिमान एक उभरती हुई अवधारणा है। इसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के संस्थानों के संसाधनों को श्रेष्ठ स्तर तक साझा करना है जो एक संघ/कंसोर्टियम के तहत दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इग्नू के पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, उदाहरण के लिए, भारत स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालयों के संघ/कंसोर्टियम की स्थापना और कार्यों को सुविधाजनक बना दिया था। अधिगम की राष्ट्रमंडल देशों के स्तर पर समान बात का एक उदाहरण है। अब, देश, क्षेत्रीय और महाद्वीप के स्तर पर बहुत से संघ/कंसोर्टियम मौजूद हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) निम्नलिखित की सूची बनाएँ

क) रंबल द्वारा वर्णित, दूरस्थ शिक्षा के तीन प्रकारों के प्रबन्धन प्रतिमान

.....

.....

.....

.....

.....

ख) फ्रीमैन द्वारा पहचाने गए छह प्रकार की मुक्त शिक्षा प्रणालियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

13.4.2 एकल एवं द्वैध प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना

एकल एवं द्वैध (दोहरी) प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना विभिन्न मापदण्डों पर की जा सकती है जैसे संस्थाओं की प्रकृति, मुक्त शिक्षा की अवधारणा, प्रवेश नीतियाँ, पाठ्यक्रमों की प्रकृति, कार्यक्रम के उद्देश्य, पाठ्यक्रम संरचना/सामग्री, विधियाँ और मीडिया, अवधि, मूल्यांकन प्रक्रिया, विद्यार्थी समर्थन प्रणाली और कार्यक्रम का परिणाम।

i) **संस्थानों की प्रकृति :** एकल प्रणाली वाले संस्थान जैसे मुक्त विश्वविद्यालय/मुक्त विद्यालय, शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के आयोजन के एकमात्र उद्देश्य के साथ स्वायत्त हैं। ये संस्थान, दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिग्री, डिप्लोमा (मुक्त विश्वविद्यालय) और प्रमाणपत्र (मुक्त विद्यालय) देते हैं। दोहरी प्रणाली व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य आमने-सामने वाले नियमित पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन करना है। उनके पास दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए निर्देशों के माध्यमिक चैनल के रूप में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम होते हैं। परिसर-आधारित कार्यक्रम पत्राचार शिक्षा

कार्यक्रमों के लिए शर्तें निर्धारित करते हैं। दोनों कार्यक्रमों के विद्यार्थियों को पारंपरिक विश्वविद्यालय के द्वारा डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान या दूरस्थ शिक्षा निदेशालय स्वायत्त नहीं हैं। उनके कार्यक्रमों को पारंपरिक विश्वविद्यालय नियंत्रित करते हैं।

ii) **मुक्त शिक्षा की अवधारणा** : एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य एक मुक्त शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा में खुलापन दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का आदर्शोक्ति है जैसे इग्नू, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS)/राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS)। खुलापन, विभिन्न विकल्पों में से विशिष्ट पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों को चुनने में, अपने अधिगम की योजना में क्रियाएँ, अधिगम परियोजनाओं का चयन, सीखने के स्थान और समय को चुनने में, परामर्शदाताओं और मार्गदर्शकों से परामर्श करने की स्वतंत्रता, स्वयं-निर्देशित सामग्रियों द्वारा अधिगम, स्वयं-मूल्यांकन में संलग्न, एक अधिगम गतिविधि या एक पाठ्यक्रम या कार्यक्रम को पूरा करने के लिए गति के निर्णय में विद्यार्थियों की स्वायत्तता को देखा जा सकता है।

इसके विपरीत, दोहरी प्रणाली वाले संस्थान, पारंपरिक विश्वविद्यालय कार्यक्रमों के अधीनस्थ और सहायक के रूप में काम करते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, इन संस्थानों में से और इनके पाठ्यक्रमों में खुलापन सीमित है। स्वायत्तता पत्राचार पाठ्य भाग और अन्य सामग्रियों के माध्यम से उनकी स्वयं की अधिगम गतिविधियों की योजना बनाने तक सीमित है। आपको निम्नलिखित पृष्ठों में इन आयामों पर एक विस्तृत चर्चा मिलेगी।

iii) **प्रवेश नीतियाँ :** एकल प्रणाली वाले संस्थान, मुक्त प्रवेश नीतियों में विश्वास रखते हैं। उनका अधिकार क्षेत्र व्यापक है। विभिन्न कार्यक्रमों के लिए प्रवेश के मापदंड मुख्य रूप से अनुभव-आधारित हैं। वे पिछली शैक्षणिक योग्यताओं, आयु, अधिवास आदि पर ज्यादा बल नहीं देते हैं। एक विशिष्ट आयु के बाद अनुभव के साथ एक वयस्क उम्मीदवार विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पात्र माने जाते हैं। बेशक, पात्रता मापदंड/मानदंड, कार्यक्रम से कार्यक्रम अलग-अलग हो सकते हैं इसलिए खुलेपन की सीमा भी तदनुसार बदलती है।

दोहरी प्रणाली वाले संस्थान भी लचीली प्रवेश नीतियों पर केन्द्रित हैं। लेकिन, एकल प्रणाली वाले संस्थानों के विपरीत जिनका विशिष्ट राज्य (राज्य मुक्त विश्वविद्यालय) पर अधिकार क्षेत्र है या पूरा देश (इग्नू के मामले में), पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम, मूल विद्यालय के अधिकार क्षेत्र तक सीमित हो सकते हैं। शायद ही, कुछ विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के प्रस्तार के आधार पर अधिकार क्षेत्र का विस्तार करते हैं।

एक बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों में, पत्राचार या दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश करने के लिए पात्रता मानदंड, नियमित पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों में प्रवेश के समान है। कुछ मामलों में, कुछ पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए वे अंकों की प्रतिशतता की न्यूनतम आवश्यकता को कम करते हैं, जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय। कुछ मामलों में, मुक्त प्रवेश के प्रावधान हैं जैसे आंध्र विश्वविद्यालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय और अन्नामलाई विश्वविद्यालय। कुछ पाठ्यक्रम/कार्यक्रमों के लिए, ये विश्वविद्यालयों विद्यार्थियों की आयु के आधार पर खुलेपन को प्रोत्साहित करते हैं, उदाहरण के लिए, 21 साल से अधिक उम्र के किसी भी व्यक्ति किसी भी अध्ययन के किसी कार्यक्रम को ले सकते हैं।

iv) **पाठ्यक्रमों की प्रकृति** : मुक्त विश्वविद्यालय डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र के लिए अग्रणी, विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को आरंभ करने के लिए अपना निर्णय लेते हैं। उनका प्रमुख बल, नवीन, जरूरत-आधारित, निरंतर शिक्षा, क्षमता निर्माण, कौशल विकास प्रकृति के कार्यक्रमों की शुरुआत पर है। निश्चित रूप से, मुक्त विश्वविद्यालयों के कुछ कार्यक्रम पारंपरिक प्रकार के भी हैं। उनके नवाचार क्रेडिट प्रणाली, बहु-प्रविष्टि प्रणाली, एक कार्यक्रम के तहत विभिन्न पाठ्यक्रम तथा कुछ पाठ्यक्रम एक से अधिक कार्यक्रमों के तहत् और एक कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक क्रेडिट प्राप्त करने के लिए किसी भी पाठ्यक्रम का चयन करने की स्वतंत्रता से सम्बन्धित है। वे एक बड़ी संख्या में अंतःविषयीकार्यक्रम और साथ ही विषय-उन्मुख कार्यक्रम को आरंभ करते हैं। उदाहरण के लिए, इग्नू, डॉ. भीमराव अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा मुक्त विश्वविद्यालय और अन्य व्यवसायी, तकनीकी, व्यावसायिक और सामान्य कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। यह मुक्त विश्वविद्यालय (एकल प्रणाली) व्यवस्था की स्वायत्तता है जो इस तरह के कार्यक्रम की शुरुआत को सक्षम बनाती है।

दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों के मामले में, यह बड़ी संख्या में देखा गया है कि पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा सामान्य शिक्षा कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाती है। ये संस्थान किसी भी कार्यक्रम के तहत, वैकल्पिक पाठ्यक्रमों को चुनने के लिए, विद्यार्थियों को थोड़ा-सा विकल्प देते हैं। इसलिए, वे नियमित पाठ्यक्रम की तरह जटिल हैं। इन संस्थानों में क्रेडिट प्रणाली, मुश्किल से अपनाई गई है।

v) **कार्यक्रमों के उद्देश्य** : एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थान, सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक अवसरों का विस्तार करते हैं जो प्रेरित हैं और स्वयं सीखने के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त सक्षम हैं। आदर्श रूप से वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और जरूरतों पर ध्यान देते हैं जिन्हें पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से जोड़ा जाता है। विषय विशेषज्ञों और अधिकारियों का भरोसा पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के निर्माण पर अंतिम निर्णय है। दोहरी प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में विषय विशेषज्ञों और अधिकारियों का कार्यक्रम/पाठ्यक्रमों के उद्देश्यों को तय करने में ज्यादा हस्तक्षेप नहीं होता है। एकल प्रणाली वाले संस्थानों में, उन क्षेत्रों में पाठ्यक्रम का प्रमोचन करना संभव है जो दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में नहीं होते हैं। समुदाय विकास, और कृषि श्रमिकों, किसानों, महिलाओं, विकलांग लोगों, चमड़े का काम करने वाले, निर्माण कार्यकर्ता आदि के कौशल विकास के लिए पाठ्यक्रम/कार्यक्रम पहले से ही प्रारंभ किए जा चुके हैं (उदाहरण के लिए, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय और इग्नू)। विश्वविद्यालय शिक्षा का विस्तारित आयाम, एकल प्रणाली वाले मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था में ज्यादा ध्यान का मामला है। परंतु दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में ऐसा नहीं है।

vi) **पाठ्यक्रम संरचना/सामग्री** : एकल प्रणाली वाले संस्थान (मुक्त विश्वविद्यालय) विद्यार्थी-आधारित पाठ्यक्रमों पर केन्द्रित करते हैं। कार्यक्रम और पाठ्यक्रम के लिए मॉड्यूलर-उपागम, आवश्यकता-आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए उपयोगी हैं। मॉड्यूल (मापंक) (खंड, पाठ्यक्रम आदि) पाठ्यक्रमों या लक्ष्य समूहों की आवश्यकताओं के अनुसार आसानी से कई अलग-अलग संयोजनों में इकट्ठा किया जा सकता है। विद्यार्थी को, विभिन्न स्रोतों से तैयार की जाने वाली सामग्री का उपयोग करने के लिए अवसर दिए जाने चाहिए। व्यक्तिगत विद्यार्थी, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विभिन्न मॉडयूल का चयन कर सकता है। तथ्यात्मक और शैक्षिक कार्यक्रम के

साथ अनुभव-आधारित और प्रायोगिक-आधारित कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया गया है। भारतीय अनुभव बताते हैं कि मुक्त विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप, विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विद्यार्थियों के लिए, क्रेडिट-आधारित पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहित किया है। पाठ्यक्रमों के चयन के लिए अध्ययन क्षेत्रों में परामर्श प्रावधान उपलब्ध कराया जाता है।

दोहरी प्रणाली वाले कार्यक्रम केवल दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से नियमित पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति की तरह है। वे ज्यादातर शैक्षणिक और ज्ञान-उन्मुख हैं। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम विषय-वस्तु के साथ अपने अनुभव जोड़ने के लिए सीमित अवसर हैं।

vii) **विधियाँ और मीडिया :** मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था कई विधियों और संचार माध्यमों को महत्व देती है। वैकल्पिक या अनुपूरक मल्टी-मीडिया पैकेजे सहित मुद्रण-आधारित और इलैक्ट्रानिक मीडिया-आधारित निविष्टयाँ अनुदेशात्मक प्रणाली का आधार होती हैं। उन्नत प्रौद्योगिकी-आधारित सुविधाएँ भी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं। विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, सुविधाओं और बाधाओं के अनुसार उपयुक्त विधियों/तरीकों और संचार माध्यमों का चयन करने के लिए स्वायत्तता का आनंद लेते हैं। भारत में, मुक्त विश्वविद्यालय, स्वयं-शिक्षण पैकेज को मुद्रण माध्यमों, इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों और अध्यापक-विद्यार्थी के बीच पारस्परिक क्रिया के लिए अवसर प्रदान करने वाले आमने-सामने या टेलीकांफ्रेंसिंग सत्र के माध्यम से शामिल करने के गंभीर प्रयास करते हैं। कुछ इग्नू कार्यक्रम (उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर कार्यक्रम) भी ऑनलाइन उपलब्ध हैं।

पत्राचार शिक्षा कार्यक्रमों में मुद्रण-आधारित सामग्रियों, जो स्वयं-शिक्षण प्रतिमान का अनुकरण नहीं करते, पर बल देते हैं। पत्राचार पाठ्यक्रमों में मल्टी-मीडिया सुविधाओं का उपयोग करने का दायरा, मुक्त विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के विपरीत, सीमित है। बेशक, सभी पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान संपर्क कार्यक्रमों पर जोर देते हैं। वे व्यावसायिक और कौशल-आधारित कार्यक्रमों के लिए अनिवार्य हैं जबकि पत्राचार पाठ्यक्रमों के सामान्य पाठ्यक्रमों के लिए उपस्थिति वैकल्पिक है।

viii) **पाठ्यक्रम की अवधि :** एकल प्रणाली वाले संस्थानों में, लम्बे समय तक कार्यक्रम पूरा करने के लिए प्रावधान हैं। एक वर्ष के कार्यक्रम को पूरा करने की अवधि 2 सेमेस्टर (1 वर्ष) से 8 सेमेस्टर (4 वर्ष) की हो सकती है। उदाहरण के लिए, इग्नू के बी.ए., बी. एस.सी. और बी.कॉम कार्यक्रम, कम से कम 3 साल या अधिकतम 6 साल (जो कि पहले 8 साल था) में पूरे किए जा सकते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, दोहरी प्रणाली व्यवस्था में पाठ्यक्रम अवधि मूल विश्वविद्यालयों के नियमित कार्यक्रमों के प्रतिरूप के समान होती है; दूरस्थ शिक्षा की पाठ्यक्रम अवधि का लचीलापन नियमित पाठ्यक्रम प्रणाली पर निर्भर करता है।

ix) **मूल्यांकन प्रक्रिया :** निरंतर मूल्यांकन आमतौर पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाता है। मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली, अनुदेशात्मक पैकेज के माध्यम से विद्यार्थियों के आत्म-मूल्यांकन के लिए, सत्रीय कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति के नियतकालिक मूल्यांकन के लिए, समूह अधिगम में साथियों/समकक्ष व्यक्तियों के मूल्यांकन के लिए और पाठ्यक्रम के अंत में मूल्यांकन के लिए सुविधाएँ सम्मिलित करती हैं। क्रेडिट-आधारित पाठ्यक्रमों में, विद्यार्थियों को उनकी तैयारी के आधार पर, अपनी गति से परीक्षा देने की स्वतंत्रता है। विद्यार्थी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम को क्रेडिट के आधार पर पूरा कर सकता है।

दोहरी प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था, विद्यार्थियों की प्रगति के आँकलन के लिए नियत कार्य प्रणाली को अपनाती है। विद्यार्थियों के स्व-मूल्यांकन की कम संभावना होती है। पाठ्यक्रम के अंत का मूल्यांकन नियमित पाठ्यक्रम प्रणाली द्वारा निर्धारित किया जाता है। भारत में पत्राचार और दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम चलाने वाले अधिकांश विश्वविद्यालय, परिसर-आधारित और दूरस्थ शिक्षा वर्ग, दोनों के लिए समान (एक तरह का) परीक्षा कार्यक्रम और प्रश्नपत्र का उपयोग करते हैं।

x) **विद्यार्थी सहायता सेवाएँ** : एकल प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। मुक्त विश्वविद्यालयों ने विद्यार्थियों को सहायता सेवाओं के आयोजन के लिए संगठनात्मक ढाँचा बनाया है। क्षेत्रीय सेवा प्रभाग या विद्यार्थी सहायता इकाई, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से इस तरह की गतिविधियों को देखते हैं। नियमित परामर्श कार्यक्रम, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम, विस्तारित संपर्क कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण और टेलीविजन प्रसारण सुविधाएँ, टेलीकांफ्रेंसिंग सुविधाएँ, पुस्तकालय अध्ययन और प्रयोगात्मक या व्यावहारिक कार्य सुविधाएं विद्यार्थी सहायता सेवा गतिविधियों के प्रमुख घटक हैं। ऐसी सुविधाएँ, दोहरी व्यवस्था वाले संस्थानों के मामले में सीमित हैं। अध्ययन केन्द्रों में पुस्तकालय सुविधाएँ और मार्गदर्शन के लिए सीमित सुविधाएँ हैं। रेडियो और टेलीविजन सुविधाएँ, दिल्ली और कश्मीर विश्वविद्यालयों के अध्ययन केन्द्रों में सीमित हैं।

उपरोक्त चर्चा से आप एकल और दोहरी प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के बीच समानताओं और अंतर को स्पष्ट रूप से समझ चुके होंगे। संपूर्ण रूप से, एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में मुक्त शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए अधिक व्यवस्थित संगठनात्मक संरचना है। इसके विपरीत, दोहरी प्रणाली वाले संस्थान, अपनी सभी गतिविधियों के लिए पारंपरिक विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों पर पूरी तरह से निर्भर होते हैं। वे अपने मूल विश्वविद्यालय और संबद्ध महाविद्यालयों के भौतिक और मानव संसाधनों का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, इन संस्थानों में अपने कार्य करने के लिए सीमित स्वायत्तता है, क्योंकि वे परंपरागत विश्वविद्यालय प्रणाली द्वारा नियंत्रित हैं। हालाँकि, दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में भी दूरस्थ शिक्षा के आधार को मजबूत बना सकते हैं, यदि दोनों संकायों/वर्गों में सुविधाएँ, इष्टतम स्तर पर साझा की जाए। इसके लिए, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के नियंत्रण से उन्हें मुक्त करने के लिए कुछ संरचनात्मक परिवर्तन करना आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) किस संदर्भ में, दूरस्थ शिक्षा के एकल प्रणाली संगठन में दिए गए पाठ्यक्रम, विधियाँ और मीडिया, दोहरी प्रणाली के संगठनों की तुलना में खुलेपन के लिए अधिक प्रवृत्त हैं?

.....

.....

.....

.....

13.4.3 दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का कंसोर्टियम प्रतिमान

यह एक उभरता हुआ प्रतिमान है। इस प्रतिमान में, विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थान परस्पर अन्तःक्रिया करते हैं और संसाधनों के सामान्य संघ को साझा करते हैं। यह कार्यक्रमों के प्रतिलिपिकरण और संसाधनों की बर्बादी से बचने में सहायता करता है। संस्थानों की अद्वितीयता और विशिष्टीकरण की पहचान की जा सकती है। एक संस्था का प्रमुख योगदान अन्य संस्थानों द्वारा साझा किया जा सकता है। विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उपलब्ध मौजूदा सुविधाओं का इष्टतम उपयोग करना संभव है।

भारतीय संदर्भ में, पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, यानी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत, वर्तमान दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने विभिन्न प्रकार के दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को पास लाने के लिए प्रमुख भूमिका निभाई, क्योंकि दूरस्थ शिक्षा परिषद की एक गतिविधि "दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा साझा करने के लिए कार्यक्रमों के एक सामान्य संघ की पहचान करना" था।

आप निम्नलिखित आकृति से संघ प्रतिमान को समझ सकते हैं:

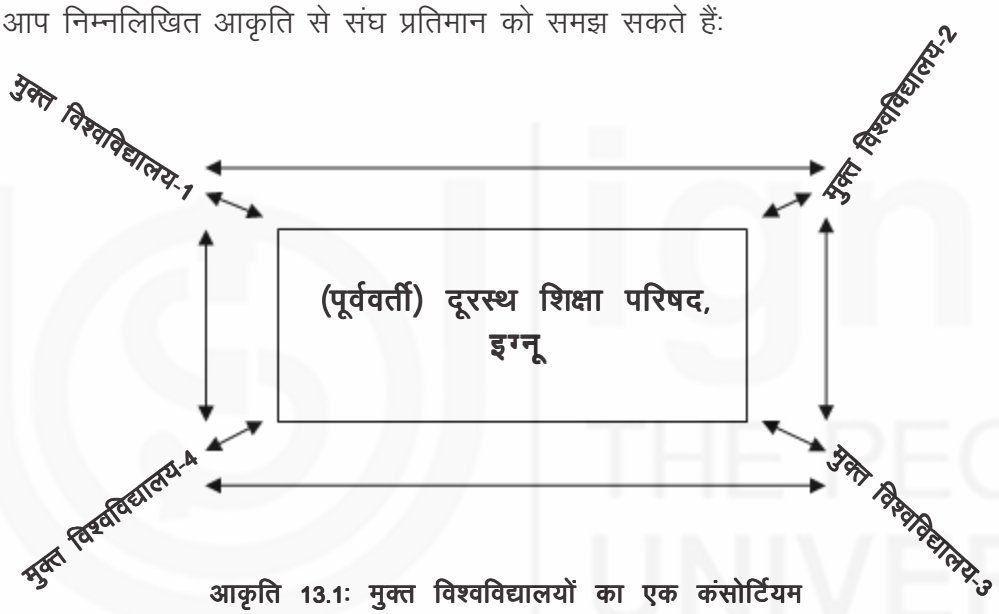

आकृति 13.1: मुक्त विश्वविद्यालयों का एक कंसोर्टियम

इस प्रतिमान में आप यह पहचानेंगे कि तत्कालीन दूरस्थ शिक्षा परिषद, मुक्त विश्वविद्यालयों की गतिविधियों का समन्वय किया था। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा परिषद के माध्यम से मुक्त विश्वविद्यालयों परस्पर अंतःक्रिया करते हैं। समान कार्यक्रम के लिए एक मुक्त विश्वविद्यालय की अध्ययन सामग्री का दूसरे मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा प्रयोग किया जाना, परस्पर अन्तःक्रिया का एक तरीका है। उदाहरण के लिए, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय जैसे कोटा मुक्त विश्वविद्यालय, यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय प्रबन्धन कार्यक्रमों के लिए इग्नू की साम्रगियों का उपयोग कर रहे हैं। विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू की टेलीकांफ्रेंसिंग सुविधाओं और सेवाओं का उपयोग अक्सर कर रहे हैं। मुक्त नेटवर्किंग (प्रसार) (ओ.पी.ई.एन.ई.टी.), देश के सभी मुक्त विश्वविद्यालयों के साथ दो-तरफा ऑडियो और एक-तरफा वीडियो टेलीकांफ्रेंसिंग के लिए दूरस्थ शिक्षा परिषद-इग्नू द्वारा स्थापित किया गया है। संसाधनों को साझा करने के अतिरिक्त, मुक्त विश्वविद्यालयों के क्रेडिट भी साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, एक उम्मीदवार जो एक मुक्त विश्वविद्यालय (मुक्त विश्वविद्यालय 1) में बी.ए. में पंजीकृत है, डिग्री के एक भाग के रूप में दूसरे मुक्त विश्वविद्यालय (उदाहरण, मुक्त विश्वविद्यालय 2) से पाठ्यक्रमों के कुछ क्रेडिट चुन सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद के उपयुक्त समन्वय के माध्यम से क्रेडिट को साझा करना संभव हुआ। इसने दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों को, विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालयों में उपलब्ध सैकड़ों

प्रकार के पाठ्यक्रमों के संघ में से अपने विकल्प के पाठ्यक्रम चुनने के अवसर प्रदान किए। उन्नत संचार प्रौद्योगिकी, संस्थानों के प्रसार/नेटवर्किंग को सुविधाएँ प्रदान कर सके जिनका दूरस्थ शिक्षा परिषद द्वारा निरीक्षण किया गया था। यह दृष्टिकोण, हालाँकि, विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के स्वैच्छिक आपसी सहयोग और समझ के अभाव की कमियों से ग्रस्त है। फिर भी, इस प्रतिमान से, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के आम मंच से मुक्त अधिगम प्रणाली के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी जिसे आजीवन शिक्षा और अधिगम समाज को भविष्य में सहज करने के लिए रास्ता बन जाता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) एकल प्रणाली वाले संगठनों पर कंसोर्टियम के क्या लाभ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

भारतीय संदर्भ में, जैसा कि खंड 1 की इकाई 3 में बताया गया है, वहाँ 210 स्वीकृत परंपरागत विश्वविद्यालय हैं जो पत्राचार पाठ्यक्रम/दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करते हैं। इन विश्वविद्यालयों में नियमित परिसर-आधारित अध्ययनों के माध्यम से शिक्षण प्रमुख कार्य होता है। इसके साथ ही, वे पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान या दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के माध यम से पत्राचार शिक्षा कायक्रम का आयोजन करते हैं। ये संस्थान, पारंपरिक आमने-सामने वाली प्रणाली और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली दोनों में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं और इस तरह संस्थानों की दोहरी प्रणाली के रूप में जाने जाते हैं। पंद्रह मुक्त विश्वविद्यालय, एकल प्रणाली अर्थात् केवल दूरस्थ व्यवस्था के माध्यम से कार्यक्रम/पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं। इसलिए, मुक्त विश्वविद्यालय और अन्य संस्थान जो केवल दूरस्थ व्यवस्था माध्यम से पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं, उसे एकल प्रणाली वाले संस्थान कहलाते हैं।

निम्नलिखित उपभागों में, आप भारत में एकल प्रणाली वाले राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और दोहरी प्रणाली वाले विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

13.5.1 इग्नू की संगठनात्मक संरचना

इग्नू एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है। यह एक स्वायत्त मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय है जिसका पूरे देश में अधिकार क्षेत्र है। बेशक, यह अन्य देशों में भी कार्यक्रम प्रदान करता है। इसकी संगठनात्मक संरचना को आकृति 13.2 में देख सकते हैं।

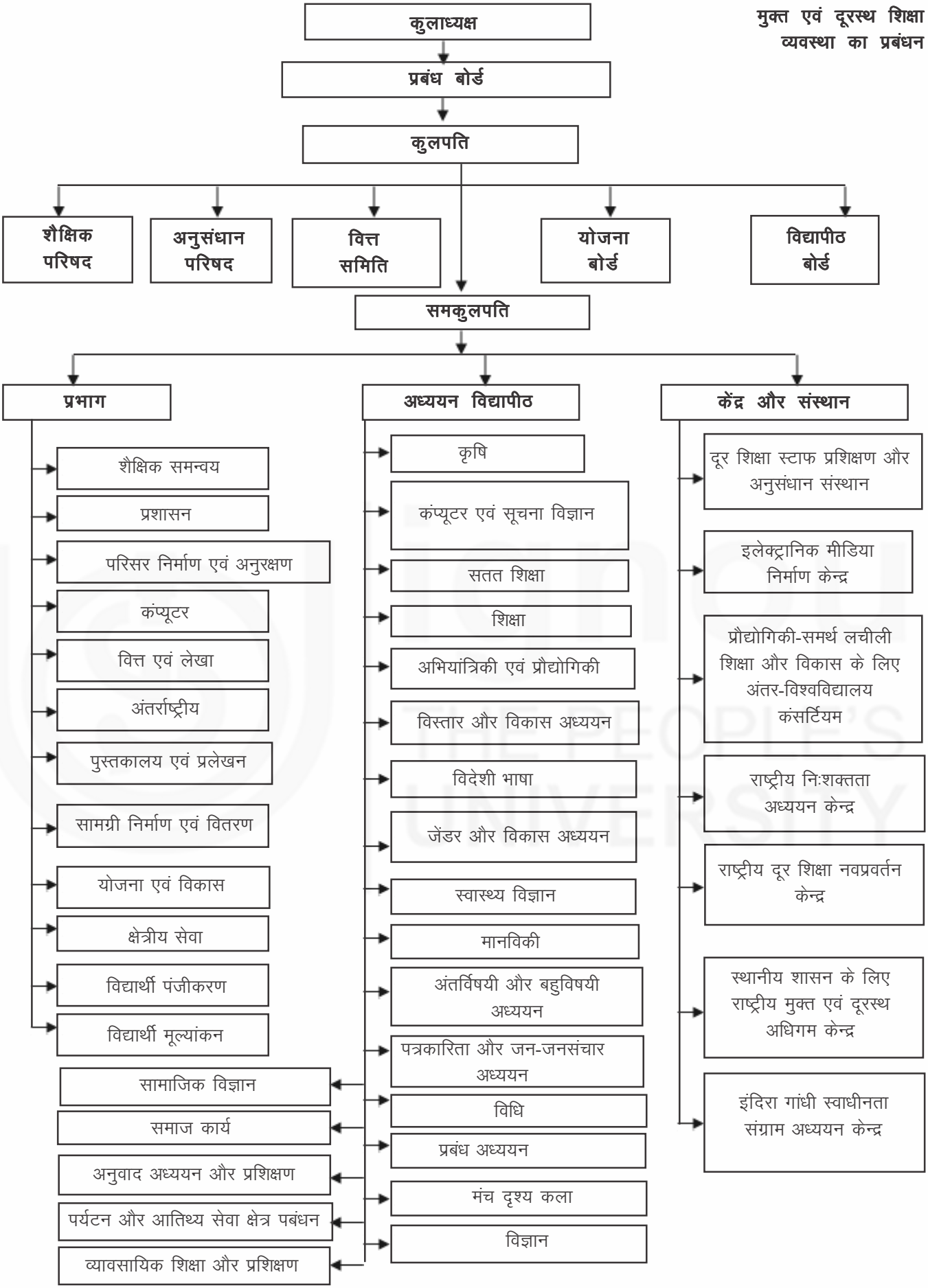

आकृति 13.2: इग्नू की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः इग्नू (2016), *प्रोफाइल 2016,* नई दिल्लीः इग्नू

आकृति 13.2 में दिए गए फ्लो चार्ट से आप देख सकते हैं कि इग्नू में सर्वोच्च अधिकारी कुलाध्यक्ष (विजिटर) है और इसके बाद प्रबंधन बोर्ड, और कुलपति है। मुख्य नीति निर्णय लेने वाली संस्था इसका प्रबंधन बोर्ड है। अन्य निर्णय लेने वाली संस्थाएँ हैं; शैक्षणिक परिषद, योजना बोर्ड और वित्त समिति। मुख्य कार्यकारी प्रमुख कुलपति जिन्हें समकुलपति, विभिन्न शैक्षिक विद्यापीठ और प्रभाग के निदेशक और अन्य अधिकारियों के बीच कुलसचिव उन्हें सहायता प्रदान करते हैं। योजना बोर्ड, शैक्षिक परिषद और वित्त समिति, इग्नू की दूरस्थ शिक्षा गतिविधियों के प्रबंधन के साथ जुड़े हुए हैं। यहाँ पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि इग्नू के तहत पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, जो समन्वयन और देश में उच्च शिक्षा स्तर के मुक्त शिक्षा प्रणाली और विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के मानकों को बनाए रखने के कार्य का निर्वहन कर रहा था वह इसमें नहीं है क्योकि वह इग्नू से बाहर है।

इग्नू में तीन प्रकार की इकाइयाँ हैं : जैसे शैक्षिक विद्यापीठ, प्रभाग और केन्द्र एवं संस्थान। शैक्षिक विद्यापीठ शैक्षिक मामलों की देखरेख करते हैं, जबकि प्रभाग, प्रशासनिक और विद्यार्थी सहायता सेवाओं की गतिविधियों को देखते हैं और केन्द्र/संस्थान कुछ विशिष्ट शैक्षिक गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं। वहाँ 21 शैक्षिक विद्यापीठ, 12 प्रभाग और 7 संस्थान एवं केन्द्र हैं। प्रत्येक विद्यापीठ, संस्थान या केन्द्र का नेतृत्व एक निदेशक करता है, जबकि प्रभाग के प्रमुख कुलसचिव हैं और अन्य के निदेशक हैं।

इग्नू एक तीन-स्तरीय प्रणाली के रूप में कार्य करता है, यानि इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थिति है, 67 क्षेत्रीय केन्द्र देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं और 3000 से अधिक अध्ययन केन्द्र, कार्य केन्द्र आदि क्षेत्रीय केन्द्रों के तहत पूरे देश में फैले हुए हैं।

13.5.2 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की संगठनात्मक संरचना

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के बीच एक प्रमुख कार्यात्मक अन्तर है। भारत के राष्ट्रपति इग्नू (राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) के कुलाध्यक्ष हैं सम्बन्धित

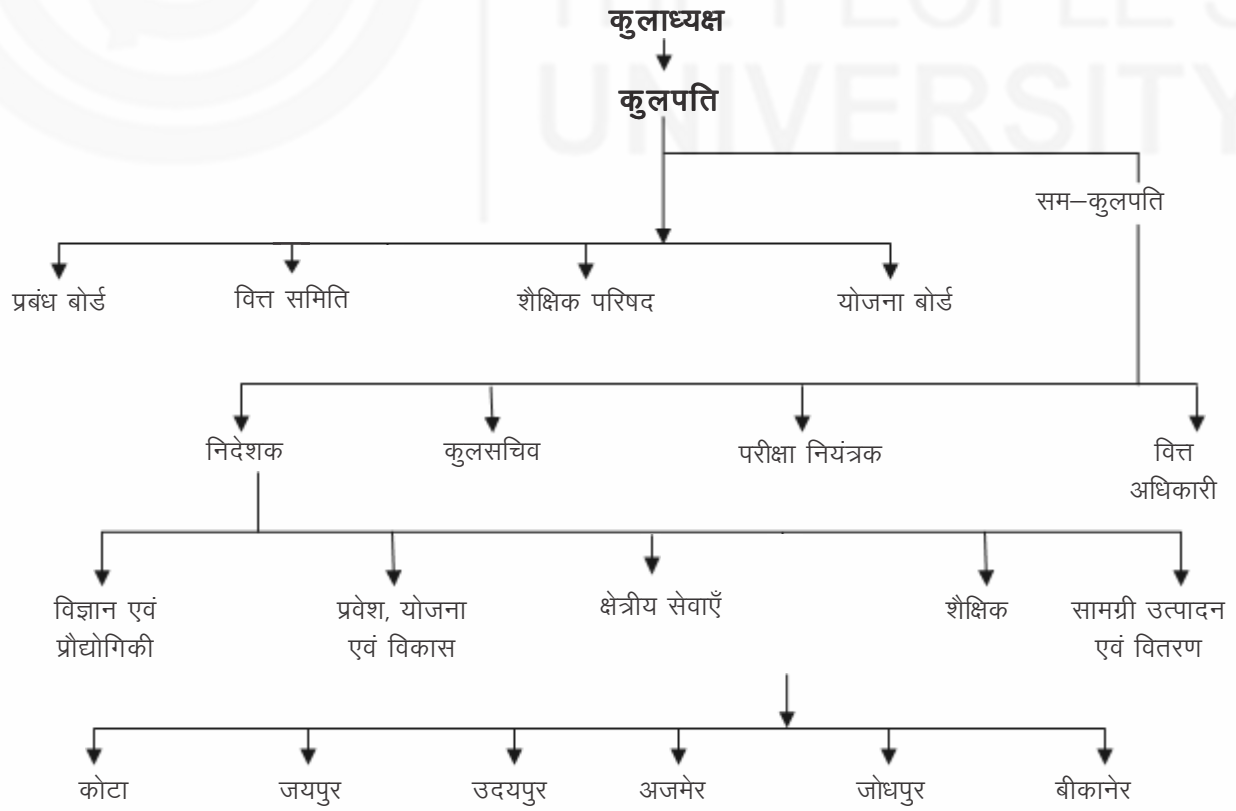

आकृति 13.3: कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः साहू, पी.के. (1993) दूरस्थ उच्च शिक्षा, संचारः नई दिल्ली।

विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना

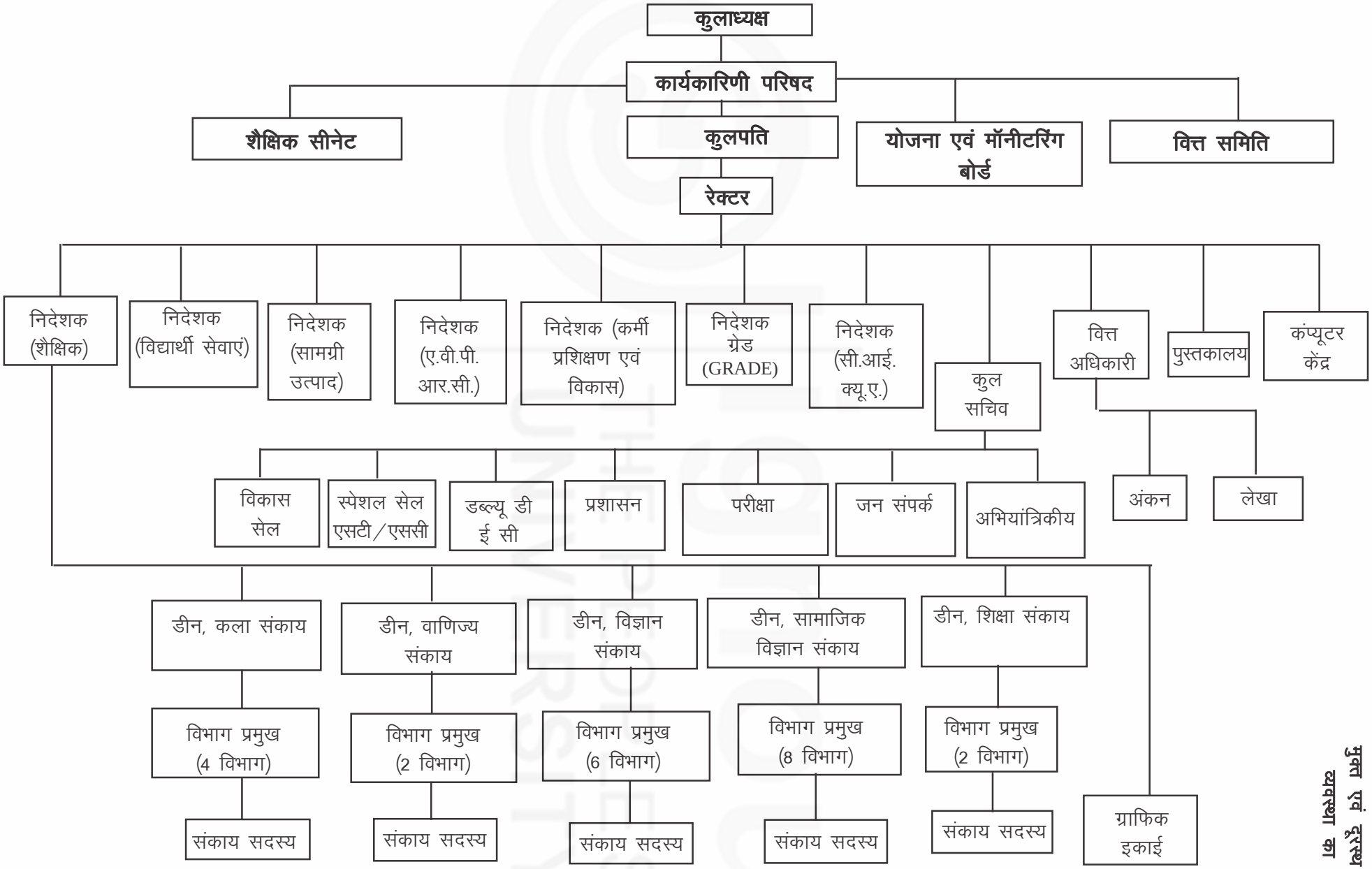

आकृति 13.4: डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः http://www.braou.ac.in/managementdescripationpages.php?id=8.

राज्य के राज्यपाल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष होते हैं। उदाहरण के लिए, आप आकृति 13.3 में देखें, जो कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना के प्रवाह चार्ट को प्रस्तुत करता है। कोट मुक्त विश्वविद्यालय एक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जिसके शीर्ष प्राधिकारी कुलाध्यक्ष हैं। अन्य प्राधिकारियों में कुलपति और समकुलपति सम्मिलित हैं। प्रमुख निर्णय लेने वाले निकाय हैंः प्रबंधन बोर्ड और शैक्षिक परिषद। ऊपर निर्णय लेने वाले निकायों के साथ अन्य बोर्ड और समितियाँ जुड़ी हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, क्षेत्रीय सेवाएँ, प्रवेश, योजना और विकास, शैक्षणिक और सामग्री उत्पादन और वितरण गतिविधियों की देखरेख निदेशक करते हैं। शैक्षणिक प्रभागों में विभिन्न शिक्षण विभाग, विद्यार्थी इकाई और अनुसंधान इकाई हैं। कुछ दूसरे अधिकारी हैं जिन्हें स्वतंत्र प्रभार प्रदान किए गए हैं जैसे कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक, वित्त अधिकारी और पुस्तकालयाध्यक्ष। प्रत्येक प्रभाग/इकाई, उपप्रभागों/उप इकाई में विभाजित है।

विश्वविद्यालय तीन-स्तरीय प्रणाली में अपनी गतिविधियों का विकेन्द्रीकरण करने के लिए इग्नू के प्रतिमान का अनुसरण करता है, अर्थात् मुख्यालय स्तर (कोटा में), विभिन्न स्थानों पर क्षेत्रीय केन्द्र स्तर और अध्ययन केन्द्र स्तर।

वर्तमान में कोटा मुक्त विश्वविद्यालय के साथ 7 क्षेत्रीय केन्द्र और 82 अध्ययन केन्द्र हैं (वेबसाइट: https://www.vmou.ac.in/rc/1)।

कुछ विश्वविद्यालयों में प्रति उपकुलपति नहीं होते हैं, इसके बजाय उनके पास कुलाधिसचिव (Rector) होता है। उदाहरण के लिए, आप आकृति 13.4 प्रवाह चार्ट में देख सकते हैं, जो डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश की संगठनात्मक संरचना को प्रदर्शित कर रहा है, जो राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जो भारत में मुक्त शिक्षा प्रणाली का अग्रणी या प्रवर्तक है।

सर्वोच्च प्राधिकारी कुलपति है। अन्य अधिकारियों में उपकुलपति, और कुलाधिसचिव जिसे कुलसचिव, वित्त अधिकारी, निदेशक, डीन और विभागाध्यक्ष सहायता प्रदान करते हैं। प्रमुख निर्णय लेने वाले निकाय हैंः कार्यकारी परिषद, शैक्षणिक अधिसभा, योजना और निरीक्षण बोर्ड और वित्त समिति। इग्नू और कोटा मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय में क्षेत्रीय केन्द्र नहीं हैं और इसके बजाय केवल अध्ययन केन्द्र हैं।

13.5.3 पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थानों/दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों की संगठनात्मक संरचना

मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम एक निदेशालय या संस्थान के माध्यम से चलाए जाते हैं। सस्थान/निदेशालय विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग की स्थिति को एक रख सकते हैं या नहीं। निदेशालय, आमतौर पर निदेशक की अध्यक्षता में रहता है। निदेशालय के प्रमुख कार्य पाठ्यक्रम सामाग्रियों का विकास और उत्पादन, प्रवेश, वितरण प्रणाली, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ जिसमें सम्मिलित हैं सत्रीय कार्य मूल्यांकन और व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम आदि। पाठ्यक्रम मूल विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद के द्वारा प्रारंभ किए गए हैं। पाठ्यक्रम, सम्बन्धित विषय/शिक्षण क्षेत्रों के अध्ययन बोर्ड द्वारा विकसित किया गया है जो विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के प्रमुख की अध्यक्षता में है। अध्ययन बोर्ड के सदस्य, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग से सम्बन्धित हैं। पाठ्यक्रम विकास के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय पत्राचार पाठ्यक्रम की परीक्षाओं को नियंत्रित करता है। निदेशालय की भूमिका अधिकतर क्रियाशील प्रकार की है।

प्रमुख नीतिगत निर्णय मूल विश्वविद्यालय के वैधानिक निकायों द्वारा लिए जाते हैं जैसे शैक्षणिक परिषद, कार्यकारी परिषद, संकाय परिषद, अध्ययन बोर्ड, आदि। हालाँकि निदेशक विश्वविद्यालय की संवैधानिक निकाय के एक पढ़ने औपचारिक सदस्य हैं जैसे शैक्षणिक परिषद और कार्यकारी परिषद। पत्राचार पाठ्यक्रमों के अन्य संकाय सदस्यों को ऐसे निकायों में प्रतिनिधित्व नहीं मिलता है। तदनुसार, पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना का निर्माण दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियाशील भाग के संदर्भ में किया गया है।

नीचे प्रवाह चार्ट दिखाया गया है (आकृति 13.5 देखें) जो हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना प्रकट कर रहा है, जो देश के सबसे अधिक प्राचीन पत्राचार के पाठ्यक्रमों के संस्थानों में से एक है।

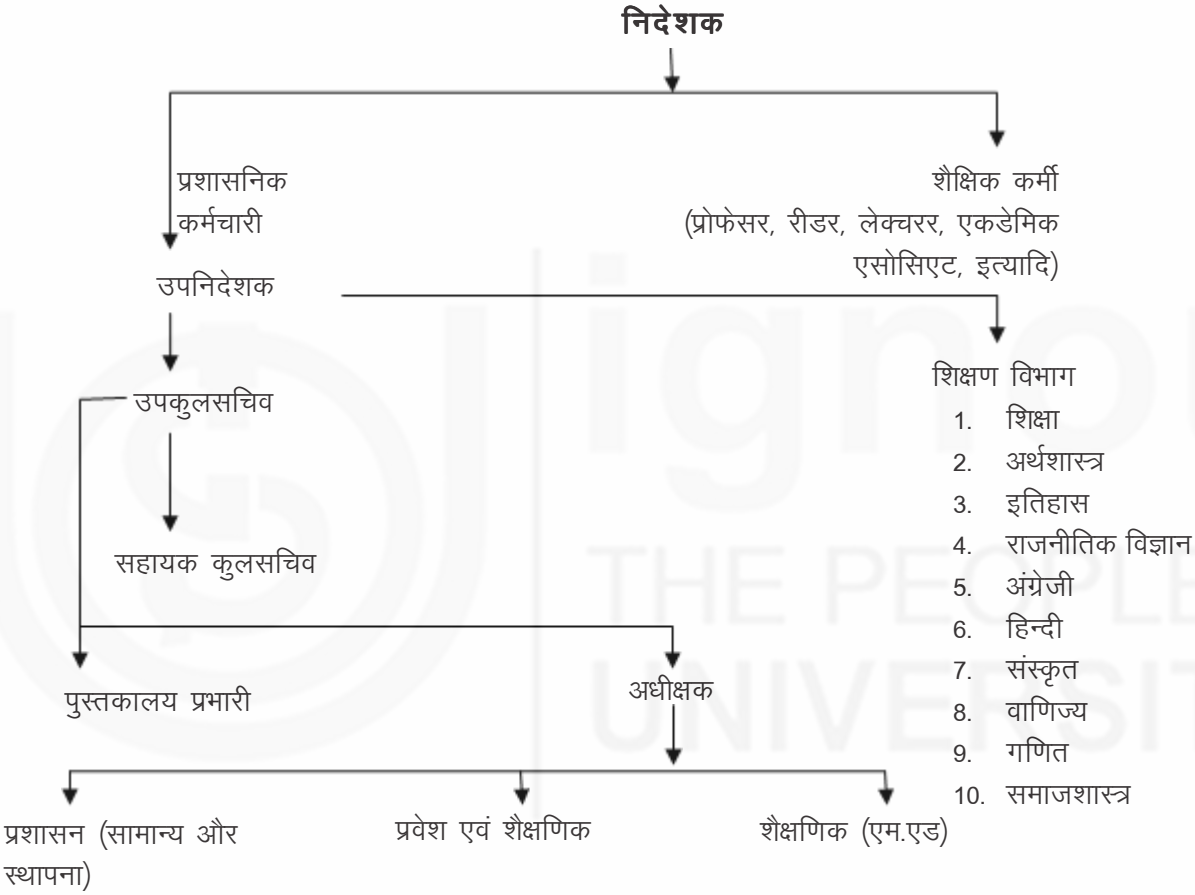

आकृति 13.5: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः साहू, पि.के. (1993). *दूरी पर उच्च शिक्षा,* नई दिल्लीः संचार।

विश्वविद्यालय की वैधानिक स्थिति के अनुसार, निदेशक प्रशासनिक और शैक्षणिक गतिविधियों की दोहरी जिम्मेदारियों के साथ पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय में उच्चतम पद पर स्थित हैं। निदेशक के सहायक दो उपनिदेशक होते हैं जो दोनों प्रशासनिक और शैक्षणिक जिम्मेदारियाँ निभाते हैं। प्रशासनिक वर्गों को उपकुलसचिव, सहायक कुलसचिव, अधीक्षक आदि के क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है। विभिन्न प्रशासनिक इकाइयाँ पंजीकरण, वित्त, परीक्षा आदि के संबंध में मूल विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड के साथ सीधे संपर्क रखती हैं। प्रशासन, प्रवेश, सामग्री उत्पादन, वितरण और विद्यार्थी सहायता सेवाओं के संगठन का ध्यान रखता है। शैक्षणिक पद निदेशकों के अधिकारियों के तहत प्रोफेसरों, रीडरों और प्रवक्ताओं के पदों के साथ संगठित होते हैं। वे भौतिक विकास, प्रवेश,

विद्यार्थी सहायता सेवाओं की गतिविधियो के संगठन की देखरेख करते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, शैक्षणिक निर्णय संबंधी प्रमुख जिम्मेदारियाँ जैसे कार्यक्रम/पाठ्यक्रम विकास का निर्माण और परीक्षाओं की देखरेख विश्वविद्यालय स्तर के निकायों द्वारा की जाती हैं जैसे शैक्षिक परिषद, अध्ययन बोर्ड और मूल विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग।

भाग 13.5 ने आपको राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और पत्राचार शिक्षा के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना की एक व्यापक समझ प्रदान की। प्रयोजन, आप को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की कार्यात्मक प्रणाली के गठन की संगठनात्मक संरचना का उचित विचार प्रदान करना था। अब हम इसकी उप-प्रणाली या उपतंत्र देखें।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) क) मुक्त विश्वविद्यालय के संगठन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ख) मुक्त विश्वविद्यालय के संगठन और पारंपरिक पत्राचार प्रणाली में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के उपतंत्र

जैसा कि हम सब जानते हैं कि शैक्षिक संगठनों या पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के प्राथमिक उद्देश्य शिक्षण हैं (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियां में "अधिगम" पर बल दिया गया है)। इसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधन, विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यक्रम, सामग्री को एक साथ लाने में प्रबंधकीय विशेषज्ञता सम्मिलित है। पारंपरिक शैक्षणिक संस्थान मुख्य रूप से दो उप-प्रणालियां – शैक्षिक और प्रशासनिक – के माध्यम से संचालित होते हैं। शैक्षणिक उप प्रणाली उन गतिविधियों को संदर्भित करती है जिनके माध्यम से संगठन अपने उद्देश्य प्राप्त करता है और संस्थान को वैधता, समग्र दिशा और विश्वसनीयता प्रदान करता है। प्रशासनिक उपप्रणाली शैक्षणिक उपप्रणाली को सभी आवश्यक संसाधन, गतिविधियों का समन्वयन और पर्यावरण और प्रणाली के बीच

मध्यस्थता प्रदान करने में स्वयं को संलग्न करती है। लेकिन, दूरस्थ शिक्षा प्रबंधों को बहुत अधिक जरूरी कार्य करने होते हैं। कए और रंबल (1981) ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की चार उप-प्रणालियों की व्यापक चर्चा की हैः नियामक उप-प्रणाली, पाठ्यक्रम उप-प्रणाली, विद्यार्थी उप-प्रणाली और व्यवस्थापन उप-प्रणाली। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के भीतर सामान्य कार्यात्मक प्रभागों की अंतरंग परीक्षाओं ने हमें कुछ सुझाव दिए हैं कि गतिविधियों और उपप्रणालियों के तीन मुख्य संग्रह हैं : प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक – जो एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उद्यम के चलने से सम्बन्धित है। हम इनके बारे में संक्षेप में चर्चा करेंगे।

13.6.1 प्रशासनिक उपतंत्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के द्वारा दायित्व में ली गई प्रशासनिक गतिविधियाँ, एक उद्योग या पारंपरिक प्रणाली के समान हैं। फिर भी, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान में अनुदेशात्मक प्रणाली को अधिक जटिल डिजाइनों की वजह से, विभिन्न विभागों के समन्वय और संचालन गतिविधियों पर नियंत्रण, उच्च स्तर पर योजना और प्रबंधन में महत्वपूर्ण बन गए हैं।

दूरस्थ शिक्षा संस्थान के प्रमुख प्रशासनिक कार्यों में शामिल हैंः योजना, निर्णयन, संसाधनों का प्रबन्धन, नियंत्रण और समन्वय और मूल्यांकन। विशेष रूप से इन कार्यों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं।

- संगठन के भविष्य के निर्देशों की दूरदर्शिता और नेतृत्व प्रदान करने सहित, सामाजिक नियोजन
- विपणन के अवसरों की पहचान करना
- आवश्यकताओं के आंकलनों के सर्वेक्षणों का संचालन करना
- कार्यक्रम विकास सहित सशक्त कार्यक्रमों की पहचान करना, कार्यक्रमों का विकास और निर्धारण करना, और सशक्त विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों का विपणन करना
- कार्यक्रम मान्यता
- कार्यक्रम के पूरे वित्तीय पहलू के लिए जिम्मेदारी
- गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रमों की समीक्षा और मूल्यांकन और सामान्य निरीक्षण
- अच्छे अभ्यास के मानकों और सिद्धान्तों का अनुपालन
- नियमों के साथ अनुपालन, आदि।

13.6.2 शैक्षणिक उपतंत्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की शैक्षणिक उपतंत्र में दो प्रमुख गतिविधियाँ सम्मिलित हैंः अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास और विद्यार्थी सहायता सेवाएँ।

सामग्री विकास में शिक्षाविदों के योगदान की आवश्यकता होती है जैसे पाठ्यक्रम योजनाकार, विषय विशेषज्ञ, अध्यापक और अन्य शैक्षिक समूहों जैसे अनुदेशात्मक स्वरूपकर्ता, मीडिया उत्पादक, संपादक, ग्राफिक डिजाइनर और अन्य व्यक्ति जो मीडिया उत्पादन में सहायता करते हैं। सामग्री विकास गतिविधियों से उत्पादन मूलरूप/प्रोटोटाइप पाठ्यक्रम सामग्री हैं जो सामग्री उत्पादन की उप-प्रणाली की प्रक्रिया के माध्यम से तैयार उत्पाद में बदल जाती

हैं। इसके साथ, इस उपतंत्र में गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला निम्नलिखित के रूप में सम्मिलित है :

- यह सुनिश्चित करना कि कोर्सवेयर स्वीकार्यता के मानको पूरा करती है।
- कार्यक्रम के कार्यान्वयन से सम्बन्धित मामलों में प्रशिक्षण, शैक्षणिक परामर्श और तकनीकी समर्थन।
- संकाय और विद्यार्थी सहायता के लिए 24X7 सहायता डेस्क प्रदान करना।
- व्यक्तिगत पाठ्यक्रम रखरखाव, मूल्यांकन और अनुवर्ती कार्य जिसमें ऑनलाइन या वेब आधारित पहुँच के लिए मुद्रित पाठ्यक्रमों का अंकीय (डिजिटल) संस्करण को अपलोड करना सम्मिलित है।
- ऑनलाइन पाठ्यक्रम की अवधारणा, डिजाइन और विकास, आदि यथा आवश्यक संकाय की सहायता के लिए शिक्षण-विकास और अंकीय मीडिया उत्पादन कर्मचारी वर्ग का प्रावधान करना।

विद्यार्थी सहायता, सामग्री विकास से पूरी तरह से अलग है। सहायता गतिविधियाँ, मूल रूप से विद्यार्थियों के अधिगम गतिविधियों और उनकी प्रगति प्रबन्धन की सुविधा से संबद्ध हैं। दूरस्थ शिक्षण और विद्यार्थियों को दी गई सहायता में, तीन विशिष्ट गतिविधियाँ सम्मिलित हैं :

i) विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री, पूरक सामग्री और जानकारी का प्रेषण करना जैसे कि काम की अनुसूचियाँ, अध्ययन केन्द्रों के कार्य और उनके लिए उपलब्ध अन्य सुविधाएँ।

ii) नियत कार्य की प्रतिक्रियाओं पर काम करना, दूरस्थ शिक्षा का दूसरा प्रमुख घटक है। यह गतिविधि स्थानीय अध्ययन केन्द्रों द्वारा नियंत्रित की जाती है। इसमें, सत्रीय कार्य को अध्यापक द्वारा मूल्यांकन कराने की प्रतिक्रियाओं और उनके ग्रेड का प्रसंस्करण आदि गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

iii) अध्ययन केन्द्रों में, परामर्श और अनुशिक्षण सत्रों के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति, अनुशिक्षण या परामर्श सत्रों की व्यवस्था, पर्याप्त पुस्तकालय प्रदान करना, ऑडियो/वीडियो और अन्य सुविधाएँ प्रदान करना।

13.6.3 औद्योगिक उपतंत्र

ओटो पीटर्स पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने शिक्षण सामग्रियों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और दूरस्थ शिक्षा के सम्बन्धित कार्यों की तुलना वस्तुओं के औद्योगिक उत्पादन के साथ की थी। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा एक शैक्षणिक उद्यम है जो एक औद्योगिक उद्यम की सभी विशेषताओं को प्रदर्शित करती है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उत्पादन प्रक्रिया में दो गतिविधियाँ होती हैं: विभिन्न प्रकार की अध्यापन/शिक्षणशास्त्र सामग्रियों का उत्पादन; और स्नातकों का उत्पादन, जैसे कि विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों के प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और डिग्री के साथ। पूर्ववर्ती एक अद्वितीय औद्योगिक संचालन है, जबकि उत्तरवर्ती एक सामाजिक-शैक्षणिक-शैक्षिक संचालन है।

दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों आमतौर पर अपनी अनुदेशात्मक प्रणाली में बहुमीडिया दृष्टिकोण का पालन करते हैं और यह शिक्षणशास्त्र मुद्रित, श्रव्य और दृश्य के रूप में सामग्री उपलब्ध कराता है (रेडियो और टेलीविजन का उपयोग श्रव्य और

दृश्य सामग्री को प्रसारित करने के लिए भी किया जाता है जहाँ संभव और योजनाबद्ध हो) इन सामग्रियों से जुड़े मुख्य संचालन इस प्रकार हैं :

- शैक्षणिक प्रोटोटाइप/मूलरूप सामग्री का विकास करना;
- इन सामग्रियों का उत्पादन; और
- इन सामग्रियों का वितरण।

इस प्रकार, उत्पादन इकाइयों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना है जैसे निम्नलिखित हैं :

- विभिन्न पाठ्यक्रम सामग्री
- अनुपूरक सामग्री
- श्रव्य सामग्री
- वीडियो सामग्री
- प्रायोगिक किट, आदि।

साथ ही, उत्तरदायित्व और निरीक्षण को उद्देश्यों के लिए निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन, भंडारण और प्रेषण बनाए रखा जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में, इन वस्तुओं में से प्रत्येक के लिए अक्षर और/अथवा संख्या कोड का उपयोग करके इसे सुनिश्चित किया गया है। मुद्रण सामग्री के मामले में आकार की विशिष्टता, चित्र, कागज की गुणवत्ता, मुद्रण प्रकार और रंग आदि, और श्रव्य एवं दृश्य के मामले में हस्ताक्षर ट्यून, अवधि, प्रस्तुति की भाषा आदि को मानकीकृत करना होता है। भंडारण के लिए स्थान प्रदान करने और इन सामग्रियों के वितरण से सम्बन्धित गतिविधियाँ, सम्बन्धित सामग्री का समय पर पहुँचना सुनिश्चित करने के लिए क्षमता योजना बहुत महत्वपूर्ण है।

"विपणन" एक अन्य औद्योगिक पहलू है जिसे दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। पहले से ही प्रस्तावित किए गए कार्यक्रम के लिए समय-समय पर अपने स्वयं के ग्राहकों के उत्पादन के लिए विज्ञापन और दूसरे प्रचार उपाय, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अधिक महत्वपूर्ण हैं, और विशेष प्रयास जब भी एक नया पाठ्यक्रम/कार्यक्रम प्रारंभ किया गया हो।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) आप इस कथन को कैसे उचित सिद्ध करेंगे, कि "दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक औद्योगिक प्रणाली है।"?

.....

.....

.....

.....

.....

13.7 सारांश

इस इकाई में, हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विशेष संदर्भ में, प्रबन्धन प्रक्रियाओं और मुद्दों का अवलोकन प्रस्तुत किया है। हमने प्रबन्धन प्रणालियां, विभिन्न प्रतिमानों और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों की संगठनात्मक संरचना के बारे में चर्चा की। आपने देखा होगा कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान या एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के प्रभावी कार्य के लिए एक उचित प्रसार/नेटवर्किंग, संचार, समूह का काम, स्पष्ट जिम्मेदारियाँ, एक प्रभावी प्रबन्धन सूचना तंत्र (एम.आई.एस.) और सहयोगी लोकतांत्रिक निर्णय लेना होना चाहिए। पाठ्यक्रम के डिजाइन और विकास, मीडिया, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ, आँकलन और मूल्यांकन प्रणाली, प्रबंधन सूचना तंत्र और नेटवर्किंग, आदि से संबद्ध गतिविधियों में शामिल इकाइयों या प्रभागों को उच्च संगठनात्मक प्रभावशीलता, संगठनात्मक गुणवत्ता और विद्यार्थियों की संतुष्टि के लिए अच्छे से संभालने और प्रबंधित करने की आवश्यकता है। हमने तीन उप-प्रणालियों पर भी ध्यान केन्द्रित किया – प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक – जो दूरस्थ शिक्षण संस्थान की परिचालन गतिविधियों को परिभाषित करती हैं। ये उप-प्रणालियाँ मुख्यतः प्रणाली की औद्योगिक प्रकृति और प्रक्रियाओं से सम्बन्धित हैं। हालाँकि अपने कार्यों से अलग दिखते हैं, वे एक के समान लक्ष्य के लिए मिलकर काम करते हैं और दूरस्थ शिक्षा के संपूर्ण प्रणाली बनाने में योगदान करते हैं। वे विभिन्न हितधारकों को प्रभावी ढंग और कुशलता से सेवा देने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की दूसरी उप प्रणालियां से और बाहर से अपने संसाधन प्राप्त करते हैं।

13.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) विपणन एक गतिविधि है, और दूरस्थ शिक्षा तंत्र, उत्पादों और सेवाओं का विपणन के लिए एक और विशेष गतिविधि की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थान केंद्रीय रूप से सामग्री, सेवाओं और विशेषज्ञता का विपणन कर सकता है या अध्ययन केन्द्रों के स्तर तक प्रचालन को विकेन्द्रीकृत कर सकते हैं। बाहरी स्रोतों से भी विपणन करवा सकते हैं, जिसमें प्रकाशक और वितरक ऐसा करते हैं, जिसके द्वारा संस्था के लिए निर्धारित शुल्क का भुगतान हो। अंतर्राष्ट्रीय विपणन के लिए, कठोर और निरंतर विज्ञापन, अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों में भागीदारी और प्रदर्शन बहुत जरूरी है।

2) क) रंबल द्वारा वर्णित, दूरस्थ शिक्षा के प्रबन्धन प्रतिमान इस प्रकार हैं:

   i) संस्था-केन्द्रित प्रतिमान,

   ii) व्यक्ति-केन्द्रित प्रतिमान, और

   iii) समाज-आधारित प्रतिमान।

   ख) फ्रीमैन ने छह प्रकार की मुक्त शिक्षा प्रणालियां की पहचान की है। वे निम्नलिखित हैं।

   i) गति परिसर-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   ii) गति संगठन-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   iii) गति व्यक्तिगत-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   iv) स्वयं-गति परिसर-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   v) स्वयं-गति संगठन-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   vi) स्वयं-गति व्यक्तिगत-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

3) मुक्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में आधुनिकता, मुक्त प्रवेश प्रणाली और विद्यार्थी उन्मुख स्वायत्तता सम्मिलित हैं। वे क्रेडिट आधारित हैं और उन्नत तकनीक-आधारित बहुमीडिया पैकेज को अपनाते हैं जो अधिगम प्रणाली में खुलेपन को प्रोत्साहित करते हैं। ये विशेषताएँ दोहरी प्रणाली प्रतिमान में ज्यादातर अनुपस्थित हैं।

4) कंसोर्टियम प्रतिमान में सहयोगी दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को संसाधनों को बेहतर ढंग से साझा करने के लाभ हैं। यह विभिन्न संसाधनों के बीच बहु-प्रवेश प्रणाली और क्रेडिट साझा करने का प्रोत्साहन करता है। दूसरी तरफ, एकल एवं दोहरी व्यवस्था वाले संस्थान केवल अपने संसाधनों या प्रणाली पर निर्भर करते हैं और इस प्रकार मुक्त शिक्षा के लिए अवसर तुलनात्मक रूप से प्रतिबंधित हैं।

5) i) एक मुक्त विश्वविद्यालय की मुख्य विशेषता, मुख्यालय, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों की एक तीन-स्तरीय संरचना वाली एक स्वायत्त प्रणाली कार्य हैं।

ii) मुक्त विश्वविद्यालय एक स्वायत्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान है। पत्राचार पाठ्यक्रमों के संस्थान/दूरस्थ शिक्षा के निदेशालय, एक अधिगम विभाग/संस्थान के रूप में एक पारंपरिक विश्वविद्यालय की संरचना के अंतर्गत कार्य करते हैं। मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, ये निदेशालय और संस्थान, प्रशासन और निर्णय लेने के सम्बन्ध में स्वायत्तता का आनंद नहीं लेते।

6) दूरस्थ शिक्षा प्रणालियाँ औद्योगिक प्रकृति की हैं क्योंकि उनके लिए ये आवश्यक हैं: i) पाठ्यक्रम सामग्री का भारी मात्रा में उत्पादन; ii) इन सामग्रियों का व्यवस्थित वितरण, iii) इन सामग्रियों का महत्वाकांक्षापूर्ण विपणन, आदि जो अनिवार्य रूप से औद्योगिक संचालित हैं।

13.9 संदर्भ ग्रंथ

Avabrath, G. (2013). Quality Assurance in Open Distance Learning: Learning: IGNOU a Case Study. *International Journal of Computer Science and Network*, Vol.2, Issue 1, pp.119-124; at http://ijcsn.org/IJCSN-2013/2-1/IJCSN-2013-2-1-66.pdf — Retrieved on 30-5-2017.

Freeman, R. (1997). *Managing Open Systems*, Kogan Page, London.

Guri, S. 1987, 'Quality control in distance learning', Open Learning, 2 (2), pp. 16–21.

Holt, David, H. (1990). *Management: Principles and Practices*, (2nd edition), Prentice Hall, New Jersey.

http://www.braou.ac.in/managementdescripationpages.php?id=8 – Retrieved on 25-02-2017.

https://www.vmou.ac.in/rc/1 — Retrieved on 25-02-2017.

IGNOU. 1994. "The Planning and Management of Distance Education Block-3" of *ES – 314: Management of Distance Education,* IGNOU, New Delhi.

IGNOU. (2016). *Profile 2016*, IGNOU, New Delhi.

Kaye, A., and Rumbe, G. (1981). *Distance Teaching for Higher and Adult Education*, Croom Helm, London.

Peters, O. (1998). *Learning and Teaching in Distance Education: Analyses and Interpretations from an International Perspective*, Kogan Page, London.

Rumble. G. (1986). *Planning and Management of Distance Education*, Croom Helm, London.

Sahoo, P. K. (1993). *Higher Education at a Distance*, Sanchar, New Delhi.

13.10 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत उत्तर लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणी अथवा उत्तर आप की सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अन्त्य प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रबन्धन कार्यों और प्रक्रियाओं का अवलोकन कीजिए। (1000 शब्दों में)।

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रबन्धन के मुद्दों पर प्रकाश डालिए। (1,000 शब्दों में)।

3) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न प्रतिमानों/प्रणालियों पर चर्चा कीजिए। (1000 शब्दों में)।

4) आप एकल एवं दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना कैसे कर सकते हैं? (1000 शब्दों में)।

5) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संगठनात्मक संरचना का वर्णन दीजिए। (1000 शब्दों में)।

6) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की विभिन्न उपप्रणालियों की भूमिका और महत्व की चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

7) दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संकाय/कंसोर्टियम प्रतिमान का वर्णन कीजिए। (250 शब्दों में)।

8) प्रबंधन सूचना प्रणाली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए? (250 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) क्या आपको लगता है कि प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक उपप्रणालियों के बिना एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान का कोई अस्तित्व नहीं है? कारणों और उदाहरणों के साथ अपने स्तर को न्यायसंगत सिद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप

विद्यालय प्रणाली की एक संगठनात्मक संरचना (प्रवाह चार्ट) बनाने का प्रयास कीजिए, जिसमें आप एक अध्यापक के रूप में हैं। यदि आप एक सेवारत अध्यापक नहीं हैं तो अपनी पसंद की किसी भी संस्था का चयन कीजिए, उनके अतिरिक्त जोकि भाग 13.5 में दिए गए हैं, और इसकी संगठनात्मक संरचना बनाएँ। (टिप्पणीः अपने पदाधिकारियों के पदानुक्रम की पहचान करें, फिर उनके पदानुक्रमिक सम्बन्ध को ऊपर से नीचे तक दर्शाते हुए चार्ट बनाने का प्रयास कीजिए।)

इकाई 14 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन

संरचना

14.0 प्रस्तावना

14.1 उद्देश्य

14.2 गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दे एवं मापदंड

- 14.2.1 अनिवार्यताएँ
- 14.2.2 मुद्दे
- 14.2.3 मापदण्ड
- 14.2.4 पद्धतियाँ
- 14.2.5 चुनौतियाँ

14.3 कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकार

- 14.3.1 मूल्यांकन क्यों किया जाए?
- 14.3.2 मूल्यांकन कैसे सुगम्य किया जाए?
- 14.3.3 किसके लिए मूल्यांकन किया जाए?
- 14.3.4 क्या मूल्यांकन किया जाए? निवेश, प्रक्रिया और उत्पाद
- 14.3.5 कौन से परिप्रेक्ष्य अपनाए जाएँ?

14.4 सारांश

14.5 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

14.6 संदर्भ ग्रंथ

14.7 इकाई अंत अभ्यास

14.0 प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था सहित उच्च शिक्षा के कार्यक्रमों, प्रणालियों और संस्थाओं को आगे बढ़ाने, बरकरार रखना और उनकी विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता का सुनिश्चयन करना एक आधारभूत पहलू हो गया है। गुणवत्ता सुनिश्चयन केवल एक बार का विषय नहीं है, इसकी सतत् प्रासंगिकता एवं सरोकार सहित एक रणनीतिक मूल्य है। व्यवहार के मानक और मापन के मानदण्ड पद्धति से पद्धति, संस्था से संस्था, प्रतिमान (मॉडल) से प्रतिमान और समय से समय और इसी तरह अन्य में भिन्न हैं। उच्च शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता में आधारभूत रूप से निहित हैं – इसके मानदण्ड और नीतियाँ, अपने शिक्षार्थियों को प्रदान किए जाने वाले अधिगम-निवेश और उत्पन्न किए जाने वाले स्नातकों की गुणवत्ता। अतः मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम के माध्यम से उच्च शिक्षा में यह महत्वपूर्ण है कि विविध निवेशों, प्रक्रियाओं और उत्पादों से सम्बन्धित गुणवत्ता मानकों की स्पष्ट रूप से सूत्रबद्ध किया जाए।

इकाई 13 में, हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धतियों, प्रतिमानों (मॉडल), संगठनात्मक संरचनाओं के प्रबंधन सहित विभिन्न उप-पद्धतियों एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों के प्रभावी रूप से कार्य करने एवं उनके महत्व की चर्चा की है। चूँकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति ने परंपरागत पद्धति को सम्पूरक और अनुपूरक बनाने के अलावा एक समानान्तर पद्धति होते हुए सफल ट्रैक रिकार्ड स्थापित किया है, इसे यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि शिक्षार्थियों की गुणवत्ता परवर्ती की तुलना में कम न हो। मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम

में, विभिन्न पहलू जैसे कि इसकी नीतियाँ, कार्यक्रम, शिक्षण-अधिगम सामग्री, शिक्षार्थी सहयोगी सेवाएँ और शिक्षार्थी अधिगम अथवा उपलब्धि, दूसरों के मध्य, गुणवत्ता सुनिश्चयन के लिए सरोकार के मामले हो जाते हैं। गुणवत्ता सुनिश्चयन नीतियाँ, पद्धतियाँ, उपागम एवं मानदण्ड, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रावधान की विश्वसनीयता को प्राप्त करने, बरकरार रखने और उसे प्रोन्नत करने के लिए अवश्यंभावी हो जाते हैं। अतः, इस प्रकार के कार्यों के संपादन के लिए व्यापक गुणवत्ता सुनिश्चयन पद्धति की आवश्यकता होती है जिसे कि मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम संस्था के निवेशों, विधियों/प्रक्रियाओं और उत्पादों अथवा परिणामों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए बनाया गया है।

इस इकाई में हम इन सब पहलुओं एवं मुद्दों की चर्चा करेंगे।

14.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता की संकल्पना की व्याख्या कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दों, मापदण्डों और विधियों की पहचान कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकारों का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों की चर्चा कर सकेंगे।

14.2 गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दे एवं मापदंड

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन नीतियों में उन उच्च शिक्षा शैक्षिक चढ़ावे की बढ़ती हुई विविधता, उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण और निजी उच्च शिक्षा और दूरस्थ अधिगम संस्थानों के विस्तारण सहित अनेक व्यापक प्रवृत्तियों ने अभिरूचि विकसित की है (एल्खावास एवं अन्य, 1998, विक्टोरिया किस, 2005 में उद्धृत)।

सामान्य रूप में उच्च शिक्षा और विशेष रूप में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संदर्भ में गुणवत्ता का अर्थ है विभिन्न लोगों के लिए विभिन्न चीजों, जैसे कि शिक्षकों, शिक्षार्थियों, प्रबंधकों, नीति निर्माताओं, पणधारियों, मूल्यांकनकर्त्ताओं, नियोक्ताओं और इसी तरह अन्य लोगों के लिए और विभिन्न समयों में। कारकों की एक विस्तृत शृंखला जैसे कि सांस्थानिक विज़न और लक्ष्य शिक्षकगण की प्रतिभा और सुविज्ञता, शिक्षार्थियों की गुणवत्ता, शिक्षण-अधिगम का वातावरण के साथ पुस्तकालय, प्रयोगशाला व अन्य सुविधाएँ, मूल्यांकन मानदंड अपने स्नातकों की रोजगार योग्यता (श्रम बाजार के प्रति प्रासंगिकता), प्रबंधन प्रभाविता की गुणवत्ता, नेतृत्व और अभिशासन व अन्य कारक, शैक्षिक संस्थान की संपूर्ण गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। अतः गुणवत्ता एक पेंचीदा एवं गतिशील संकल्पना है और इसे परिभाषित करना बहुत मुश्किल है, हालाँकि, बहुत प्रयत्न किए गए हैं।

चूँकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर उच्च शिक्षा की प्राप्यता के प्रभावी वैकल्पिक साधन के रूप में तेजी से स्वीकार किया जा रहा है, सरकार सहित सभी पणधारी, सार्वजनिक व निजी समूह, समाज और सम्बन्धित व्यक्ति गुणवत्ता प्रावधान पर नजर रखेंगे। तथ्य यह है कि, सार्वजनिक रूप से या सामान्य रूप से गुणवत्ता सुनिश्चयन की रणनीति को स्वीकार करना कठिन है जिसने कि शिक्षार्थियों/अनुसरणकर्त्ताओं, अन्य पणधारियों, संस्था के अंतर्गत और सभी संस्थाओं में कार्यक्रमों के स्तरों और प्रकारों

की पृष्ठभूमि में विविधता प्रदान की है। इसलिए, यह परमावश्यक है कि गुणवत्ता सुनिश्चयन पद्धतियों, प्रक्रियाओं, दिशा-निर्देशों को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों तथा साथ ही साथ सम्बद्ध नियामक निकायों द्वारा विकसित और सम्पोषित किया जाए।

गुणवत्ता सुनिश्चयन पर हमें अपने भाषण को जारी रखने के लिए हम सबसे पहले मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण पद्धति के संदर्भ में अनिवार्यताओं को समझने का प्रयास करें।

14.2.1 अनिवार्यताएँ

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने की आवश्यकता को दृढ़ता से महसूस किया जाता है जब शिक्षार्थी वैश्विक कार्यबल/बाजार में संघर्ष कर रहे हों, मान्य व्यावसायिकता और श्रेष्ठता के साथ संचालित करने वाले व्यवसाय और तकनीकी क्षेत्र जिसके कारण राष्ट्रीय वृद्धि और समृद्धि में बाधक हों। इस तरह, गुणवत्ता संपूर्ण विश्व में शैक्षिक जगत का प्रमुख चिन्ता का विषय है और इस घटक को शिक्षण अधिगम स्थिति में अभिप्रेरित करने के लिए प्रशासकों और विद्वानों द्वारा बहुविध क्षेत्रों में अनेक प्रयास किए जा रहे हैं।

शिक्षा में गुणवत्ता तब प्राप्त की जाती है जब शिक्षोत्पादन नियोजित लक्ष्यों, विशिष्टताओं और जरूरतों को अनुकूल बनाता है (क्रास्बी, 1979)। शिक्षा में गुणवत्ता उन सभी का अत्यंत सचेतन एवं सुनियोजित प्रयास है जो इस कार्य में प्रत्येक स्तर और घटक पर शामिल हैं। विकसित देशों में, बड़े पैमाने पर अनुसंधान और विद्वतापूर्ण आउटपुट को देखते हुए (बोन्सर, 1992, क्रास्बी, 1979; फीगेनबाम, 1983; जुरान एवं ग्रयना, 1988; पीटर्स एवं बाटरमैन, 1982; ज़की एवं रशीदी 2013 में उद्धृत), समाज में विविध भूमिकाओं को ग्रहण करने के लिए व्यक्तियों को शिक्षित या प्रशिक्षित कर रहे संस्थाओं की नीतियों और व्यवहारों में गुणवत्ता सुनिश्चयन, मूलभूत घटक रहता है। वे इस तथ्य के प्रति पूर्ण रूप से सचेत रहते हैं कि यदि शिक्षा में गुणवत्ता की अवहेलना की जाती है तो समाज पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न किए जाते हैं जो कि "समाजों को सद्भावयुक्त करने और विकसित करने के लिए शिक्षा एक साधन है" इस संकल्पना को केवल स्वप्न चित्र तक देखने में सीमित करता है (होल्ट, 2000; यूनेस्को, 1996; ज़की एवं रशीदी 2013 में उद्धृत)। विकासशील देशों में भी, वर्तमान में, शिक्षा से सम्बन्धित मूल्य प्रणाली में एक बदलाव है और जो शिक्षा में शामिल हैं वे अपनी सम्बन्धित शिक्षा पद्धति में लुप्त होते गुणवत्ता कारक के बारे में चर्चा करना आरंभ कर दिया है जो जन समुदाय को प्रशिक्षित और शिक्षित करने के सभी प्रयासों की पूर्णतया अप्रभावी कर दिया है (ज़की एवं रशीदी, 2013)।

जैसा कि हम जानते हैं कि, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की एक खास बात है श्रम एवं विशेषज्ञता के विभाजन के अच्छी तरह से स्थापित सिद्धान्तों का अनुप्रयोग करना। जटिल पद्धति वाली मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्था को सभी स्तरों पर गुणवत्ता को कायम रखने के लिए अपनी सभी उप-पद्धतियों में अत्यंत सचेतन एवं नियोजित प्रयत्न किया है। नवीन शैक्षिक वातावरण जो शैक्षिक सेवाओं में बढ़ते हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, डिग्री एवं अन्य कार्यक्रमों को संचालित करने वाले संस्थानों के प्रकार और उनकी संख्या में बढ़ोतरी शिक्षार्थियों, और स्नातकों की वृद्धि की गति और अभिभावकों, सरकारों, शैक्षिक संस्थानों एवं अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी संस्थानों को सम्मिलित करती है में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा गुणवत्ता सुनिश्चयन एक अनिवार्यता है। अतः गुणवत्ता सुनिश्चयन की मुख्य जिम्मेदारी स्वयं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की है, बजाय नियामक निकायों के। दूसरे शब्दों में, यह सम्बन्धित संस्थाओं के हित में है कि वे अपने कार्यक्रमों की आवधिक लेखा परीक्षा कराएँ जिसमें वे अपनी प्रबलताओं और दुर्बलताओं को पहचानें। इसका प्रयोजन है आत्मनियमन का संस्थाकरण करना और सतत सुधार एवं नवाचार सुनिश्चित करना।

एक विशिष्ट गुणवत्ता सुनिश्चयन की रणनीति को संस्तुत करना लगभग असंभव हो सकता है जिसे कि सार्वभौमिक रूप से ग्रहण किया जा सके क्योंकि सुदूर शिक्षा कार्यक्रम, जिस अनुयायीगण की यह सेवा करती है उसकी पृष्ठभूमि, संचालित किए जाने वाले कार्यक्रमों का विस्तार और स्तर, कार्य करने का ढंग, और सुदूर शिक्षा संगठन के प्रयोजन एवं कार्यक्षेत्र, व्यापक रूप से संस्था से संस्था और एक देश से दूसरे देश में भिन्न हो सकते हैं। तथापि, यह अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए कि किसी भी गुणवत्ता पद्धति का केन्द्रण, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को अवश्य संतुष्ट करें साथ ही साथ सेवाओं को यथोचित रूप से प्रदान करें। उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए बहुत से कारक हैं जिनपर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की प्रबंधन रणनीति के सुधार के लिए विचार किया जा सकता है (https://wikieducator.org/images/3/35/PID_628.pdf)। इस प्रकार, हम मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम से जुड़े व्यापक अनेक कारक देख सकते हैं और सम्बन्धित मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की बड़ी जिम्मेदारी होती है कि वे संस्था स्तर पर, कार्यक्रमों के स्तर पर और अन्ततः अधिगम प्रतिफल या निष्पादन/शिक्षार्थियों की लब्धि स्तर पर वांछित गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से निगरानी और आवधिक मूल्यांकन क्रियाएँ संचालित करें। इस प्रकार, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में गुणवत्ता सुनिश्चयन अत्यंत आवश्यक है यदि विशेष रूप से शिक्षार्थियों के बीच इसकी विश्वसनीयता का स्थापित, रख रखाव और बढ़ावा करना है।

14.2.2 मुद्दे

गुणवत्ता सुनिश्चयन अनिवार्य रूप से करने के उद्देश्य है वांछित गुणवत्ता को सभी कार्यक्रमों के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि दूरस्थ शिक्षार्थियों के अधिगम परिणामों और निष्पादन को बढ़ाया जा सके। गुणवत्ता प्रावधान का सरोकार सभी पणधारियों – शिक्षार्थियों, शिक्षकों, संस्थाओं, सरकारों, निजी समूहों, व्यक्तियों, समाज और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संचालित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रम बाजार सभी से संबंद्धित है। लेकिन गुणवत्ता सुनिश्चयन का दायित्व मुख्य रूप से केवल प्रदाता संस्थाओं, सरकार और विनियामक निकायों पर है।

व्यवहार में, गुणवत्ता सुनिश्चयन से सम्बन्धित व्यापक मुद्दे हैं। ये निम्नलिखित हैं:

1) शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के संदर्भ में मान्य गुणवत्ता की परिभाषा क्या है?

2) क्या सभी पणधारियों की पहचान की जाती है और उनके परिप्रेक्ष्य और हित इस परिभाषा में शामिल किए जाते हैं?

3) क्या पणधारी गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रक्रियाओं में कोई स्थान पाते हैं, यदि ऐसा है तो गुणवत्ता सुनिश्चयन पद्धतियों अथवा तंत्र के अंतर्गत इसके संगठनात्मक निहितार्थ क्या हो सकते हैं?

4) क्या समीक्षाओं को केवल शैक्षणिक कार्यक्रमों पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए अथवा संस्थाओं के समग्र रूप में, और क्या केवल गुणवत्ता सुनिश्चयन अभिकरणों और शिक्षाविदों को ही सम्मिलित करना चाहिए अथवा अन्य पणधारियों को भी?

5) गुणवत्ता सुनिश्चयन के पालन किए जाने वाले उपागम कौन से हैं?

6) गुणवत्ता सुनिश्चयन का दायितव किन पर होना चाहिए – क्या प्रदाता संस्थाओं, सरकार और विनियामक निकायों पर?

7) गुणवत्ता सुनिश्चयन का कार्यक्षेत्र क्या है – क्या यह विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्थाओं के मध्य और अंतर्गत मान्य रूप से भिन्न हैं?

उपरोक्त उल्लिखित सभी मुद्दे अनिवार्य रूप से इस बात पर निर्भर करते हैं कि गुणवत्ता को गुणवत्ता सुनिश्चयन के संदर्भ में किस प्रकार परिभाषित किया गया है। इसलिए, यहाँ पर यह महत्वपूर्ण है कि आपको गुणवत्ता और गुणवत्ता सुनिश्चयन की संकल्पना पर स्पष्टता प्रदान की जाए, क्योंकि सारे मुद्दे इसी में सन्निहित हैं। यह आपको उपरोक्त वर्णित अन्य सभी मुद्दों पर आपके विमर्ष के लिए ठोस आधार प्रदान करेगा।

गुणवत्ता का अर्थ है विभिन्न लोगों के लिए विभिन्न चीजें; यहाँ तक कि वही व्यक्ति एक ही चीज के बारे में विभिन्न क्षणों में विभिन्न सम्प्रत्ययीकरणों को ग्रहण कर सकता है। इस प्रकार, गुणवत्ता अपनी प्रकृति में हमेशा संदर्भीय होती है और इसके संदर्भ बिन्दु होते हैं। यह किसी पहलू की विशेष उत्कृष्टता की मात्रा अथवा किसी वस्तु द्वारा प्राप्त विशिष्टता अथवा विशिष्ट गुण अथवा कुछ अन्य वस्तुओं के खिलाफ मापा गया मानक की ओर संकेत करती है।

मानकीकरण के अंतर्राष्ट्रीय संगठन (आई.एस.ओ. 8402: 1986, 3.1, कटसोनी एवं स्ट्रेटिजी या 2016 में उद्धृत) द्वारा गुणवत्ता की उपयोगकर्त्ता आधारित परिभाषा इस प्रकार दी गई है – *"सुविधाओं और उत्पाद की विशेषताओं की समग्रता जोकि कही गई अथवा अन्तर्निहित आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए इसकी योग्यता को वहन करती है।"* शिक्षा में गुणवत्ता एक सकारात्मक एवं गतिशील विचार के रूप में देखी जाती है जिससे सार्थक निवेश के साथ डिजाइन द्वारा प्राप्त किया जा सके (क्राफोर्ड और शटलर, 1999) और गुणवत्ता के लिए अन्वेषण उत्पाद एवं सेवाओं के सतत् सुधार सहित और योजना, क्रियान्वयन, मूल्यांकन और निर्णय निश्चित करने के तरीकों के संबंधित ग्राहक-उन्मुख उपागम को प्रतिबिम्बित करें (नवरत्नम, 1997; ज़की एवं रशीदी, 2013 में उद्धृत)।

यूनेस्को की परिभाषा, जैसा कि व्लासियस्नु एवं अन्य (2007, पृ. 70–73) द्वारा वर्णित, संपादित और संग्रहित है, कहती है कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता एक बहु-आयामी, बहु-स्तरीय और गतिशील अवधारणा है जोकि एक शैक्षिक मॉडल के संदर्भीय ढाँचे, सांस्थानिक दूर दर्शिता और उद्देश्यों और दी गई व्यवस्था, संस्था, कार्यक्रम, अथवा विषय संकाय के अंतर्गत विशिष्ट मानकों से सम्बन्धित होती है। इस प्रकार, गुणवत्ता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होते हुए विभिन्न अर्थ ले सकती है:

i) उच्च शिक्षा में विभिन्न संघटकों अथवा पणधारियों (शिक्षार्थी / विश्वविद्यालय संकाय / श्रम बाजार / समाज / सरकार) के विभिन्न हितों (निर्धारित आवश्यकताओं) की समझ;

ii) इसके संदर्भ: लक्ष्य, उद्देश्य, निवेश, प्रक्रियाएँ, परिणाम इत्यादि;

iii) शैक्षणिक जगत के गुण अथवा विशेषताएँ जोकि मूल्यांकन करने के योग्य हैं; और

iv) उच्च शिक्षा के विकास में ऐतिहासिक अवधि।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की अवधारणा विश्वविद्यालय के शिक्षण, शैक्षणिक कार्यक्रम, अनुसंधान एवं छात्रवृत्ति, कर्मचारीगण, शिक्षार्थी, भवन, सुविधाएँ, साज-सामान, समुदाय के प्रति सेवाएँ और शैक्षिक वातावरण सहित सभी प्रकार्यों और गतिविधियों को समाविष्ट करती हैं (युवा, 2005, ओगुनलिए, 2013 में उद्धृत)। हम शैक्षणिक गुणवत्ता की परिभाषा के व्यापक प्रतिबिम्ब को प्राप्त कर सकते हैं विशेष रूप से तब जब इसे उच्च शिक्षा के मूल्यांकन से जोड़ दिया जाता है। जब हार्वे और ग्रीन (1993) ने तर्क किया कि ये परिभाषाएँ "पाँच पृथक किन्तु गुणवत्ता के बारे में अंतर्सम्बन्धित सोच विचार के तरीकों में समूहित किया गया है" और हार्वे (1995) उसी का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करता है (http://www.qualityresearch international.com/glossary/quality.htm), जो आगे इस प्रकार से संक्षेप में दिया गया है:

- (गुणवत्ता का) *असाधारण* विचार गुणवत्ता को कुछ विशेष वस्तु के रूप में देखता है। शैक्षिक शब्दों में श्रेष्ठता के विचारों से जोड़ा जाता है जैसा ''उच्चतम गुणवता'' जो सर्वाधिक लोगों से अप्राप्य है।
- गुणवत्ता *पूर्णता* के रूप में गुणवत्ता को सामंजस्य अथवा परिपूर्ण निष्कर्ष के रूप में देखती है जोकि सभी के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।
- गुणवत्ता *प्रयोजन की उपयुक्तता* के रूप में गुणवत्ता को ग्राहक की अपेक्षाओं, आवश्यकताओं अथवा आकांक्षाओं के पूर्ण करने के पदों में देखती है। यह अपने लक्ष्य अथवा अध्ययन के कार्यक्रम को पूर्ण करने के लिए किसी संस्था की योग्यता पर आधारित हो सकती है।
- गुणवत्ता *धन के मूल्य* के रूप में गुणवत्ता को निवेश के प्रतिफल के रूप में देखती है। 'ग्राहक' गुणवत्ता उत्पाद अथवा सेवा प्राप्त करता है।
- गुणवत्ता *रूपांतरण* के रूप में गुणवत्ता का एक शास्त्रीय विचार है जो इसे एक स्थिति से दूसरे स्थिति के परिवर्तन के रूप में देखती है। शैक्षिक शब्दों में, रूपांतरण शिक्षार्थियों की वृद्धि और सशक्तीकरण की ओर संकेत करता है अथवा नए ज्ञान के विकास की ओर।

गुणवत्ता की अवधारणा के उपर्युक्त उपागम हमें गुणवत्ता का विभिन्न संदर्भों एवं कालों में विभिन्न लोगों के लिए क्या अर्थ है, इस बारे में सही विचार प्रदान करते हैं। यहाँ पर हम एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं : क्या गुणवत्ता सुनिश्चयन और गुणवत्ता नियंत्रण एक और वही पद हैं? गुणवत्ता नियंत्रण "गुणवत्ता प्रबंधन का एक भाग है जिसे गुणवत्ता अपेक्षाओं की पूर्ति में ध्यान केन्द्रित किया जाता है"। जबकि गुणवत्ता सुनिश्चयन भी "गुणवत्ता प्रबंधन का एक भाग है जिसे गुणवत्ता की आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाने कि विश्वास प्रदान करने में ध्यान केन्द्रित दिया जाता है (आई.एस.ओ, 9000; 2005)। गुणवत्ता नियंत्रण वह भौतिक जाँच है जिसे कि उत्पाद इन नियोजित व्यवस्थाओं को निरीक्षण, मापन आदि के अनुकूल कर देता है अथवा यह केवल उत्पाद या सेवाओं के स्तर को मापता और निर्धारित करता है। यह स्वयं में एक प्रक्रिया है। दूसरी तरफ, गुणवत्ता सुनिश्चयन को मूलभूत रूप से उन प्रक्रियाओं का नियोजित और प्रलेखित करने के लिए ध्यान केन्द्रित किया जाता है ताकि गुणवत्ता योजनाओं और निरीक्षण और परीक्षण योजनाओं सहित ऐसी चीजों की गुणवत्ता आश्वस्त की जा सके। यह उत्पादों अथवा सेवाओं की गुणवत्ता आश्वस्त करने की एक संपूर्ण व्यवस्था है। यह केवल प्रक्रिया मात्र नहीं है, बल्कि निर्धारित मानकों अथवा ग्राहकों के लिए निर्दिष्ट अपेक्षाओं के विपरीत निष्पादन, सेवा अथवा उत्पाद की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए एक संपूर्ण व्यवस्था है (http://www.qualitygurus.com/courses/mod/forum/discuss. php?d=1557)। तो संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (Total Quality Management - TQM) क्या है? यह उन व्यवस्थाओं की ओर संकेत करता है जोकि सभी प्रक्रियाओं की निगरानी रखने के लिए विकसित की जाती है जोकि किसी संगठन के कार्य का भाग है। उच्च शिक्षा में ये कार्य मूल्यांकन एवं प्रत्यायन अभिकरण करते हैं।

गुणवत्ता सुनिश्चयन शैक्षिक कार्यक्रमों की व्यवस्थित समीक्षा है जो शिक्षा के स्वीकार्य मानक, छात्रवृत्ति और आधारभूत ढाँचे बरकरार रखे जाने को सुनिश्चित करता है (http://www.unesco.org/new/en/education/themes/strengthening-education-systems/higher-education/quality-assurance)। यह उन क्रियाओं का समुच्चय है जो कोई उत्पाद या सेवा संबंधित मानकों को निर्दिष्ट किए जाने और सुसंगत रूप से उसे प्राप्त किए जाने के लिए कोई संगठन उत्तरदायित्व लेता है। इस प्रकार, यह किसी संस्था की

नियोजित और व्यवस्थित समीक्षा प्रक्रिया है जो मानकों को निश्चित करने, प्राप्त करने, बनाए रखने और बढ़ाने को सुनिश्चित करता है।

दूरस्थ शिक्षा जो कि तकनीकी द्वारा संचालित है और प्रकृति में औद्योगिक है, इसे तकनीकी प्रगति के लाभों का शोषण करने के लिए जोकि यथोचित निगरानी और मूल्यांकन पर आधारित हो, अपने संचालन के लिए सतत पुनरावृत्ति की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थानों/प्रदाताओं के लिए यह अत्यंत व्यवस्थित या रणनीतिक चुनौती हो जाती है जब वे अपने विभिन्न उप-पद्धतियों और पणधारियों के मानक निर्धारित करने का प्रयास करती हैं। और, मुक्त एवं दूरस्थ संस्थानों में, जो कि ऑन-कैम्पस और ऑफ-कैम्पस माध्यम से वहीं कार्यक्रम संचालित करते हैं, गुणवत्ता सुनिश्चयन और गुणवत्ता सुधार प्रक्रियाएँ विभिन्न गुणवत्ता ढ़ँचों को अपनाते हैं जिस से शिक्षार्थियों के अधिगम अनुभवों को प्रभावित करने वाले कारकों को जैसे विधियों और पद्धतियों में किसी एक संस्था के साथ और सभी संस्थाओं में हो को व्यापक रूप से सम्मिलित किया गया जिन देशों और संस्थाओं में इस प्रकार के प्रयोगों का पालन किया जा रहा है, ये पहलू महत्वपूर्ण हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में गुणवत्ता की संकल्पना की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14.2.3 मापदण्ड

गुणवत्ता और गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दों को समझने के पश्चात्, इस अनुभाग में हम गुणवत्ता सुनिश्चयन के मापदण्डों पर अपनी चर्चा का ध्यान केन्द्रित करेंगे।

एगबोखरे (2006) निम्नलिखित की पहचान गुणवत्ता सुनिश्चयन के आधार के रूप में करते हैं: कर्मचारियों की गुणवत्ता; निर्देशन का वातावरण; निर्देशन की विषयवस्तु; शिक्षार्थी सहायक सेवाएँ, गुणवत्ता की संस्कृति; प्रक्रियाओं और तथ्यों का प्रबंधन; सतत् अधिगम एवं सुधार; निर्देशन की गुणवत्ता और उत्पाद के ग्राहकों और उपभोक्ताओं से प्रतिपुष्टि। ज़की एवं रशीदी (2013, देखें http://ijsse.com/sites/default/files/issues/2013/v3i4/papers/Paper-24.pdf) आठ मुख्य घटकों या मापदण्डों सहित एक ढाँचा प्रस्तुत करते हैं जो कि मुख्य कारकों के रूप में कार्य करता है जो उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को प्रभावित करता है अथवा शैक्षिक संस्था के गुणवत्ता धर्म में योगदान देता है। ये कारक हैं: i) उच्च शिक्षा की नीतियाँ एवं प्रयोग; ii) संसाधन; iii) पाठ्यचर्या; iv) संस्थागत ढाँचा एवं रणनीति; v) मुक्त पद्धति चिंतन एवं परिवर्तन; vi) संस्थागत नेतृत्व; vii) संकाय के.एस.ए. (ज्ञान, कौशल और योग्यताएँ); और viii) शिक्षार्थियों का प्रोफाईल।

उपरोक्त चर्चित विभिन्न आयाम, घटक और कारक परस्परनिर्भर हैं, एक-दूसरे को इस तरह प्रभावित करने वाले हैं जो कभी-कभी अप्रत्याषित हें। इस प्रकार, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम व्यवहार के क्षेत्र में गुणवत्ता सुनिश्चयन बड़ा सुधार लाने में असमर्थ है क्योंकि यह निवेशों, प्रक्रियाओं और परिणामों के विशिष्ट प्रभाव और साथ ही साथ संचालित की जाने वाली नीतियों और कार्य प्रणाली में परिवर्तन से सम्बन्धित मूलभूत कठिनाइयों की अयोग्यता के कारण संतोषजनक मापन लाने में असमर्थ है। मुख्य और सर्वाधिक मौलिक मुद्दा है विविध उप पद्धतियों की आपेक्षित प्रभावकारिता और प्रत्येक के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए उपयुक्त विधियों के चयन को सुनिश्चित करनां

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने की विधि में मुख्य पहलू जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए, निम्नलिखित हैं (https//wikieducator.org/images/3/35/PID_628.pdf):

- प्रवेश शर्तें और प्रक्रियाओं;
- अनुदेशनात्मक सामग्री का विकास एवं उत्पादन;
- वितरण पद्धति की संरचना और प्रबंधन;
- शिक्षण और अधिगम के प्रोन्नति के लिए प्रयुक्त सामग्री की गुणवत्ता;
- शिक्षार्थियों की मूल्यांकन की प्रक्रियाओं;
- कार्यक्रम के संचालन के लिए पर्याप्त मानक एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता;
- एक वैयक्तिक दूरस्थ शिक्षा सुसाधक की प्रभावकारिता के मूल्यांकन की समस्या क्योंकि दूरस्थ शिक्षा में अर्ध-नौकरशाहीकरण (सामूहिक कार्य) का तत्व होता है;
- शिक्षार्थी सहायक सेवाएँ; और
- निगरानी, मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि पद्धतियाँ।

प्रमुख पहलुओं को जानने के पश्चात्, यहाँ यह प्रासंगिक है कि कुछ विशिष्ट निष्पादन सूचकांकों की चर्चा की जाए। यू.के. में ज़रट समिति की रिपोर्ट (1985), जो कि अधिकृत दक्षता अध्ययन (commissioned efficiency studies) पर आधारित है, ने विश्वविद्यालयों के लिए दक्षता संकेतकों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित किया है (http://www.educationengland.org.uk/documents/jarratt1985/index.html):

क) आंतरिक निष्पादन संकेतक : इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- स्नातक आवेदनों का बाजार में हिस्सा (विषय द्वारा)
- स्नातक दर और डिग्री की कक्षाएँ।
- परास्नातक और डॉक्टरेट शिक्षार्थियों का आकर्षण
- उच्च डिग्री की सफलता दर (और लिया गया समय)
- अनुसंधान फंडों का आकर्षण
- शिक्षण गुणवत्ता

ख) बाह्य निष्पादन संकेतक : इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- नियोजन में स्नातकों (परास्नातकों) की स्वीकार्यता
- स्नातकों (परास्नातकों) का प्रथम लक्ष्य
- बाहरी समीक्षा से आँकी गई प्रतिष्ठा

- कर्मचारियों एवं प्रशंसा पत्रों द्वारा प्रकाशन
- पेटेन्ट, आविष्कार, परामर्शी
- विद्वत् समितियों की सदस्यता, पुरस्कार एवं पदक
- सम्मेलनों के पत्र

ग) ***निष्पादन संकेतकों को संचालित करना*** : इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- इकाई लागत
- कर्मचारियों/शिक्षार्थियों के अनुपात
- कक्षा के आकार
- उपलब्ध पाठ्यक्रम विकल्प
- कर्मचारियों का कार्यबोझ
- पुस्तकालय स्टॉक की उपलब्धता
- कम्प्यूटिंग की उपलब्धता

उपरोक्त संकेतकों की पहचान परंपरागत विश्वविद्यालयों के संदर्भ में की गई। जिस पर भी, ये संकेतक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं।

14.2.4 पद्धतियाँ/विधियाँ

उच्च अधिगम संस्थानों में वैश्विक रूप से गुणवत्ता सुनिश्चयन की तीन प्राथमिक विधियाँ अस्तित्व में हैं। ये हैं : आँकलन, लेखा परीक्षा एवं प्रत्यायन (ओगुनलिये, 2013)। ये विधियाँ समान रूप से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में भी लागू हैं और सामान्य रूप से अनुसरण की जाती हैं।

विधि 1: आँकलन (Assessment)

आँकलन एक मूल्यांकन है जिसका परिणाम ग्रेड में आँका जाता है चाहे संख्यांक (उदाहरणार्थ प्रतिशतता अथवा एक विनिर्दिष्ट मापनी पर 1, 2, 3, 4 आदि); आक्षरिक (उदाहरणार्थ ए, बी, सी, डी, आदि) अथवा वर्णनात्मक (उत्तम, बहुत अच्छा, अच्छा, संतोषजनक आदि)। अधिकतर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा इन्हीं के संयोजन का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, इग्नू ए, बी, सी, डी, ई ग्रेड वाली एक ग्रेड पद्धति है जिसमें क्रमशः 5, 4, 3, 2 और 1 के ग्रेड बिन्दुओं सहित सम्बन्धित वर्णनात्मक स्तरों जैसे उत्तम, बहुत अच्छा, अच्छा, संतोषजनक और असंतोषजनक के साथ अनुसरण करता है।

विधि 2: लेखा परीक्षा (Audit)

लेखा परीक्षा किसी संस्था अथवा कार्यक्रम की समीक्षा की प्रक्रिया है यह निर्धारिरत करने के लिए कि क्या इसकी पाठ्यचर्या, कर्मचारी और आधारभूत संरचना इसके निर्धारित लक्ष्य लक्ष्य और उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। यह किसी संस्था अथवा इसके कार्यक्रमों का इसके अपने स्वयं के मिशन, लक्ष्यों और कथित मानकों के सम्बन्ध में मूल्यांकन है। अतः लेखा परीक्षा एक जाँच है कि कोई संस्था अपनी स्वयं के बारे में स्पष्टता अथवा अस्पष्टता से क्या दावा करती है। लेखा परीक्षा पूछती है "आप जो यह कह रहे हैं कि मैं यह कर रहा हूँ, इसे कितनी अच्छी तरह से कर रहे हैं?" लेखा परीक्षा संस्थाओं और कार्यक्रमों के उत्तरदायित्व पर ध्यान केन्द्रित करती है और सामान्यतया स्व-अध्ययन, सम समूह समीक्षा और स्थान भेंट या परीक्षा को शामिल करती है। इस प्रकार का मूल्यांकन स्व-प्रबंधित (आंतरिक) अथवा

बाह्य निकाय द्वारा संचालित किया जा सकता है; अधिकतर संस्थाएँ दोनों का अनुसरण करती हैं।

विधि 3: प्रत्यायन (Accreditation)

प्रत्यायन को गुणवत्ता मानकों और गुणवत्ता सुधार की आवश्यकता के लिए किसी संस्था और इसके कार्यक्रमों की संवीक्षा करने के लिए उच्च शिक्षा में प्रयोग की जाने वाली स्व-अध्ययन और बाह्य गुणवत्ता समीक्षा की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को इसलिए तैयार किया गया है कि क्या कोई संस्था अपने प्रकाशित मानकों (जिसे कि एक बाह्य निकाय जैसे कि सरकार, राष्ट्रीय गुणवत्ता सुनिश्चयन अभिकरण अथवा व्यावसायिक संस्था द्वारा गठित किया गया है) तक प्रत्यायन के लिए और यह जाँचने के लिए कि क्या संस्था अपने लक्ष्य और कथित प्रयोजन तक पहुँच रही है अथवा नहीं। प्रत्यायन इस प्रकार के प्रश्न पूछती है जैसे कि "क्या आप अनुमोदित करने के लिए बिल्कुल सही हैं (डिग्रियाँ प्रदान करने के लिए)"? गुणवत्ता निर्धारण और गुणवत्ता सुधार के इसके दोहरे प्रयोजन हैं। इस प्रक्रिया में सामान्यतया सम्मिलित हैं – स्व-मूल्यांकन, समसमूह (पीयर ग्रुप) समीक्षा और स्थान भेंट या परीक्षा।

किसी कार्यक्रम अथवा संस्था के प्रत्यायन के परिणाम के निहितार्थ स्वयं अपनी संस्था के लिए हो सकते हैं (उदाहरणार्थ संचालन के लिए अनुमति अथवा बाह्य निधीयन के लिए योग्यता) और इसके अपने शिक्षार्थियों के लिए भी (उदाहरणार्थ अनुदान अथवा व्यावसायिक डिग्री प्रदान करने की योग्यता के लिए)। एक संस्था अथवा कार्यक्रम जिसे कि प्रत्यायन की स्वीकृति नहीं दी जाती, सार्वजनिक अथवा निजी निधीयन की समाप्ति को अनुभव कर सकता है; इसके स्नातकों के व्यवसाय में प्रवेश के अयोग्य होने के कारण राष्ट्रीय उच्च शिक्षा समुदाय में प्रतिष्ठा की क्षति हो सकती है।

दो तरह के प्रत्यायन होते हैं : अर्थात् सांस्थानिक प्रत्यायन और कार्यक्रम प्रत्यायन।

सांस्थानिक प्रत्यायन : यह केवल संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों पर ही नहीं बल्कि इस प्रकार के क्षेत्रों पर भी ध्यान देते हुए संपूर्ण रूप से संस्था पर ध्यान केन्द्रित करता है :

- लक्ष्य
- अभिशासन
- प्रभावी प्रबंधन
- सक्रिय कार्यक्रम
- शिक्षण कर्मचारी
- अधिगम संसाधन (पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और शैक्षिक प्रौद्योगिकी)
- शिक्षार्थी और शिक्षार्थी सहायता
- भौतिक सुविधाएँ
- आर्थिक संसाधन

कार्यक्रम प्रत्यायन : शैक्षणिक कार्यक्रम का प्रत्यायन सरोकार प्रत्येक कार्यक्रम की गुणवत्ता से निम्नलिखित मानकों के द्वारा है :

- शिक्षा
- पाठ्यचर्या

- शिक्षार्थी
- संकायों की गुणवत्ता
- सुविधाओं की गुणवत्ता
- प्रशासन
- वित्त

उपरोक्त विधियों का अनुसरण निःसंदेह गुणवत्ता सुनिश्चयन की लघु और वृहत् दोनों स्तरों पर सहायता करेगा। तथापि, इस प्रक्रिया को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के अंतर्गत अथवा बाहर अथवा मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम पद्धति में वृहत् स्तर पर गुणवत्ता माँगों अथवा सभी सम्बन्धित की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए गति देने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) i) उच्च अधिगम के संस्थानों में गुणवत्ता सुनिश्चयन की कौन सी विधियाँ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) सांस्थानिक प्रत्यायन और कार्यक्रम प्रत्यायन के ध्यान केन्द्रित करने वाले क्षेत्र कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

14.2.5 चुनौतियाँ

यदि हम उपरोक्त उपभागों यानी 14.2.1, 14.2.2, 14.2.3 और 14.2.4 को साकल्यवादी रूप में देखें तो हम उच्च शिक्षा संस्थानों में सामान्य रूप से और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में विशेष रूप से गुणवत्ता सुनिश्चयन की मुख्य चुनौतियों की पहचान कर सकते हैं। इनमें से कुछ पर यहाँ विशेष बल दिया गया है :

1) यहाँ पर यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जिन कार्मिकों का प्रयोग परम्परागत विश्वविद्यालयों/संस्थानों के नियमित कार्यक्रमों के लिए किया जा रहा है, उन्हीं का प्रयोग विभिन्न स्तरों पर मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम क्रियाओं में भी किया जाता है। अतः मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम की सफलता के लिए वे मान्य कारक हैं। साथ ही साथ मुक्त

एवं दूरस्थ अधिगम पद्धति के सहभागी के रूप में परंपरागत विश्वविद्यालय/संस्थान अपने शिक्षार्थियों एवं संस्थानों के लाभ के लिए वे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकियों और मानव संसाधन पूँजी का भी प्रयोग कर रहे हैं। अतः वहाँ उनकी गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रयत्नों के लिए आपसी योगदान और सहजीवी सम्बन्ध है।

2) विभिन्न अध्ययन विद्यापीठों के अंतर्गत विभिन्न संकायों में विभिन्न कार्यक्रमों के निष्पादन की गुणवत्ता सुनिश्चयन आंतरिक लेखा परीक्षा और आंतरिक मूल्यांकन द्वारा निष्पक्ष और समान रूप से नहीं लिया जा सकता है क्योंकि संकाय और अन्य कर्मचारियों की नैतिकता और मानकों की कमी है।

3) प्रक्रियाओं में बारम्बार होने वाले परिवर्तन, शैक्षणिक पहुँच का अधिक फैलाव, कार्यक्रमों का तेजी से प्रारंभ होना और संशोधन के कारण गुणवत्ता ह्रास, अपर्याप्त संकाय और अन्य कर्मचारियों के बिना उपयुक्त संसाधन सहयोग के पहले से ही तनाव में हैं पर अधिक तनाव होना यह सभी गुणवत्ता सुनिश्चयन के लिए मुख्य चुनौती बनते हैं।

4) उच्च अधिकारियों जैसे आगन्तुकों, कुलपतियों और वैधानिक निकायों की कार्य प्रणाली उद्देश्य और निष्पक्ष गुणवत्ता सुनिश्चयन तंत्र/प्रक्रियाओं के अधीन नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त, पहले से ही घटिया या ह्रासकारी गुणवत्ता संस्कृति और गुणवत्ता प्रबंधन पर लम्बे समय तक नेतृत्व उत्तराधिकार के प्रतिकूल प्रभाव जैसे मुद्दे सांस्थानिक स्तर पर गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रयत्नों के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत करते हैं।

5) नेतृत्व उत्तराधिकार और संक्रमण का परिचय कभी-कभी संस्था के अंतर्गत "गुणवत्ता संस्कृतियों" के विवाद पैदा करता है। जिस से नेतृत्व के प्रभावी निहित स्वार्थ के द्वारा लागू और जारी रखते हुए "असंगत निम्न संस्कृति'' संस्था के भीतर स्थापित होती है। इस प्रकार की स्थितियाँ संस्थान/पद्धति में गुणवत्ता सुनिश्चयन के लिए गुणवत्ता संस्कृति को पुनर्स्थापित करने के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण होती हैं।

6) गुणवत्ता संस्कृति स्थापित करना सतत् चुनौती है। यह तब अधिक होती है जब अनेक नए कर्मचारीगणों का आगमन होता है और नए व पुराने कर्मचारियो ंके बीच सांस्कृतिक विवाद होता है।

7) स्टॉफ के साथ नेतृत्व की सम्प्रेषण की समस्याएँ और विश्वविद्यालय/संस्था की निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्टॉफ की आत्मविश्वास को बनाने और कायम रखने में असफलता के दौरान स्टॉफ में मनोबल को कम करती हैं। गुणवत्ता सुनिश्चयन उपक्रमणों पहलुओं के लिए चिन्ताओं की कमी की ओर अग्रसर होती है।

8) बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा, जनसांख्यिकी और निम्न गुणवत्ता वाले शिक्षार्थी, बड़ी तादाद और संकाय के मामले में संस्थाओं के अंतर्गत और आरपार के शिक्षार्थियों के दस्ते गुणवत्ता सुनिश्चयन की मौजूद चुनौतियों की जटिलता और प्रकृति को बढ़ाते हैं।

9) सार्वजनिक और निजी संस्थाओं को प्रायः या चयनात्मक रूप से अथवा व्यवस्था के अंतर्गत बहुगुणवत्ता संस्कृतियों सहित बहुगुणवत्ता वाली संस्थाओं को तैयार करते हुए गुणवत्ता सुनिश्चयन की विभिन्न पद्धतियों के अधीन की जाती हैं। यह प्रत्यायन के स्तर पर गुनवत्ता सुनिश्चयन के लिए बहुत गंभीर चुनौती है।

10) मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम द्वारा मुकाबला की जा रही अन्य चुनौतियों में वे दृढ़ताएँ हैं जो निम्नलिखित शासनों के बदलते नेतृत्व के द्वारा होती हैं:

- संस्था की गुणवत्ता सम्बन्धी धारणा;
- गुणवत्ता प्रबंधन के लक्ष्य, उद्देश्य और अपेक्षित परिणाम;
- गुणवत्ता प्रबंधन के लिए ढाँचा, संसाधन उत्पादन सहित; और
- रणनीतिक योजना और परिणामों के क्रियान्वयन की निगरानी रखने और मूल्यांकन के लिए ढाँचा।

11) गुणवत्ता सुनिश्चयन से सम्बन्धित अनेक विकास देखें गए हैं, मुख्य रूप से शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकियों (आई.सी.टी.) के हस्तक्षेप के माध्यम से, जैसे परम्परागत विश्वविद्यालयों के साथ मुक्त अधिगम प्रणाली की नेटवर्किंग, अन्तःसंस्थागत और अन्तर संस्थागत स्तरों पर अंतःविषयक अंतःक्रियाएँ, वैश्विक स्तर पर संस्थाओं की नेटवर्किंग, आँकड़ों पर आधारित उच्च शिक्षा का प्रबंधन, अपने वित्तीय प्रबंधन में स्व-वित्त पोषण को शामिल करके संस्थाओं के अभिविन्यास में परिवर्तन और राष्ट्रीय स्तर पर नियामक निकायों के बार-बार परिवर्तन हो रहा वैधानिक ढाँचे के साथ उच्च शैक्षिक संस्थाओं के आँकलन एवं प्रत्यायन, चुनौतियों के नए आयामों को जोड़ते हैं।

12) बहुत से पणधारी हैं जिनके शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चयन के सरोकार और अपेक्षाएँ बहुत भिन्न हैं। विविध पणधारियों की गुणवत्ता माँगों की पूर्ति मानकों की एक श्रेणी के समायोजन को अनिवार्य बना देती है और गुणवत्ता सरोकारों को सम्बोधित करने के विविध उपायों की आवश्यकता होती है।

एक साथ में सभी चुनौतियाँ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के मुद्दों को पेंचीदा बना देती हैं और इस प्रकार कार्यक्रम मूल्यांकन में नए सरोकारों को जोड़ती हैं जिन्हें सभी स्तरों पर गंभीरतापूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

14.3 कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकार

गुणवत्ता सुनिश्चयन और कार्यक्रम मूल्यांकन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में सतत् गुणवत्ता सुधार प्रयत्न जैसे अनिवार्य अंग बनाते हैं। अतः इस अनुभाग में हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकारों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

हम जानते हैं कि किसी भी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए, उस संस्था (उसके ढाँचे और कार्यों) जिसमें कार्यक्रम को विकसित और कार्यान्वित किया गया है और कार्यक्रम के संचालन के वास्तविक क्षेत्र के बारे में जानना आवश्यक है। यदि एक बार यह कर लिया गया तो आगे कार्यक्रम मूल्यांकन के उद्देश्यों के मूल्यांकन के लिए योजना बनाना आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन शैक्षणिक कार्यक्रम के विविध पहलुओं और मूल्यांकन प्रतिमान के स्वरूपन और क्रियाशील करने में निहित प्रक्रियाओं पर ध्यान देता है।

दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन नियत कार्यों (अनुशिक्षा-अंकित और संगणक-अंकित), परियोजनाओं, प्रयोगशाला प्रयोगों, हैन्ड्स-ऑन टेस्ट्स, प्रस्तुतीकरण और प्रदर्शनों, सत्रांत परीक्षा और इसी प्रकार अन्य पर आधारित शिक्षार्थी उपलब्धि के सतत (रचनात्मक) और सत्रांत (संकलनात्मक) मूल्यांकन की ओर संकेत करता है। इन मूल्यांकन स्थितियों में प्राप्त किए गए अंक या ग्रेड कुल अंक देने के लिए और/अथवा शिक्षार्थियों के निष्पादन के लिए

अंक संचित किए जाते हैं जिसके आधार पर प्रमाणपत्र या डिग्री प्रदान की जाती है। जैसा कि आप जानते हैं, उदाहरण के लिए, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में सतत् अंतरालों पर नियत कार्यों में प्राप्त ग्रेडों/अंकों और सत्रांत परीक्षा में प्राप्त ग्रेडों/अंकों को कुल ग्रेड या अंक का हिसाब लगाने के लिए दोनों को मिला दिया जाता है। जबकि विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए सतत् मूल्यांकन (नियत कार्य के माध्यम से) के लिए 25–30 प्रतिशत अधिभार दिया जाता है, सत्रांत परीक्षा के लिए 70–75 प्रतिशत अधिभार दिया जाता है। ए (उत्तम) से ई (असंतोषजनक) ग्रेडों वाली पंच बिन्दु मापनी पर शिक्षार्थी को किसी पाठ्यक्रम के किसी नियत कार्य अथवा सत्रांत परीक्षा में कम से कम डी (संतोषजनक) ग्रेड प्राप्त करना अनिवार्य है, किन्तु पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम में कुल मिलाकर कम से कम सी (अच्छा) ग्रेड पाना अनिवार्य है। इस प्रकार का "मूल्यांकन" शिक्षार्थी के केवल निष्पादन के मूल्यांकन और ग्रेड देने से ही सम्बन्धित है। निःसंदेह, मूल्यांकन प्रतिमान या पद्धति संस्था से संस्था और संस्था के अंतर्गत कार्यक्रम से कार्यक्रम से भिन्न हो सकते हैं जो कि किसी शैक्षणिक कार्यक्रम और साथ ही साथ मूल्यांकन प्रतिमान की रूपरेखा तैयार करने और उसके संचालन में निहित प्रक्रियाओं के मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की प्रकृति कैसी है पर निर्भर करते हैं। हम इन सबकी चर्चा आगामी अनुभागों में करेंगे। उससे पहले यहाँ इस अनुभाग में हम शैक्षिक मूल्यांकन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन की थोड़ी और चर्चा करते हैं।

एक प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन में शामिल हैं परीक्षण एवं मापन के कार्य, और इसके अतिरिक्त शैक्षिक निवेशों, प्रक्रियाओं और उत्पादों के बारे में गुणात्मक राय बनाना भी शामिल हैं। परीक्षण और मापन की तुलना में मूल्यांकन एक व्यापक संकल्पना है और इसमें शामिल हैं विविध कार्य, प्रयोजन और प्रक्रियाएँ। यह विचारणीय होना चाहिए कि अधिगम के प्रभावों (और इसे सुधारने), उठाए गए कदमों की प्रभावित और कौशल, अन्य लोगों के परिप्रेक्ष्य और इसी प्रकार अन्य को पता लगाना चाहिए। यहाँ पर हम थार्पे (1988) द्वारा दी गई मूल्यांकन की परिभाषा पर ध्यान देंगे जो कि दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए बेहतर हैं: "मूल्यांकन शिक्षा अथवा प्रशिक्षण कार्यक्रम के किसी पहलू के बारे में सूचना की संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या करने की एक मान्य प्रक्रिया के अंग के रूप में, इसकी प्रभावकारिता की जाँच इसके कौशल और कोई अन्य परिणाम जो इसमें हो, को न्याय करता है।"

यदि आप मूल्यांकन की इस परिभाषा का विश्लेषण करें तो निम्नलिखित विशेषता निकाल सकते हैं:

i) परीक्षण अथवा मापन में क्या संभव है इसकी तुलना में मूल्यांकन में तमाम प्रकार की क्रियाएँ शामिल हैं। कार्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, पाठ्यक्रम और उसकी प्रभावकारिता की जाँच के अलावा, हर किसी की निगरानी पहलुओं, कार्यक्रमों की योजना और प्रबंधन की प्रभावकारिता के पहलुओं, अधिगम और अधिगमकर्त्ता सहयोग और संपूर्ण कार्यक्रम स्वरूपण की पद्धति, विकास और कार्यान्वयन की जाँच को अवश्य देखना चाहिए। मूल्यांकन एक-कालिक क्रिया है और यह अंतरालों पर की जाती है, जबकि निगरानी सतत् एवं प्रायोगिक क्रिया है जो किसी पद्धति के विविध चरणों पर की जाती है।

ii) मूल्यांकन, आँकलन से इस अर्थ में अलग किया जाता है कि परवर्ती का सम्बन्ध अधिगम (सतत् एवं सत्रांत) के विविध चरणों में शिक्षार्थी की उपलब्धि के मूल्य निर्धारण से हैं। मूल्य निर्धारक अंक मूल्यांकन को सहज बनाते हैं हालाँकि अतिरिक्त सूचना और व्याख्याएँ मान्य निर्णय बनाने की आवश्यकता के लिए हैं।

iii) मूल्यांकन अभ्यास, किसी अनुसंधान अभ्यास की तरह, आँकड़ों को संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या से सम्बन्धित हैं।

iv) मूल्यांकन में सुविचारित और नियोजित क्रियाएँ निहित हैं। कार्यक्रमों की निगरानी, परिचर्चाएँ, निर्णय और उठाए गए कदमों से सम्बन्धित कुछ नित्य प्रति की क्रियाएँ, मूल्यांकन व्यवहार का हिस्सा हो सकती है, इस शर्त पर कि वे सुविचारित रूप से अभ्यास की कार्य योजना में शामिल की गई हो; इसलिए उन्हें समय-समय पर रिकार्ड करने की आवश्यकता है। यह सामान्यतया बहुत से संदर्भ में नहीं घटित होता योजना की कमी के कारण। जैसा कि उपभाग 14.3.2 में देखा जा सकता है, मूल्यांकन अभ्यासों को सहयोगी और पारदर्षी बनाने की आवश्यकता है ताकि मूल्यांकन के परिणामों की प्रयोज्यता को सुनिश्चित किया जा सके।

v) साथ ही साथ मूल्यांकन को व्यापक रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। कुछ मूल्यांकन अभ्यास समय की आवश्यकता के अनुसार केवल क्रिया के एक हिस्से पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं, जबकि अन्य वह सभी कुछ कर सकते हैं जोकि कार्यक्रम में शामिल है। इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन अभ्यास कथित अथवा प्रत्यक्ष कार्यक्रम लक्ष्यों के आगे भी जा सकता है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से क्या निर्दिष्ट नहीं किया गया है परंतु कार्यक्रम के अंतर्गत बहुत अधिक गहराई में है को शामिल करने के लिए।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन किसी अध्ययन के कार्यक्रम अथवा शिक्षा या प्रशिक्षण के कार्यक्रम की ओर संकेत करता है जो कि क्रेडिट आधारित अथवा नान-क्रेडिट आधारित (डिग्री-अभिमुख अथवा किसी प्रमाणपत्र/डिग्री को लक्ष्य किए बिना होना) हो सकता है। कार्यक्रम की नियमित अंतरालों पर सतत् "निगरानी" हो सकती है, लेकिन कार्यक्रम मूल्यांकन अनिवार्य रूप से किसी विशिष्ट कार्यक्रम के परिणाम अथवा प्रभावकारिता से सम्बन्ध होता है जो कि पहले से ही एक निर्धारित अवधि के लिए किसी स्थान में होता है और पूर्व प्रभावी परिणाम कार्यक्रम से सम्बन्धित होता है।

कार्यक्रम मूल्यांकन प्रक्रिया/अभ्यास का सम्बन्ध शैक्षणिक (शिक्षाशास्त्रीय), प्रबंधकीय, वित्तीय, गुणवत्ता और उत्तरदायित्व के पहलुओं (जिसकी जाँच हम उपभाग 14.3.4 में करेंगे) से है। कार्यक्रम कुछ पाठ्यक्रमों अथवा उसके समूह में समाविष्ट होता है और इसमें शामिल हैं पाठ्यक्रम की स्वरूपण, विकास, उत्पादन और वितरण, शिक्षार्थी अधिगम सहयोग, आँकलन एवं मूल्यांकन, समय और धन। इन सभी और अन्य सम्बन्धित पहलुओं को वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से कार्यक्रम मूल्यांकन में ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है जो कि एक नियोजित अभ्यास हैं। योजना में इस बात का संकेत अवश्य होना चाहिए कि मूल्यांकन क्यों किया जाए, किन पहलुओं का किया जाए, मूल्यांकन की प्रक्रिया में कौन शामिल होगा, मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग कौन करेगा, कौन से परिप्रेक्ष्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए और वे कौन से मॉडल/सिद्धान्त हैं जो मूल्यांकन व्यवहार का मार्गदर्शन करे। इस स्तर पर, आप एक विशेष प्रकार के दूरस्थ शिक्षण संस्थान को कार्यक्रम मूल्यांकन के स्पष्ट संप्रत्ययीकरण के लिए ध्यान में रख सकते हैं।

14.3.1 मूल्यांकन क्यों?

शैक्षणिक कार्यक्रम के मूल्यांकन करने का निर्णय तब लिया जाता है जब यह महसूस किया जाता है कि कार्यक्रम कैसे किया जा रहा है, के बारे में कुछ और अधिक जानना चाहिए – शिक्षार्थी कार्यक्रम से कैसे सीख रहे हैं; वे कौन सी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं; उन्हें

किस प्रकार और किस स्तर की सहयोगी सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं; क्या सतत् और सत्रांत मूल्यांकन के ढाँचे में कोई परिवर्तन करने की आवश्यकता है; कितना धन खर्च किया जा चुका है; अधिक मितव्ययी कैसे होया जाए, और सबसे बढ़कर, क्या कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा कर दिया गया है और क्या लक्ष्यों की प्राप्ति हो चुकी है। कोई फिर भी दृढ़ाग्रह और शिक्षार्थियों की ड्राप-आउट दर, स्व-निर्देशन पाठ्यक्रम संकुलों की गुणवत्ता और प्रभावकारिता, परामर्श और शिक्षार्थी अंतःक्रिया की प्रकृति, टेलीकांफेरंसिंग और दुतरफा अंतःक्रिया की प्रकृति, नियत कार्यों का मूल्यांकन, ग्रेडिंग, बदलाव का समय और इसी तरह अन्य की जाँच के लिए और गहराई में जा सकता है। संक्षेप में, कार्यक्रम विकास और कार्यान्वयन के सभी पहलुओं का अध्ययन किया जा सकता है, जो संस्था की प्राथमिकताएँ पर निर्भर हैं?

मूल्यांकन अभ्यासों प्रत्यक्ष आँकड़े और सूचना (अथवा प्रतिपुष्टि) प्राप्त करने के लिए किया जाता है ताकि निर्णय लिए जाए; पाठ्यक्रम की योजना बदली जाए और दूरस्थ शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया के किसी पहलू पर सुधार किया जाए। दूरस्थ शिक्षा के अनेक व्यवसायी अथवा अधिकारी इस प्रक्रिया में शामिल हैं। इनमें शामिल हैं – योजना एवं प्रबंधन निकायों के सदस्य, कार्यक्रम सलाहकार और विशेषज्ञ सदस्य, कार्यक्रम सलाहाकर और विशेषज्ञ सदस्य, पाठ्यक्रम लेखक और सम्पादक, मीडिया उत्पादक, परामर्शदाता, मूल्यांकनकर्त्ता, सामग्री उत्पादक और वितरक, प्रशिक्षक, प्रत्यायन अभिकरणों के सदस्य, संकाय और कार्यक्रम संचालन के लिए जिम्मेदार लोग, और सबसे बढ़कर शिक्षार्थी और अन्य पणधारी (अभिभावक, नियोक्ता, सरकार और जनता)। वे सभी यह जानना चाहेंगे कि कार्यक्रम कैसे चल रहा है और वे कौन से सुधार अपेक्षित हैं ताकि आगे कार्यक्रम की प्रभावकारिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कभी-कभी, किसी कार्यक्रम या पाठ्यक्रम का संशोधन किया जाता है जब कार्यक्रम मूल्यांकन का कार्य पूर्ण हो जाता है क्योंकि मूल्यांकन के परिणाम कार्यक्रम को पूर्ण रूप से संशोधित करने के लिए कार्यक्रम अथवा मूल्यांकन समन्वयक को पर्याप्त प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। प्रतिपुष्टि वैकल्पिक पाठ्यक्रम स्वरूपण और विकास-प्रतिमान (मॉडल), सामग्रियों और विभिन्न प्रकार के मीडिया को नए तरीके से प्रस्तुत करने, ढाँचे में परिवर्तन और परामर्श सत्रों के प्रस्तुतीकरण, वैकल्पिक आंकलन और मूल्यांकन प्रणाली और प्रक्रियाओं गुणवत्ता पद्धतियों और कार्य विधियों, योजना और प्रबंधन की नई तकनीकों, नए प्रशिक्षण मॉडल और विधियों, और इसी तरह अन्य को आगे बढ़ा सकती है। हालाँकि, मूल्यांकन अभ्यास और परिणामों का क्रियान्वयन सहयोगी कार्य हैं जिन्हें इस तरह से किया जाना चाहिए जो सम्बद्ध टीम के रूप में उन सभी की भागीदारी/सरोकार को सुनिश्चित करते हैं जो कि कार्यक्रम और सुझावात्मक उपायों से संबद्ध हैं। इस प्रक्रिया में, वैयक्तिक जवाबदेही भी सुनिश्चित की जाती है।

14.3.2 मूल्यांकन कैसे सुगम्य किया जाए?

मूल्यांकन को देखने का एक महत्वपूर्ण तरीका है मूल्यांकन के प्रयोजन पर ध्यान केन्द्रित करना। इस दृष्टि से, हम किसी भी मूल्यांकन अभ्यास को दो उपागमों में श्रेणीबद्ध कर सकते हैंः रचनात्मक-संकलनात्मक और निवेश-उत्पादन उपागम।

"रचनात्मक मूल्यांकन" समय-समय पर इस उद्देश्य से किया जाता है कि कार्यक्रम को उसके विकास और क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों पर आगे सुधारा जा सके। इसका उद्देश्य हो सकता है कार्यक्रम का कुल सुधार और प्रभावकारिता, हालाँकि विस्तृत रूप से इस अभ्यास, कार्यक्रम के विविध घटकों पर किए जाते हैं, कार्यक्रम विशाल लक्ष्यों को ध्यान में

रखते हुए। दूरस्थ शिक्षा में रचनात्मक मूल्यांकन के कुछ उदाहरण हैं – निर्देशन सामग्रियों का परीक्षण, प्रवेश आँकड़ों और शिक्षार्थियों के अभिलेख के मिलान और प्रस्तुत करने की क्रियाविधि को संशोधित करना, परामर्श सत्रों की प्रभावकारिता को सुधारना, आदि।

"संकलनात्मक मूल्यांकन" का सम्बन्ध कार्यक्रम लक्ष्यों और उद्देश्यों के सापेक्ष विस्तृत परिप्रेक्ष्य के कार्यक्रम की संपूर्ण प्रभावकारिता से है। शिक्षार्थियों के अधिगम के लिए सामान्य क्रियाविधि सत्रांत परीक्षा रही है जो सतत् मूल्यांकन के परिणामों सहित, संपूर्ण ग्रेडिंग अथवा अंकन और प्रमाणपत्रों/डिग्रियाँ प्रदान करने में अग्रसर रहती है। इस प्रकार का मूल्यांकन तरह-तरह के उपागमों अथवा उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के साधनों की प्रभावकारिता को आँकने का भी विस्तार करता है और विस्तृत रूप से इसका सम्बन्ध प्रभावकारिता और निपुणता से है। किसी भी प्रकार की परियोजना अथवा कार्यक्रम के लिए, बड़े प्रश्न कीमत, उत्पाद अथवा उपलब्धियों, खर्च किए गए समय, भविष्य के लिए सावधानियों और परियोजना अथवा कार्यक्रम में से उभरते किसी मॉडल अथवा क्रियाविधि से सम्बन्धित होते हैं।

थॉर्प (1988) सुझाव देते हैं कि रचनात्मक मूल्यांकन, कार्यक्रम के दौरान, "हम कैसे कर रहे हैं"? और "हम आगे कैसे कर रहे होंगे"? जैसे प्रश्नों के प्रोत्साहन और उत्तर को मूल्यांकित करने के लिए किया जाता है। संकलनात्मक मूल्यांकन का सम्बन्ध कार्यक्रम की प्रभावकारिता और "क्या उद्देश्यों को प्राप्त किया गया"? "क्या यह करने लायक था"? और "क्या यह जारी रखने लायक है"? जैसे प्रश्नों के उत्तर से है। थॉर्प (1988) ने रचनात्मक और संकलनात्मक मूल्यांकन में निम्नलिखित अन्तर पर ध्यान दिया :

तालिका 14.1: रचनात्मक और संकलनात्मक मूल्यांकन में तुलना

क्र. सं.	रचनात्मक मूल्यांकन	संकलनात्मक मूल्यांकन
1.	कार्यक्रम के दौरान होता है।	कार्यक्रम के अन्त में होता है।
2.	व्यवसायियों द्वारा स्वयं संचालित किया जाता है; एक प्रकार का स्व-मूल्यांकन है।	कार्यक्रम अथवा पद्धति के बाहर से विशेषज्ञों द्वारा संचालित किया जाता है।
3.	यह सामान्यतया निम्न मूल्य वाला मामला है।	यह खर्चीला है; अतः इसके लिए अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता होती है।
4.	यह सामान्यतया लघु स्तर का मामला है (हालाँकि वर्णनात्मक है, प्रायः प्रयोग की गई सांख्यिकी पर आधारित है।)	यह सामान्यतया वृहद स्तर का मामला है; इसमें सर्वेक्षणों और प्रतिदर्ष और विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय रूप से आधारित विधियों का प्रयोग होता है।
5.	परिणाम स्थानीय रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।	परिणाम राष्ट्रीय रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।
6.	मूल्यांकन अभ्यास निर्णय लेने और संगठन के संचालन की बाधाओं के द्वारा संचालित किया जाता है।	मूल्यांकन अभ्यास चुने गए प्रारूप और प्रविधि नियंत्रण द्वारा किया जाता है।
7.	दत्तों के स्रोत सामान्यतया निष्पादन संकेतकों पर निगरानी अभ्यास है।	दत्तों के स्रोत विविध हैं जिनका उद्देश्य दीर्घ-कालिक कार्यक्रम के प्रभावों को उद्घादित करने के लिए दत्त संग्रह करना है।

अधिकतर रचनात्मक मूल्यांकन प्रकृति में विकासात्मक है; अर्थात् प्रक्रिया या उत्पाद को और परिष्कृत करने का है। प्रायः भ्रांति है कि रचनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के विकास के विविध चरणों पर किया जाता है, और संकलनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के अंत में किया जाता है। इस भ्रांति के विपरीत, संकलनात्मक मूल्यांकन ("बाजार परीक्षण" जैसे) विकास स्तर पर किया जा सकता है जिसके लिए रचनात्मक मूल्यांकन "विकासात्मक परीक्षण" की ओर संकेत करेगा।

जहाँ रचनात्मक–संकलनात्मक मूल्यांकन का सम्बन्ध मूल्यांकन के प्रयोजन से है; वहीं निवेश-उत्पादन (इनपुट-आउटपुट), उपागम मूल्यांकन व्यवहार को कार्यान्वित करने के लिए अपनाई गई विधियों/प्रतिमानों पर आधारित है। इनपुट-आउटपुट उपागम के अंतर्गत हम पूर्व-परीक्षण-पश्च-परीक्षण प्रतिमानों और मूल्यांकन के संदर्भ-इनपुट-प्रक्रिया-उत्पाद प्रतिमान को स्वीकार कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रायोगिक विधि में पूर्व-परीक्षण कार्यक्रम शुरु होने से पहले किया जाता है, और पश्च-परीक्षण कार्यक्रम के अंत में किया जाता है, और अन्तर को कार्यक्रम की प्रभावकारिता के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता है। सामान्यतया, पूर्व-परीक्षण-पश्च-परीक्षण मॉडल का प्रयोग आश्रित चर (चरों) पर विभिन्न स्वतंत्र चरों के प्रभावों के बीच अंतरों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यह, हस्तक्षेप किए जाने वाले चरों के नियंत्रण के बाद (या तो उनके प्रभाव को प्रयोग के संचालित करने के स्तर पर विलुप्त करके अथवा दत्त विश्लेषण के स्तर पर उनके प्रभावों को आंषिक करके) किया जाता है। हालाँकि, इस विधि की अपनी सीमाएँ हैं, अतः उनके लिए कम आकर्षक है जो अध्ययन के अंतर्गत चर की संपूर्णता से पता लगाने के इच्छुक हैं और किस प्रकार (का) संदर्भ (उदाहरण के लिए अधिगम) चर (अर्थात् उदाहरण के लिए शिक्षार्थी उपलब्धि) से सम्बन्धित है। "प्रबोधक मूल्यांकन" दूसरी श्रेणी है (इनपुट-आउटपुट मॉडल के अंतर्गत) जो उन प्रक्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करती है जिनके माध्यम से और जिन संदर्भों में शिक्षार्थी शैक्षणिक क्रिया द्वारा जाता है। प्रक्रियाओं, समस्याओं, मुद्दे और प्रभावकारिता का अध्ययन करने के लिए विधियों का संयोजन जिसमें साक्षात्कार, प्रेक्षण, दस्तावेज विश्लेषण, प्रश्नावलियों और अन्य जो मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा स्पष्ट करने और तदनुसार सार्थक परिणाम निकालने के लिए प्रयोग किया जाता है।

"संदर्भ-निवेश-प्रक्रिया-उत्पाद" (सी.आई.पी.पी.) उपागम ऐसे संदर्भ पर विचार करता है जिसमें परियोजना अथवा अधिगम हो रहा हो, जिसका अध्ययन सर्वेक्षण और उद्बोधन विधियों द्वारा किया जा सकता है। संदर्भ में शामिल हैं ऐसे क्षेत्र जैसे कि परियोजना के लिए आवश्यकता, इसके उद्देश्य और कार्यक्रम के पूर्व-निर्धारित परिणाम। निवेश में शामिल हो सकती हैं : सामग्रियाँ, समय, धन और कार्यक्रम में निवेश किए गए मानव संसाधन और कार्यक्रम रणनीतियाँ भी। प्रक्रिया का मूल्यांकन करने के लिए हर किसी को यह देखना होता है कि कार्यविधियों और रणनीतियों को किस प्रकार कार्यान्वित किया गया था; और उत्पाद का मूल्यांकन कार्यक्रम की संपूर्ण सफलता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए व्यापक एवं संकलनात्मक हो सकता है। इस प्रकार के मूल्यांकन अभ्यास में सार्थक परिणाम निकालने के लिए व्यापक और समेकित ढाँचे के अंतर्गत सभी पहलुओं पर विचार किया जाता है।

14.3.3 किसके लिए मूल्यांकन किया जाए?

बहुत बड़ी तादाद में लोगों को शिक्षा प्रदान करने के लिए कार्य करने वाले दल के साथ दूरस्थ शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम के औद्योगिक रूप को शामिल करती है। अतः यह अत्यावश्यक है कि वे सभी दल के सदस्य, एक तरह से या दूसरे रूप में, कार्यक्रम

मूल्यांकन – अभ्यास से संबद्ध हैं। मूल्यांकन व्यवहार से सम्बन्धित तीन विस्तृत श्रेणी के लोग हैं : प्रबंधक, व्यवसायी और शिक्षार्थी।

नियोजन और प्रबंधन में जो लोग शामिल हैं (संस्था प्रमुख, सरकार और कोई अन्य निधीयन अभिकरण), वे लोगों, प्रक्रियाओं और उत्पादों (उपभाग 14.3.4 में और अधिक) के उत्तरदायित्व में अधिक रूचि रखते हैं। इसमें शामिल किया जा सकता है : कार्यक्रम को विकसित/प्रस्तुत करने के लिए कितना समय और धन खर्च किया गया है? क्या सामग्रियाँ समय पर शिक्षार्थियों के पास पहुँच गईं? क्या परामर्श और परीक्षा ठीक तरह से समय पर हो चुकी है? शिक्षार्थियों के कार्यक्रम पूर्ण करने की दर क्या है? स्नातक जॉब मार्केट या स्व-नियोजन में कैसे कर रहे हैं? इन पहलुओं का मूल्यांकन प्रबंधकों और नीति निर्माताओं के लिए समीचीन है।

व्यवसायियों का इनसे बहुत सरोकार है और वे कार्यक्रम नियोजन, प्रारूप निर्माण, विकास, क्रियान्वयन और मूल्यांकन के सूक्ष्म विवरण में रूचि रखते हैं। वे विविध समूह हैं जो कि निश्चित कार्य संरचना और उत्तरदायित्वों के साथ विविध स्तरों और विविध रूपों में संस्था में स्थान प्राप्त करते हैं। चूँकि मूल्यांकन निष्पादन समीक्षा और गुणवत्ता नियंत्रण भी चाहता है, इसलिए वे व्यवसायियों द्वारा अधिक गंभीरता से लिए जाते हैं। मूल्यांकन अभ्यास विविध व्यवसायियों को प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रम में शामिल होते हैं : शिक्षा बोर्ड/विद्यालय परिषद्/योजना बोर्ड/शैक्षणिक परिषद् के सदस्य, कार्यक्रम और पाठ्यक्रम समन्वयकों, पाठ्यक्रम लेखकों, पाठ्यक्रम सम्पादकों, निर्देशन अभिकल्पकों/ शैक्षिक विकासकों, भाषा सम्पादकों, अनुवादकों, मीडिया प्रोड्यूसरों, ग्राफिक कलाकारों, प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्त्ताओं, शिक्षार्थी प्रवेश-प्रभारियों, सामग्री निर्माण और वितरण के लिए जिम्मेदारी व्यक्तियों, क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्र अधिकारियों, परामर्शदाताओं और मूल्यांकनकर्त्ताओं, सलाहकारों और परियोजना निर्देशकों, परीक्षा कार्मिकों और इसी तरह अन्य लोगों को। कार्यक्रम की संपूर्ण प्रभावकारिता के अतिरिक्त, उनका सम्बन्ध उनके द्वारा रखने वाले उन क्षेत्रों और कार्यों से अधिक सरोकार है, और वे अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों से सम्बन्धित कार्यक्रम मूल्यांकन उपलब्धियों से जाँच करना चाहेंगे और आगे सुधार करेंगे ताकि गुणात्मक शिक्षार्थी अधिगम के लिए प्रभावी और गुणात्मक प्रक्रिया सुनिश्चित कर सकें। यह उपागम दायित्व परिप्रेक्ष्य से आगे प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य की ओर जाता है जहाँ पर किसी का सम्बन्ध स्व-मूल्यांकन और पद्धति के संचालन की प्रक्रिया और उप-पद्धतियों से इस इरादे से है कि उन्हें समय-समय पर सुधारा जाए। अतः यह अभ्यास प्रकृति में विकासात्मक है और इसमें वैयक्तिक व सामूहिक दायित्व शामिल है। लेकिन, वहाँ एक खतरा है कि मूल्यांकन परिणाम प्रबंधन के हाथों में सामान्य रूप से उपकरण हो सकते हैं, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की बजाय दायित्व, उत्पाद और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए। अतः जैसा कि हम उपभाग 14.3.4 में देखेंगे, अभ्यास या व्यवहार आवश्यक रूप से लोकतांत्रिक और सहयोगी होना चाहिए।

शिक्षार्थी दूरस्थ शिक्षण संस्थान (डी.टी.आई.) अथवा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान (ओ.डी.ई.आई.) में केन्द्रीय स्थान ग्रहण करते हैं क्योंकि संस्थान की स्थापना शिक्षार्थियों के हितों के द्वारा की जाती है और संस्थानों का अस्तित्व अथवा निरंतरता उन पर निर्भर करता है। अतः मूल्यांकन का मुख्य केंद्र शिक्षार्थी अथवा शिक्षार्थियों के हितों की सुरक्षा और उन्नयन के लिए होना चाहिए। शैक्षणिक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता वृहद् स्तर पर शिक्षार्थियों के हितों, नियोक्ताओं और जनता द्वारा कार्यक्रमों के स्वीकृति की मात्रा द्वारा निर्धारित की जाती है। कार्यक्रमों की गुणवत्ता, उनका वितरण, अभिगम्यता, शिक्षार्थियों का अवरोधन, निष्पादन

एवं सफलता दर, कार्य-परिदृश्य, आदि मूल्यांकन के अनिवार्य घटक होने चाहिए। तभी यह शिक्षार्थियों, अभिभावकों और नियोक्ताओं के लिए प्रासंगिक होगा।

14.3.4 क्या मूल्यांकन किया जाए? निवेश, प्रक्रिया और उत्पाद

बहुत से चर हैं जिस पर मूल्यांकन अभ्यास ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है। और प्रत्येक चर के अधीन, उप- या सूक्ष्म-चरों का समूह भी संचालित होता है जिसके अध्ययन करने की आवश्यकता है जब विशेष चर पर ध्यान-केन्द्रित अभ्यास किया जाता है। कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास की स्वरूपण करते समय, यह सुस्पष्ट रूप से ध्यान रखना चाहिए कि कोई किन पहलुओं का मूल्यांकन करना चाहता है ताकि प्रणाली विज्ञान (मूल्यांकन यंत्रों सहित) को आरंभ में ही निश्चित किया जा सके। क्या मूल्यांकन किया जाए और उसे/उनका मूल्यांकन करने के लिए कौन सी क्रियाविधि अपनाई जाए, मूल्यांकन परिप्रेक्ष्य और अपनाए जाने वाले उपागम पर निर्भर करता है (देखें उपभाग 14.3.2)। यदि हम प्रणाली परिप्रेक्ष्य से दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत विविध उप-प्रणालियों पर विचार करें तो दूरस्थ शिक्षण-अधिगम के लिए निम्नलिखित निवेश-प्रक्रिया-उत्पाद रूपरेखा उभरकर आती है (चित्र 14.2) (पंडा, 1990):

निवेश	प्रक्रिया	उत्पाद
• कार्यक्रम नियोजन • निवेश के रूप में उद्देश्य • कर्मचारीगण का विकास (सामग्री विकास, आंकलन एवं मूल्यांकन, अनुशिक्षण एवं परामर्श, प्रशासन एवं प्रबंधन, निगरानी)* • पाठ्यक्रम (मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, श्रव्य आदि)* • विद्यार्थियों • संस्थागत ढाँचा • समय • वित्तीयन और बजट प्रदान करना	• दुतरफा संप्रेषण • सामग्रियों के साथ शिक्षार्थियों की अन्तःक्रिया (अधिगम-शैली, रणनीति, गति आदि) • मूल्यांकन प्रक्रिया • शिक्षार्थी सहायक सेवा • समय प्रबंधन और निर्णय लेना	• शिक्षार्थियों की उपलब्धि (ग्रेड/अंक) और अन्य कौशल • विद्यार्थी संतुष्टि • कार्य बाजार के साथ शिक्षार्थियों की प्रासंगिकता; उनका नियोजन और उन्नयन • कर्मचारीगण का विकास और आगे के निवेश के रूप में अर्जित कौशलों का प्रयोग • आगे के निवेश के रूप में प्रणाली कार्य क्षमता • भविष्य के निवेश के रूप में सिम्स (एस.आई.एम.एस.) • उपप्रणालियों की प्रभावकारिता और दक्षता

टिप्पणी: * निवेश स्तर पर वे स्वयं प्रक्रियाओं के रूप में
** प्रक्रिया की हिस्सा भी

चित्र 14.2: दूरस्थ शिक्षण-अधिगम के प्रणाली परिप्रेक्ष्य

यदि हम निवेश-प्रक्रिया-उत्पाद में प्रत्येक घटक को और अधिक सूक्ष्म रूप से देखें तो हम उन्हें संपूर्ण व्यवस्था के साथ एक ही समय में काम करते हुए देख सकते हैं। निवेश के सम्बन्ध में चैकन (1987) और फीजले (1988) ने यह देखा है कि दूरस्थ शिक्षा में अधिकतर मूल्यांकन क्रियाएँ "पाठ्यक्रम" पर संकेन्द्रित होती हैं क्योंकि विश्लेषण की इकाई,

जिसमें विशिष्ट चरों में विद्यार्थियों (चैकन, 1987) और निर्देशनात्मक प्रक्रिया (फीजले, 1988) सम्मिलित हैं। चैकन ने दो आयामों का सुझाव दिया है – संरचनात्मक (विद्यार्थी, पाठ्यक्रम आदि) और प्रकार्यात्मक (पाठ्यचर्या विकास, निर्देशनात्मक प्रारूप, सहायक सेवाएँ, कर्मचारीगण का विकास आदि) – दूर शिक्षा में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन करते समय जिन पर विचार किया जाना चाहिए।

जब आप उपभाग 14.4.1 में उत्तरदायित्व और प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्यों पर आधारित प्रक्रिया ढाँचे को देखेंगे तो आप नीचे दी गई प्रक्रिया और उत्पाद चरों के परिप्रेक्ष्य को देखेंगे :

प्रक्रिया चर

ये चित्र 14.2 में दिखाई गई "प्रक्रिया" के बराबर नहीं हो सकते। इनमें शामिल हैं : प्रक्रिया, निवेश और साथ रखे गए उत्पाद के हिस्से (अर्थात् उपपद्धतियों का संचालन) जहाँ पर कि मूल्यांकनकर्त्ता मूल्यांकन अभ्यास के प्रत्येक स्तर पर लोकतांत्रिक-सहयोगी शैली में काम करता है। मूल्यांकन के कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रिया चर निम्नलिखित हैं :

- ज्ञानोत्पादन (सामान्य रूप में शिक्षण विधियों और अधिगम प्रक्रियाओं पर)
- पाठ्यचर्या विकास (प्रतिमान) और कार्यान्वयन।
- अनुदेशनात्मक स्वरूप और विकास; पाठ्यक्रम स्वरूप और प्रमापीय स्व-निर्देशनात्मक सामग्री अथवा मल्टीमीडिया सामग्रियों को स्वरूपण करना और विकास करना।
- सत्रीय कार्य, समीक्षा और ग्रेडिंग।
- सहयोग पद्धति और इसमें निहित लोगों का अनुभूति।
- विद्यार्थियों की विशेषताएँ (आयु, लिंग, निवास, जाति, शैक्षिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्तर, अध्ययन कौशल, भाषा प्रवीणता, पाठ्यक्रम अपेक्षाएँ, व्यवस्था के प्रति अभिवृत्ति, व्यावसायिक पृष्ठभूमि, खाली अध्ययन काल, अभिप्रेरणा का स्तर आदि)।
- शिक्षार्थियों द्वारा विद्यालय छोड़ना (ड्राप आउट)/विद्यालय से दूर होना (ड्राप डाउन) (पृष्ठभूमि विशेषताएँ, सामाजिक एकता, शैक्षणिक एकता, लक्ष्य वचनबद्धता, अनुदेशात्मक वचनबद्धता शैक्षणिक व सामाजिक समस्याएँ इत्यादि)।
- उप-पद्धति (पद्धतियाँ) कुशलता – लागत; प्रभावकारिता।
- विद्यार्थी प्रवेश और सम्बद्ध विद्यार्थी मामले।
- सामग्री उत्पादन और वितरण।
- मूल्यांकन पद्धति (परीक्षण, ग्रेडिंग/अंकन, सत्रीय कार्यों पर टिप्पणी, बदलाव का समय, मूल्यांकन का प्रबंधन आदि)।
- गुणात्मक आँकलन और गुणात्मक सुनिश्चयन।
- गुणवत्ता नियंत्रण और निर्णय लेने वाली उप-प्रणालियां, निर्णय लेने वाली प्रक्रिया और रचनातंत्रों का मूल्यांकन।
- संभार तंत्रीय पद्धति (कार्मिक, वित्त, स्थापना, प्रशासन, और कार्यक्रम विकास और वितरण के विविध स्तरों पर उनकी भूमिका)।
- समन्वयन पद्धति, खाद्य तौर से महत्वपूर्ण अनुदेशनात्मक पदाधिकारियों जैसे पाठ्यक्रम लेखकों, मीडिया उत्पादक, शैक्षिक षिल्पषास्त्रियों, शैक्षणिक परामर्शदाताओं, प्रश्नपत्र तैयारकर्त्ताओं, (प्रश्नपत्र) समीक्षकों, मूल्यांकनकर्त्ताओं आदि।

- कर्मचारीगण विकास की पद्धति – अभिविन्यास और प्रशिक्षण।
- कार्यक्रम के प्रति नियोक्ताओं का अवबोधन।

(यह ध्यान दिया जा सकता है कि पदाधिकारीगण आउटपुट से समान रूप से सम्बन्धित है, हालाँकि उनके जोर का दायित्व ज्यादातर प्रक्रियाओं पर होगा)।

उत्पाद चर

उत्पाद का वृहद् रूप से सम्बन्ध दायित्व परिप्रेक्ष्य सहित प्रणाली के संपूर्ण मूल्यांकन से है (जो सरकार, वित्तीयन अभिकरण, और जैसे) जहाँ पर मूल्यांकनकर्त्ता परियोजना के एक सलाहकार के रूप में कार्य करता है और संपूर्ण मूल्यांकन प्रक्रिया पर नियंत्रण रहता है। उत्पाद मूल्यांकन के लिए कुछ चर निम्नलिखित हैं :

- शैक्षिक अवसर की समानता – अभिगम्यता और न्यायपरस्त।
- विद्यार्थी की उत्तीर्णता – ग्रेडिंग और अंकन।
- आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के प्रति प्रासंगिकता।
- अन्य दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं और प्रणालियों परम्परागत अधिगम प्रणालियों सहित पर प्रभाव।
- संपूर्ण प्राभावकारिता – मूल्य प्रभावकारिता, मूल्य दक्षता।

अब हम कुछ प्रकार्यात्मक श्रेणियों या घटाकों का परीक्षण करते हैं जिसे कि कोई चरों की प्रत्येक श्रेणी में मूल्यांकन करना चाहेगा। यहाँ पर चयनित रूप से वर्णित चर हैं : कार्यक्रम और पाठ्यचर्या विकास, स्व-निर्देशन सामग्रियाँ, अनुशिक्षण और परामर्श।

कार्यक्रम और पाठ्यचर्या विकास

- अधिगम/प्रशिक्षा जरूरतों का मूल्यांकन की क्रियाविधि और उपयुक्तता।
- कार्यक्रम व्यवहार्यताः लक्ष्य समूह, विषयवस्तु क्षेत्रों की उपयुक्तता, वित्तीय व्यवहार्यता, कार्यक्रम को विकसित और प्रस्तुत करने के लिए विशेषज्ञों की उपलब्धता।
- पाठ्यक्रम/कार्यक्रम का ढाँचा।

स्व-निर्देशन सामग्रियाँ

- उद्देश्यों, विषयवस्तुओं और रणनीति की उपयुक्तता।
- मूल्यांकन रणनीति और छात्रों द्वारा सामना की जा रही कठिनाइयाँ।
- अद्यतन, आंशिक पुनर्निर्माण, संशोधन की आवश्यकता।
- सर्वाधिक और कम पसंद की जाने वाली इकाई (क्या और क्यों)
- विषयवस्तु की सघनता और कठिनाई-अधिक समय खपत करने वाला मूल पाठ और क्यों।
- अतिरिक्त सामग्रियों की आवश्यकता।
- विकासात्मक परीक्षण और उसके द्वारा किए गए परिवर्तन।
- मूल पाठ इकाइयों के प्रयोग करने के सोपान, कार्यक्रम मार्गदर्शक/पुस्तिका, पुस्तकों का सेट, अध्ययन मार्गदर्शक, स्व-निर्देशन सामग्रियाँ (Self-instructed materials - SIMs), क्रियाएँ, प्रसारण नोट्स, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण, गृह-

उपकरण (होम किट्स), संगणक प्रयोग, प्रयोगशाला प्रयोग, अनुशिक्षक टिप्पणियाँ और जैसे अन्य।

- प्रत्येक खण्ड/इकाई के लिए आवश्यक कार्य की मात्रा, और प्रत्येक कार्य के लिए लिया गया समय।
- इकाई/खण्ड के सर्वोत्तम और सबसे खराब पहलू।
- स्व-निर्देशन सामग्रियों पर अनुशिक्षक की टिपपणियाँ।
- वैकल्पिक विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण।
- नियत कार्यों पर विद्यार्थी का निष्पादन।
- क्षेत्र में अन्य सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के साथ सम्बन्ध।
- अभिगम्य युक्तियों की स्पष्टता और उपयुक्तता।

अनुशिक्षण एवं परामर्श

- अधिगम सामग्रियों तैयारी में अनुशिक्षक की सहभागिता।
- शैक्षिकीय प्रबंधन में अनुशिक्षक की सहभागिता, सत्रीय कार्यों का गठन करना, अभिलेखों को रखना, पाठ्यक्रमों और विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना/निगरानी रखना।
- दूरस्थ शिक्षण-अधिगम, विश्वविद्यालय डेटाबेस आदि की क्रियाविधि के प्रति अनुशिक्षक की जागरूकता।
- अनुशिक्षकों के सम्प्रेषण कौशल, निर्देशन, शिक्षण, परामर्श, अधिगम शैली को अपनाना, अध्ययन कौशलों का शिक्षण, दूरभाष अनुशिक्षण, सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को देखना।
- परामर्श, निर्देशन, अनुशिक्षक टिप्पणियों और ग्रेडिंग/अंकन की प्रभावकारिता, प्रयोगों का आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण।
- विद्यार्थियों का परामर्श ग्रहण बोध, टी.एम.ए. टिप्पणी और ग्रेडिंग, वैयक्तिक सहयोग।
- प्रत्येक परामर्श सत्र में व्याख्या की स्पष्टता, शिक्षक उत्साह, प्रस्तुतीकरण का संगठन, समूह चर्चा आदि।

चरों की प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत प्रत्येक उप-विषय का भी अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन किया जा सकता है और कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास में मूल्यांकन किए जाने वाले सूक्ष्म स्तर के प्रश्नों/मदों को शामिल करने के लिए हर किसी को विस्तारित किया जा सकता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) दूरस्थ शिक्षा में "उत्पाद" और "प्रक्रिया" चरों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

14.3.5 कौन से परिप्रेक्ष्य अपनाए जाएँ?

इस उपभाग में, हम कुछ मूल्यांकन परिप्रेक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो मानसिक ढाँचा, अभिवृत्ति या वैश्विक दृष्टि प्रदान करते हैं जिसके अंतर्गत कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास को कार्यान्वित किया जाता है। इस प्रकार का ढाँचा उपरोक्त उपभागों 14.3.1 से 14.3.4 में हमारे द्वारा चर्चा किए गए विभिन्न मुद्दों एवं सरोकारों के निर्धारित में सहायता करता है, जिसे आप पुनः देख सकते हैं। यह आपको मूल्यांकन परिप्रेक्ष्यों पर और आगे चर्चा करने में स्पष्टता प्रदान करेगा।

थार्पे (1988) द्वारा उठाए गए कुछ मुद्दे ध्यान देने योग्य हैं (उपभाग 14.3.2 देखें) क्योंकि इनका सरोकार मूल्यांकनकर्त्ता से है किसी के मूल्यांकन के नजरिए पर ध्यान दिए बिना। इन मुद्दों में शामिल हैं: उपयुक्त प्रविधि संबद्ध विवादों का समाधान करना बनाम निर्णय लेने की सुविधा करना; मूल्यांकन में मूल्य निर्धारन करना बनाम साक्ष्य प्रस्तुत करना; मूल्यांकनकर्त्ताओं के रूप में व्यवसायी बनाम मूल्यांकनकर्त्ताओं के रूप में बाहरी अभिकरण; व्यवस्थित और वैज्ञानिक आँकड़े संग्रह करना बनाम घटनाओं और अभिवृत्तियों के गुणात्मक विवरण; निगरानी बनाम मूल्यांकन; और मूल्यांकन बनाम अनुसंधान।

इस पृष्ठभूमि के साथ, हम अब कुछ परिप्रेक्ष्यों का परीक्षण करते हैं जो मूल्यांकन पर निर्णयों को प्रभावित करते हैं। हालाँकि, यह ध्यान दिया जा सकता है कि निम्नलिखित चर्चित परिप्रेक्ष्यों के बीच मुश्किल से कोई सुनिश्चित सीमा है; यह केवल सापेक्षिक महत्व है जिसे कि किसी एक या दूसरे से संबद्ध किया जा सकता है।

i) दायित्व एवं प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य

दायित्व एवं मूल्यांकन के बीच सम्बन्ध को रेखांकित करते हुए, कैल्डर (1994) संकेत करते हैं कि कार्यक्रम का मूल्यांकन करते समय कोई निर्णय लेने के निम्नलिखित पाँच स्तरों में से किसी एक के प्रति उत्तरदायी हो सकता है :

- वित्तीयन अथवा कार्यक्रम संचालन के लिए जिम्मेदार बाह्य अभिकरण;
- अपनी स्वयं की संस्था, जहाँ पर मूल्यांकन हो रहा हो में प्रबंधकीय स्तर पर निर्णय लेने वाले
- अपना कार्यक्रम या संकाय स्तर पर निर्णय लेने वाले;
- पाठ्यक्रम स्तर पर निर्णय लेने वाले; अथवा
- विद्यार्थियों अथवा अन्य अनुयायी/ग्राहक।

कैल्डर (1994) द्वारा गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता सुनिश्चयन, और संकलनात्मक और रचनात्मक मूल्यांकन के बीच अंतर स्पष्ट किया गया है। जहाँ एक ओर गुणवत्ता नियंत्रण का सरोकार उत्पादों के बहिष्करण से है जो कि पूर्व अनुबद्ध मानक को पुष्ट नहीं करता (जिसके लिए तरह-तरह के संकलनात्मक मूल्यांकन उपागमों का अनुसरण किया जाता है), गुणवत्ता सुनिश्चयन का सरोकार स्वीकृत प्रक्रियाओं के अनुप्रयोग के माध्यम से परिभाषित मानक को प्राप्त करना है (जिसके लिए तरह-तरह के रचनात्मक मूल्यांकन उपागमों का अनुसरण किया जाता है)।

दायित्व एवं प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्यों के साथ मूल्यांकन अभ्यासों को पांडा (1990) द्वारा इस प्रकार उल्लिखित किया गया है कि जहाँ पूर्ववर्ती विशेष रूप से किसी कार्यक्रम की कुशलता का परीक्षण करता है ताकि वित्तीयन अभिकरण/सत्ता को रिपोर्ट किया जा सके,

वहीं परवर्ती, कार्यक्रम की प्रभावकारिता को आंकलित करना चाहता है ताकि कार्यक्रम वितरण और प्रबंधन और स्वयं कार्यक्रम की प्रभावकारिता के सम्बन्ध में कार्यक्रम प्रबंधक/समन्वयक/दल को प्रतिपुष्टि प्रदान की जा सके। दायित्व परिप्रेक्ष्य में फोकस कार्यक्रम के अंतरिम उद्देश्य (उद्देश्यों), मूल्यांकन प्रविधि की वस्तुनिष्ठता ओर संग्रह किए गए आँकड़ों के परिमाणात्मक पहलुओं पर होता है। इस प्रकार के अभ्यास के पीछे प्रयोजन यह तय करना होता है कि कार्यक्रम को रखा जाए (और किन संशोधित विधियों सहित) या इसे पूर्ण रूप से अस्वीकार किया जाए। दूसरी तरफ, प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में फोकस तात्कालिक अथवा मध्यवर्ती उद्देश्यों, अनुसरण की जा रही प्रविधि (अर्थात् क्या यह इस कदर सख्त है कि ठोस निर्णय लिए जा सकें?); और गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों प्रकार के इकट्ठा किए गए आँकड़ों पर होता है। इस प्रकार के मूल्यांकन का प्रयोजन कार्यक्रम (इसके घटकों और प्रक्रियाओं) और इसके वितरण को सुधारना है।

ii) लोकतांत्रिक और सहयोगी मूल्यांकन

लोकतांत्रिक और सहयोगी मूल्यांकन के लिए विषय की रूपरेखा तैयार करते समय, तोवर (1989) ने मूल्यांकन प्रश्नों के चयन करने की प्रक्रिया में और उन प्रश्नों पर आधारित कार्यक्रम मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन सलाहकारों की भूमिका और उत्तरदायित्वों पर ध्यान केन्द्रित किया। किसी भी दूरस्थ शिक्षण संस्था में अनुसरणकर्त्ता-मूल्यांकनकर्त्ता सम्बन्ध, मूल्यांकन प्रश्नों और मूल्यांकन किस प्रकार से किया जा रहा है (हालाँकि वृहद स्तर पर यह सांस्थानिक नीतियों और प्रयोजनों पर निर्भर करता है) के फोकस को निर्धारित करता है। मूल्यांकनकर्त्ता की भूमिका इस प्रकार के मूल्यांकन अभ्यास का परीक्षण करने के लिए विशेष महत्व की है। राजनीतिक अभिविन्यासों के अनुसार, सांस्थानिक लक्ष्यों, अनुसरणकर्त्ता की आवश्यकताओं और मूल्यांकनकर्त्ता की क्रियाओं पर आधारित तीन मूल्यांकन भूमिकाओं की चर्चा नीचे की जा रही है :

क) ***नौकरशाही मूल्यांकन :*** इस प्रकार के मूल्यांकन में मूल्यांकनकर्त्ता एक किराए के अनुसंधानकर्त्ता के रूप में कार्य करता है जो प्रयोजनों, प्रक्रियाओं, उत्पादों और मूल्यांकन अभ्यासों के उपयोग से सम्बन्धित निर्णय लेने की किसी स्वतंत्रता के बिना दिशा निर्देशों का पालन और कार्यान्वयन करता है। मूल्यांकनकर्त्ता की भूमिका अनुसरणकर्त्ता के लिए सूचना को संग्रह करने, प्रक्रिया में लाने प्रदान करने तक सीमित है जो सांस्थानिक निर्णय लेता है।

ख) ***स्वेच्छाचारी मूल्यांकन :*** इस मूल्यांकन का उद्देश्य किसी कार्यक्रम या इसके किसी पहलू पर मूल्यांकनकर्त्ता से सलाह प्राप्त करना है। मूल्यांकनकर्त्ता प्रश्नों को तैयार करने, आँकड़ों के संग्रह और विश्लेषण की क्रियाविध तैयार करने और परिणामों को संस्तुत करने के लिए स्वतंत्र है। मूल्यांकनकर्त्ता की भूमिका अनुसरणकर्त्ता के एक सलाहकार के रूप में है। मूल्यांकनकर्त्ता मूल्यांकन के उद्देश्यों, विधियों और कार्यक्षेत्र को तय करता है।

ग) ***लोकतांत्रिक मूल्यांकन :*** इस प्रकार का मूल्यांकन मूल्यों और रूचियों के अनेकत्व को समायोजित करता है और उसे पूरा करने का प्रयत्न करता है। राजनीतिक संदर्भ जिसके अंतर्गत मूल्यांकन अभ्यास किया जाता है, यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुसरणकर्त्ता और मूल्यांकनकर्त्ता मूल्यांकन के फोकस की रूपरेखा प्रस्तुत करने और मूल्यांकन प्रश्नों को तैयार करने से लेकर विश्लेषण और परिणामों के अनुप्रयोग तक हाथ में हाथ मिलाकर कार्य करते हैं।

सहयोग इस दृष्टि से लिया जाता है कि मूल्यांकन अभ्यासों की वैधता को बढ़ाया जा सके, कार्यक्रम अथवा पद्धति को और अधिक सुधारने के लिए परिणामों को कार्यान्वित किया जा सके और न केवल संपूर्ण प्रभावकारिता का पता लगाया जा सके बल्कि उप-पद्धतियों की प्रभावकारिता का भी।

मूल्यांकन के महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक प्रतिमानों में से एक है पैटन (1986) द्वारा सुझाया गया उपयोग पर केंद्रित किया गया मूल्यांकन, जिसमें सहयोग-अभ्यासों को मूल्यांकन प्रश्नों को फोकस करने और परिभाषित करने के लिए किया जाता है। यह प्रतिमान, पद्धति के लिए प्रक्रिया और उत्पाद की प्रासंगिकता और इस प्रकार के अभ्यसों के उपयोग अर्थात् किस लिए इसे प्रारंभ किया जाए, पर विचार करता है। इस प्रकार का मूल्यांकन निम्नलिखित के माध्यम से आगे बढ़ता है :

- व्यवस्था में लोगों की सूचना आवश्यकताओं की पहचान।
- मूल्यांकन के फोकस को नियमन करना।
- विधियाँ तय करना (प्रतिदर्ष, उपकरण और तकनीकें, कार्य विधियाँ)
- आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करना।
- सिफारिशों को आगे बढ़ाना।

इस प्रकार के मूल्यांकन में, प्रयोगकर्त्ताओं के समूह की पहचान पहले से की जाती है और मूल्यांकन की संपूर्ण प्रक्रिया में मूल्यांकनकर्त्ता प्रयोगकर्त्ताओं के साथ लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत सहयोग से कार्य करता है। सिफारिशों का उपयोग की बढ़ती मूल्यांकन प्रश्नों की पहचान और उनके फोकस करने में अनुसरणकर्त्ताओं/ प्रयोगकर्त्ताओं और मूल्यांकनकर्त्ता के बीच समझौते की बातचीत और सहयोग में प्रत्येक वृद्धि के साथ होती है।

iii) केन्द्रीकृत और विकेन्द्रीकृत मूल्यांकन

किन्ही भी दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का संचालन उनके मुख्यालयों, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से होता है (अथवा इस प्रतिमान की विभिन्नताएँ हो सकती हैं)। कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास जिसमें तरह-तरह के अधिकारी शामिल होते हैं (उत्तरदाताओं के रूप में विद्यार्थियों सहित), उनका विनिर्दिष्ट समूहों के द्वारा किए जाने वाले विनिर्दिष्ट कार्यों के साथ विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए। और अधिक, इस अभ्यास में संस्थाओं का एक अन्तस्थ रचनातंत्र है जोकि प्रकृति में निरंतर है और मूल्यांकन अभ्यास को सहज बनाने के लिए विकेन्द्रीकृत है। लोकतांत्रिक-सहयोगी ढाँचा में, विकेन्द्रीकृत मूल्यांकन उन लोगों को शामिल करता है जो वास्तव में दूरस्थ शिक्षण-अधिगम का उत्तरदायितव लेते हैं, और उन लोगों को भी जो अन्ततः परिणामों पर कार्य करेंगे (जैसे संकाय के सदस्य, सहयोग-सम्भागों में विद्वान, प्रशासक आदि)। यदि मूल्यांकन लघु स्तर पर है ओर एक बार किया जाना है जो केन्द्रीकृत अभ्यास अधिक वांछनीय है क्योंकि मूल्यांकनकर्त्ता का सम्पूर्ण अभ्यास पर नियंत्रण होता है।

इस स्तर पर आप विराम लीजिए और आप अपनी रूचि के मूल्यांकन व्यवहार पर फोकस करने के लिए परिप्रेक्ष्य पर अपने विचार तैयार कीजिए। हालाँकि, वहाँ पर मुश्किल से परिप्रेक्ष्यों के बीच एक पक्की दीवार है और मूल्यांकन प्रश्नों के तैयार करने और मूल्यांकन के फोकस/प्रयोजन पर निर्भर करते हुए ये अतिछादित हो सकते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) लोकतांत्रिक-सहयोगी मूल्यांकन को केन्द्रीकृत-विकेन्द्रीकृत मूल्यांकन के साथ सम्बन्ध दिखाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

14.4 सारांश

गुणवत्ता संपूर्ण भूमंडल में शैक्षिक जगत का मुख्य सरोकार है और इस घटक को शिक्षण-अधिगम स्थिति में प्रवृत्त करने के लिए प्रशासकों और शैक्षणिक-विद्वानों द्वारा विभिन्न दिशाओं में अनेक प्रयत्न किए गए हैं। किसी पद्धति या प्रतिमान के निरपेक्ष रूप से मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में गुणवत्ता का मुद्दा प्रमुख सरोकार रहता है। विशेष रूप से, शिक्षा में इसके नवाचार के कारण। गुणवत्ता सुनिश्चयन नीतियाँ, पद्धतियाँ और उपाय, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रावधान की विश्वसनीयता स्थापित और प्रोन्नत करने के लिए अनिवार्य हो जाते हैं। इस प्रकार के कार्य के सम्पादन के लिए व्यापक गुणवत्ता सुनिश्चयन पद्धति की जरूरत होती है जिसे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के निवेश, प्रक्रियाओं और उत्पाद अथवा परिणामों की गुणवत्ता को सिद्ध करने और सुधारने के लिए तैयार किया गया हो। इस इकाई में, हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता को कायम रखने और उसे समृद्ध बनाने से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को सामान्य रूप में और उनके कार्यक्रमों को विशेष रूप से चर्चा की।

मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम के माध्यम से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को आश्वस्त करने के लिए उनके कार्यक्रमों और पद्धतियों का विश्वसनीयता को प्राप्त करने, कायम रखने और उसे बढ़ाने का एक आधारभूत पहलू रहा है। हमने इस इकाई में यह चर्चा की कि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन, दूरस्थ शिक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चयन में गुणवत्ता सरोकारों को सम्बोधित करने में किस प्रकार सहायता करेगा। रचनात्मक-संकलनात्मक द्विभागीकरण की चर्चा इस सावधानी से की गई थी कि इसका यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि रचनात्मक प्रक्रिया के दौरान होता है और संकल्पनात्मक अंत में। वास्तव में, यह कार्यक्रम मूल्यांकन में एक सतत प्रक्रिया है और किसी दूरस्थ शिक्षण संस्थान का अन्तःनिर्मित अभ्यास है। क्यों, कैसे, किसके लिए और क्या मूल्यांकन किया जाए, इन बातों पर आधारित हमने कुछ मूल्यांकन परिप्रेक्ष्यों पर फोकस किया। इस बात पर ध्यान दिया गया था कि मूल्यांकन परिणामों की उपयोगिता की क्षमता बढ़ जाएगी, यदि इसे लोकतांत्रिक-सहयोगी ढाँचा के अंतर्गत इस दृष्टि से लिया गया कि मूल्यांकन परिणाम सम्पूर्ण पद्धति और उपपद्धतियों की प्रभावकारिता और कार्यक्षमता में योगदान करें और विभिन्न स्तरों पर मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रमों की गुणवत्ता को विशेष रूप में और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

संस्थानों की पद्धति को सामान्य रूप में सतत प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए मूल्यांकन को एक अन्तःनिर्मित प्रक्रिया बनाया जाए।

14.5 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) उच्च शिक्षा में गुणवत्ता एक बहु-आयामी, बहु-स्तरीय और गतिशील संकल्पना है जिसका सम्बन्ध शैक्षिक प्रतिमान के प्रासंगिक ढाँचे, सांस्थानिक लक्ष्य और उद्देश्यों और दी गई पद्धति, संस्था, कार्यक्रम अथवा विद्या विशेष के अंतर्गत विशिष्ट मानकों से है। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की संकल्पना शिक्षण, शैक्षणिक कार्यक्रमों, अनुसंधान और छात्रवृत्ति, कर्मचारीगण, विद्यार्थियों, भवन, सुविधाओं, उपकरणों, समुदाय के लिए सेवाओं और शैक्षणिक वातावरण सहित विश्वविद्यालय के सभी प्रकार्यों और क्रियाओं को शामिल करती है। उच्च शिक्षा के मूल्यांकन के संदर्भ में गुणवत्ता के सम्बन्ध में गुणवत्ता की संकल्पना के मुख्य उपागम निम्न प्रकार से हैं :

   - शैक्षिक शब्दों में असाधारण दृष्टि को श्रेष्ठता के विचारों से जोड़ा जाता है। अर्थात् "उच्च गुणवत्ता" का जिसे अधिकतर लोगों द्वारा प्राप्त न किया जा सकता।
   - *पूर्णता* के रूप में गुणवत्ता, गुणवत्ता को एक समनुरूप अथवा परिपूर्ण परिणाम के रूप में देखती है जिसे सभी के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।
   - *प्रयोजन के लिए उपयुक्तता* के रूप में गुणवत्ता, गुणवत्ता को ग्राहक की अपेक्षाओं, आवश्यकताओं अथवा आकांक्षाओं की पूर्ति के रूप में देखती हैं।
   - *धन के मूल्य* के रूप में गुणवत्ता, गुणवत्ता को निवेश पर प्रत्यागम के रूप में देखती है। "ग्राहक" गुणवत्ता उत्पाद अथवा सेवा प्राप्त करता है।
   - शैक्षिक पदों में *रूपांतरण* के रूप में गुणवत्ता, छात्रों की वृद्धि और सशक्तीकरण अथवा नए ज्ञान के विकास की ओर संकेत करती है।

2) i) वैश्विक रूप में गुणवत्ता सुनिश्चयन की तीन प्रमुख विधियाँ हैं। ये हैं: आंकलन अंकक्षण और प्रत्यायन।

   ii) *संस्थानिक प्रत्यायन* न केवल संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों बल्कि कुछ इस प्रकार के क्षेत्रों पर ध्यान देते हुए संपूर्ण रूप से संस्था पर ध्यान केन्द्रित करता है: लक्ष्य, शासन, प्रभावी प्रबंधन, शैक्षणिक कार्यक्रम, शिक्षण कर्मचारीगण, अधिगम संसाधन (पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं और शैक्षिक तकनीकी), विद्यार्थियों और विद्यार्थी सहायता, भौतिक सुविधाएँ और आर्थिक संसाधन।

3) प्रतिफल (आउटपुट) चर जैसे पाठ्यक्रम में से उत्तीर्ण होने वाले कुल छात्र, पद्धति की कुल प्रभावकारिता और कार्य क्षमता, अभिगम्यता और न्यायपरस्त (equity) संपूर्ण व्यवस्था मूल्यांकन से अधिक सम्बन्धित हैं जिसमें कि वित्तीयन अभिकरण अथवा सरकार के प्रति व्यवस्था के दायित्व आदि की भी जाँच की जाती है। प्रक्रिया चरों यथार्थ कामकाज की ओर संकेत करते हैं, गुणवत्ता उपलब्धि पर बल और प्रक्रिया में व्यावसायिकों पर बल दिया जाता है ताकि क्रियाकलापों की प्रभावकारिता और विद्यार्थी-अधिगम को बढ़ाया जा सके।

4) मूल्यांकन का लोकतांत्रिक-सहयोगी प्रतिमान पदाधिकारियों की सभी श्रेणियों के विचारों को समायोजित करता है और अभ्यास करने और परिणामों को कार्यान्वित

करने के लिए सहयोगपूर्ण ढंग से क्रियाविध का मूल्यांकन करता है। इसे वृहद् स्तर पर सहज बनाया जाता है, यदि वैसे लोगों जो वास्तव में दूरस्थ शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में शामिल हैं पर तय किए गए वैयक्तिक दायित्वों सहित विकेन्द्रीकृत मूल्यांकन है। मूल्यांकन परिणामों के क्रियान्वयन की संभावना बढ़ जाती है यदि एक बार वे सभी (उच्च मुख्यालयों से निम्न अध्ययन केन्द्रों तक) इस अभ्यास में शामिल हों।

14.6 संदर्भ ग्रंथ

Bonser, C. F. (1992). Total Quality Education, *Public Administration Review*, 52(5).

Calder, J. (1994). *Programme Evaluation and Quality.* Kogan Page and IET, London.

Chacon, F. J. (1987). *Evaluation and Decision Making in Higher Education at Distance*, University of National Abierta, Caracus.

Crawford, L. E. D., and Shuttler, P. (1999). Total quality management in Education: Problems and Issues for Classroom Teachers. *The International Journal of Educational Management*, 13 (2).

Crosby, P. B. (1979). *Quality is Free: Art of Making Quality Certain*, McGraw Hill, New York.

Egbokhare, F. O. (2006). Quality Assurance in Distance Learning, in Olayinka, A. I., and Adetimirin, V. O. (eds) (2006). *Quality Assurance in Higher Education*, Proceedings of a Symposium to mark The African University Day, 2005 Postgraduate School, University of Ibadan, Nigeria.

ElKhawas, E., De Pietro-Jurand, R,. and Holm-Nielsen, L. (1998). Quality Assurance in Higher Education: Recent Progress; Challenges Ahead, Human Development Network, Education, World Bank, Washington, D.C. www1.worldbank.org/education/tertiary/quality.html, cited in Viktoria Kis, 2005.

Feasley. C. E. (1988). '*Evaluation .of Distance, Education Programmes*', in Sewart, D., and Daniels, J. (eds.), *Developing Distance Education.* ICDE, Oslo.

Feigenbaum, A. V. (1983). *Total quality Control,* McGraw Hill, New York.

Harvey, L. (1995). 'Editorial: The quality agenda', *Quality in Higher Education*, 1(1), pp.5–12.

Harvey, L., and Green, D. (1993). Defining quality. *Assessment and Evaluation in Higher Education*, 18(1), pp.9–34.

Holt, M. (2000), The Concept of Quality in Education, in C. Hoy, C. Byane-Jardine, and M. Wood (eds), *Improving Quality in Education.* Falmer Press, London.

http://www.qualitygurus.com/courses/mod/forum/discuss.php?d=1557 – Retrieved on 01-03-2017.

http://www.qualitygurus.com/download/QM001DifferenceBetween QualityAssuranceAndQualityControl.pdf — Retrieved on 01-03-2017.

http://www.unesco.org/new/en/education/themes/strengthening-education-systems/higher-education/quality-assurance/ — Retrieved on 01-03-2017.

https://wikieducator.org/images/3/35/PID_628.pdf — Retrieved on 27-02-2017.

Jarrat Committee Report. (1985). See http://www.educationengland. org.uk/documents/jarratt 1985/index.html — Retrieved on 16-03-2016.

Juran, J. M., and F. M. Gryna, Jr. (eds). (1988). *Juran's Quality Control Handbook* (Fourth Edition), McGraw Hill, New York.

Katsoni, V., and Stratigea, A. (2016). *Tourism and Culture in the Age of Innovation: Proceedings of the Second International Conference IACuDiT,* Athens, 2015. Athens, Greece: Springer.

Navaratnam, K. K. (1997). Quality Management in Education Must be a Never-ending Journey, in K. Watson, C. Modgil and S. Modgil (eds), Educational Dilemmas: Debate and Diversity, Vol VI: *Quality in Education*, Cassell, London.

Ogunleye, A. (2013). "Quality Assurance and Quality Indicators in Open and Distance Education: Context, Concerns and Challenges", *International Journal of Educational Research and Technology,* Volume 4 (2), June 2013: 49–62.

Panda, Santosh. (1990). "Programme Evaluation in Distance Education: A Perspective and Proposed Agenda of Action" in Mukhopadhyay, M., et al (eds.). *Third Yearbook on Education Technology,* AIAET, New Delhi.

Patton, M. Q. (1986). *Utilisation-Focused Evaluation.* Sage, Beverly Hills.

Peters, T. J., and R. H. Waterman, Jr. (1982). *In Search of Excellence,* Harper and Row, New York.

Thorpe, Mary. (1988). *Evaluating Open and Distance Learning*, Longman, Essex.

Thune, C. (1998). The European systems of quality assurance: Dimensions of harmonisation and differentiation, *Higher Education Management,* Vol.10, No.3 cited in Viktoria Kis, 2005.

Tovar, M. (1989). Representing multiple perspectives: Collaborative democratic evaluation in distance education, *American Journal of Distance Education,* 3(2), 44-56.

UNESCO. (1996). *Learning: The Treasure Within,* Report to UNESCO of the International Commission on Education in the 21st Century. UNESCO, Paris.

Uvah, I. I. (2005). 'The Quality Assurance Process in the Nigerian University System', in Munzali J. (Ed). *Perspectives and Reflections on Nigerian Higher Education: Festschrift in Honour of Ayo Banjo.* Spectrum Books Ltd., Ibadan: pp. 139-157.

Viktoria Kis. 2005. *Quality Assurance in Tertiary Education: Current Practices in OECD Countries and a Literature Review on Potential Effects.* https://www.oecd.org/education/skills-beyond-school/38006910.pdf.

Vlãsceanu *et al* (2007, pp.70–73; See http://www.qualityresearchinternational.com/glossary/quality.htm.

Zaki, S., and Rashidi, M. Z. (2013). Parameters of Quality in Higher Education: A Theoretical Framework, *International J. Soc. Sci. & Education,* Vol.3, Issue 4, pp.1098-1105. http://ijsse.com/sites/default/files/issues/2013/v3i4/papers/Paper-24.pdf — Retrieved on 12-03-2017).

Suggested Readings

Dutt, K. (1988). *"Distance Education versus Traditional Higher Education: A Cost Comparison*", in B. N. Koul, et al (eds.), *Studies in Distance Education.* AIU and IGNOU, New Delhi.

Freeman, R. (1997). *Managing Open Systems.* Kogan Page, London.

George, J. and Cowan, J. (1999). *A Handbook of' Techniques for Formative Evaluation: Mapping the Students Learning Experience,* Kogan Page, London.

Gibson, A. (1986). 'Inspecting education' in Moodie, G. (Ed.). *Standards and Criteria in Higher Education,* Guildford, SRHE, pp.128–35.

Holt, David, H. (1990). *Management: Principles and Practices,* (2nd edition), Prentice Hall, New Jersey.

http://www.qualityresearchinternational.com/glossary/quality.htm

ISO 9000:2005. *Quality Management Systems - Fundamentals and Vocabulary*. http://www.qualitygurus.com/download/QM001DifferenceBetweenQualityAssuranceAndQualityControl.pdf

Jung, I., Wong, T. M., and Belawati, T. (2013). *Quality Assurance in Distance Education and e-Learning: Challenges and Solutions from Asia,* Sage Publications India Pvt. Ltd., New Delhi.

Martin, M., and Stella, A. (2007). *External quality assurance in higher education: Making choices,* UNESCO, Paris.

Olojede, A. A. *Issues and challenges in enhancing quality assurance in open and distance learning in Nigeria,* https://wikieducator.org/images/3/35/PID_628.pdf.

14.7 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत उत्तर लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणी अथवा उत्तर आप की सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अन्त्य प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के लिए अनिवार्यताओं क्या है? (500 शब्दों में)।

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के विभिन्न मुद्दों की चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

3) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन के मापदण्ड क्या हैं? (250 शब्दों में)।

4) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन की विभिन्न विधियों की विशिष्टता दर्षाइए। (250 शब्दों में)।

5) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन की चुनौतियों क्या हैं? (500 शब्दों में)।

6) कार्यक्रम मूल्यांकन में गुणवत्ता सरोकारों की चर्चा कीजिए। (1000 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) क्या आप यह सोचते हैं कि इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) अपने बी. एड. कार्यक्रम के छात्र के रूप में आपको गुणवत्ता सहयोग सुनिश्चय करने में सफल रहा है? अपने उत्तर को कारणों और/अथवा प्रयोगात्मक उदाहरणों द्वारा उचित सिद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप

अपनी बी.एड. कार्यक्रम संदर्षिका (गाइड) और प्रयोगात्मक कार्य के लिए छात्र पुस्तिका (हैंडबुक) को अच्छी तरह से पढ़िए। उनमें उल्लिखित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों, दिशा निर्देशों और मानकों को नोट कीजिए। उनकी तुलना अपने पाठ्यक्रम के दौरान कार्यक्रम के माध्यम से इसके कार्यान्वयन से अब तक यथार्थ स्थिति से कीजिए। उसके मूल्यांकन की संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार कीजिए।

इकाई 15 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र

संरचना

15.0 प्रस्तावना

15.1 उद्देश्य

15.2 निवेश तथा खपत के रूप में शिक्षा

- 15.2.1 शिक्षा का अर्थशास्त्र : अर्थ एवं परिभाषा
- 15.2.2 खपत तथा निवेश के रूप में शिक्षा
- 15.2.3 खपत तथा निवेश के रूप में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

15.3 मानव पूँजी निर्माण तथा राष्ट्रीय विकास

- 15.3.1 शिक्षा एवं मानव पूँजी निर्माण
- 15.3.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मानव पूँजी निर्माण
- 15.3.3 शिक्षा/मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में उत्पादन प्रकार्य
- 15.3.4 लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता

15.4 विभिन्न प्रकार के लागत : कारक तथा प्रकार्य

- 15.4.1 लागत के प्रकार
- 15.4.2 लागत को प्रभावित करने वाले कारक
- 15.4.3 लागत के प्रकार्य

15.5 दूरस्थ शिक्षा में मितव्ययता या अर्थव्यवस्था के पैमानें

15.6 सारांश

15.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

15.8 संदर्भ ग्रंथ

15.9 इकाई अंत अभ्यास

15.0 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा के आर्थिक पहलुओं किसी भी कार्यक्रम मूल्यांकन प्रयास का एक महत्वपूर्ण घटक होता है – चाहे वह विशेष शैक्षिक कार्यक्रम से सम्बन्धित हो या सभी कार्यक्रमों से या किसी संस्था के मूल्यांकन या समग्र प्रणाली के मूल्यांकन से सम्बन्धित हो। किसी भी शैक्षिक मामले का आर्थिक पक्ष उस शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभाविता और कुशलता को समझने में सहायक होता है। जैसा कि हमने इससे पिछली इकाई में पढ़ा है, जब भी हम किसी शैक्षिक कार्यक्रम का मूल्यांकन करना चाहते हैं, उसकी ***निवेश, प्रक्रिया*** *तथा* **उत्पाद** (निर्गम धारिता) अवस्थाओं के संबंधित सभी चरों और क्रियाओं को इन क्रियाकलाप में से प्रत्येक की प्रभाविता की जाँच करने की आवश्यकता होती है। इनमें मुख्य रूप से कार्यक्रम/पाठ्यक्रम योजना, स्वरूप, विकास (शैक्षिक सामग्री, जैसे प्रिंट, आडियो, वीडियो, होम-किट, सीडी-रोम इत्यादि समेत) और पाठ्यक्रम कार्यान्वयन (सतत् आंकलन, अनुशिक्षण तथा परामर्श सेवा, हैंड्सऑन तथा प्रयोगात्मक प्रयोग, सत्रांत परीक्षा आदि सम्मिलित होते हैं। इन क्रियाकलापों में से प्रत्येक के लिए हम इसकी लागत की गणना करनी पड़ती है ताकि कार्यक्रम की अंतिम इकाई लागत अर्थात कुल कार्यक्रम लागत तथा प्रत्येक विद्यार्थी की इकाई लागत (प्रत्येक क्रियाकलाप तथा समस्त कार्यक्रम के लिए) सुनिश्चित की जा सके। इससे इस बात का पता भी चलेगा कि यदि भविष्य में एक वैकल्पिक कार्यक्रम या

समतुल्य कार्यक्रम दिया जाए तो इनसे सम्बन्धित वित्तीय तथा अन्य संसाधनों का उपयोग कितनी अच्छे प्रकार से हो सकता है। हमें लागत प्रभाविता तथा लागत क्षमता के विभिन्न पक्षों को भी जानना चाहिए अर्थात् इसमें कितना धन खर्च किया गया है और वह किस प्रकार से किया गया है। इससे आगे यह भी मालूम करना चाहिए कि यदि किसी वैकल्पिक प्रतिरूप या विधि का प्रयोग किया जाए तो क्या उससे खर्च में कमी आ सकती है, और क्या निर्धारित बजट में उस शैक्षिक कार्यक्रम के विकास तथा लागू करने के उद्देश्यों की पूर्ति हो चुकी है।

तथापि, इस इकाई में हम शिक्षा के आर्थिक पक्षों से सम्बन्धी अवधारणाओं तथा उनके सामान्य अनुप्रयोगों पर भी चर्चा करेंगे जिससे आपको दूरस्थ शिक्षा के आर्थिक पक्षों की एक स्पष्ट समझ हो जाए, जैसे दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की लागत, लागत प्रकार्य, लागत विश्लेषण तथा माप-लाघव। भाग 15.2 में हम शिक्षा के सामान्य पक्षों से आरंभ करेंगे, जिनका उपयोग आगे चलकर दूरस्थ शिक्षा के अर्थशास्त्र की प्रभाविता को समझने के लिए प्रयोग में लाया जाएगा (विशेषतः लागत की गणना)। शिक्षा के कार्यक्रम के प्रत्येक घटक की लागत (विशेषतः इकाई लागत), कार्यक्रम प्रभाविता का आंकलन करने में एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इस इकाई में कुछ मुख्य प्रश्न ये हैं कि कार्यक्रम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए धन का प्रयोग कितनी कुशलतापूर्वक किया जाए; वित्तीय तथा मानव संसाधनों में मितव्ययता कैसे बरती जाए और यह सब कार्यक्रम की कुशलता को बिना प्रभावित किए आदि जिनको हम यहां संबोधित करेंगे।

15.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- शिक्षा का अर्थशास्त्र नामक अवधारणा को परिभाषित कर सकेंगे;
- एक खपत तथा निवेश के रूप में (दूरस्थ) शिक्षा की अवधारणा और मानव पूँजी निर्माण में इसका योगदान पर चर्चा कर सकेंगे;
- लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता में भेद कर सकेंगे;
- दूरस्थ शिक्षा में लागत का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- व्याख्या कर सकेंगे कि दूरस्थ शिक्षा में मितव्ययता कैसे प्राप्त की जा सकती है।

15.2 निवेश तथा खपत के रूप में शिक्षा

दूरस्थ शिक्षा के आर्थिक परिप्रेक्ष्य, विशेषतः जिनका सम्बन्ध लागत मालूम करने से है, कार्यक्रम मूल्यांकन का महत्वपूर्ण पक्ष होता है। कार्यक्रम प्रभाविता तथा इसकी गुणवत्ता संशोधन में लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता सम्बन्धी निर्णय अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इस भाग में, हम शिक्षा के मूलभूत आर्थिक पक्षों पर चर्चा करेंगे जैसे एक खपत तथा निवेश के रूप में शिक्षा, मानव पूंजी निर्माण उत्पादन प्रकार्य, शिक्षा में लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता।

15.2.1 शिक्षा का अर्थशास्त्रः अर्थ एवं परिभाषा

शिक्षा के अर्थशास्त्र के अंतर्गत शिक्षा के आर्थिक परिप्रेक्ष्यों का अध्ययन आता है। इसका सम्बन्ध कुछ निर्धारित समयावधि में विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण के उत्पाद तथा विस्तार से होता है। एक ओर, इसका बल इस बात की ओर होता है कि विभिन्न स्तरों पर

संसाधनों का शैक्षिक संस्थाओं में निर्धारण किस प्रकार होता है, किस प्रकार ऐसे निवेश से व्यक्ति और समाज लाभान्वित होते हैं। दूसरी ओर, इसका बल एक शैक्षिक प्रणाली के मानव संसाधनों, शैक्षिक आयोजना, निर्णयन-प्रक्रिया, निवेश और वृद्धि तथा विकास के अर्थशास्त्र के अध्ययन पर होता है। ऐसा करने से, अर्थशास्त्री तथा शिक्षाविद् भर्ती तथा प्रोन्नति के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पहलुओं, श्रमिक बलों की व्यावसायिक संरचना, श्रमिकों का स्थानांतरण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, संसाधनों का विस्तार या बंटन, बचत तथा निवेश, आर्थिक बढ़ती और विकास जैसे विभिन्न पक्षों पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करते हैं। सटीक रूप में, यह विभिन्न शैक्षिक सीढ़ियों (साक्षरता से उच्च शिक्षा और शोध) में दुर्लभ उत्पादक (मानव गैर-मानव और वित्तीय संसाधनों की तैनाती और दी गई समाज और देश के व्यक्तियों तथा समूहों के बीच वितरण के संबंधित है।

सन् 1960 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में, शिक्षा के आर्थिक पक्षों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाने लगा। और ऐसा अनुभव किया गया कि मानव संसाधन विकास, जिसका सम्बन्ध व्यक्तियों की शिक्षा तथा प्रशिक्षण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है, आर्थिक **विकास** तथा जीवन की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण पक्ष है। विश्व के विकसित और विकासशील देशों ने यह महसूस किया कि शिक्षा आर्थिक वृद्धि के लिए विकसित देशो में तथा आर्थिक विकास के लिए विकासशील देशों में बहुत महत्वपूर्ण होती है।

शिक्षा तथा अर्थशास्त्र एक दूसरे से अलग होते हैं। परंतु जहाँ एक और अर्थव्यवस्था शिक्षा के लिए संसाधन प्रदान करती है, दूसरी ओर शिक्षा मानव शक्ति विकास में योगदान प्रदान करती है जोकि आर्थिक आधुनिकीकरण की और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए इतना महत्वपूर्ण है। शिक्षा तथा प्रशिक्षण व्यक्तियों को उच्च ज्ञान तथा कौशल प्रदान करते हैं जो उच्चतर गत्यात्मकता तथा उत्पादकता के लिए अनिवार्य है। अतः लोग (नागरिक) अपनी तथा अपने बच्चों की शिक्षा में इतना निवेश करते हैं जितना उनके बस की बात है या उनकी क्षमता है, जिसके अतिरिक्त वे अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, कपड़ा और मकान के लिए भी खर्च करते हैं। जब एक बार आर्थिक क्रियाकलाप का स्तर बढ़ जाता है तो इससे राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि हो जाती है और देश की वित्तीय स्थिति भी बढ़ जाती है और राष्ट्र इस अवस्थिति में आ जाता है कि यह शैक्षिक विस्तार तथा विविधीकरण में निवेश कर सके। परंतु, यह भी सत्य है कि जब तक राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था का समानांतर विकास नहीं होगा, शैक्षिक विकास के लिए संसाधनों को सुनिश्चित कर सकना कठिन होगा। नेल्सन तथा विन्टर (1982), फ्रीमेन (2002), लुन्डवाल (2011), कुस एवं अन्य (2015) इत्यादि के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का विस्तार आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है (अर्थात् उत्पादन की गुणवत्ता तथा मात्रा में बढ़ोतरी, तकनीकी तथा प्रबंधन कौशलों का विकास, श्रमिक बल की गुणवत्ता तथा जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि)। उदाहरण के लिए, मैकमोहन (1999) के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि जो देश आर्थिक दृष्टि से उन्नत होते हैं उनकी शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रणाली भी विकसित होती है। यह बताता है कि शिक्षा तथा आर्थिक विकास में एक पारस्परिक सम्बन्ध होता है।

15.2.2 खपत तथा निवेश के रूप में शिक्षा

अर्थशास्त्र में खपत का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं (और उनकी उपयोगिता) के हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने में उपयोग से है। निवेश सामान्यतः उपभोग से अधिक उत्पादन का संदर्भ देता है। वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन तथा खपत एक ही समय में होती है; और यदि इनका उत्पादन इनकी खपत से अधिक होगा तो वह अधिशेष (surplus or accumulation) कहलाता है। गैर-स्थायी (अस्थायी) वस्तुओं और सेवाओं में निवेश (जैसे

मनुष्यों में) दीर्घावधि उद्देश्यों के लिए अनिवार्य है और दीर्घावधि निवेश भविष्य के उत्पादन के लिए अनिवार्य होता है। शिक्षा को निवेश और खपत दोनों रूपों में समझा जाता है। शिक्षा एक निजी खपत भी समझी जाती है क्योंकि इस पर किया गया खर्च अर्हताओं और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसे निजी की अपेक्षा सार्वजनिक खपत भी समझा जाता है क्योंकि (जहाँ तक) सरकार शिक्षा प्रणाली पर अत्यधिक धन खर्च करती है। शिक्षा पर किया गया खर्च इस दृष्टि से एक निवेश समझा जाता है क्योंकि व्यक्ति, समाज तथा समग्र राष्ट्र शिक्षित व्यक्तियों के माध्यम से भविष्य में लाभ प्राप्ति करते हैं।

नियमित या सामान्य शिक्षा स्पष्ट रूप से एक खपत ही है क्योंकि इसमें लगे व्यक्ति इसे प्राप्त करने के लिए अपनी बचत को लगाती है तथा सरकार व्यक्तियों से प्राप्त करों को लंबी अवधि में खर्च करती है, ताकि अन्ततोगत्वा भविष्य में लाभान्वित हो सकें। कार्य (जॉब) पर रहते हुए प्राप्त प्रशिक्षण (विशेषतः अल्पावधि प्रशिक्षण) मुख्यतः एक निवेश है, क्योंकि इसका सम्बन्ध तात्कालिक उपयोग या लाभ के लिए अपेक्षित कौशल विकास से है। जहाँ तक शिक्षित व्यक्तियों के रोजगार या उत्पादी कार्य प्राप्त करने का प्रश्न है (अपने अपने शैक्षिक स्तर के अनुसार), तो स्पष्टतः यह एक निवेश है – क्योंकि वर्तमान की खपत/भविष्य के लिए निवेश होगा।

15.2.3 खपत तथा निवेश के रूप में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

उपर्युक्त उपभाग 15.2.2 में, शिक्षा के अर्थशास्त्र की अवधारणा की जाँच करते हुए हमने शिक्षा को एक निवेश तथा खपत दोनों रूपों में देखा है। इस उपभाग में, हम निवेश तथा खपत के रूप में दूरस्थ शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, विशेषतः व्यापक रूप में मानव पूँजी के निर्माण के लिए। इस सामान्य बोध के आधार पर दूरस्थ शिक्षा की लागत के आवेदन, जिसका विवरण आने वाले भागों में किया गया है, को समझ सकेंगे।

दूरस्थ शिक्षा निवेश तथा खपत दोनों है। जहाँ तक इसमें निजी और सामाजिक खर्च होता है यह एक खपत है और जहाँ तक यह अधिक ज्ञान के लिए मानव जिज्ञासा की संपुष्टि योगदान देती है यह एक निवेश है। परंतु, स्पष्टतः यह एक निवेश भी है क्योंकि इसके आधार पर दीर्घावधि लाभ होते हैं वे लाभ जो एक विकास अवधि के पश्चात् होते हैं। शिक्षा में किए गए निवेश के आधार पर व्यक्तिगत उत्पादकता और आय में वृद्धि होती है। शिक्षा प्रदान करने की एक विधि के रूप में दूरस्थ शिक्षा में निवेश भी व्यक्तिगत उत्पादकता तथा आय में वृद्धि करने में सहायक होता है, विशेषतः उस अवस्था में जबकि शैक्षिक विषयवस्तु/कार्यक्रम इसके अभ्यार्थियों की तात्कालिक व्यावसायिक आवश्यकताओं पर आधारित है। दूरस्थ शिक्षा के पक्ष में दिए गए तर्कों पर बल मिलता है जब निवेश सम्बन्धी विचारों को लागत-लाभ विश्लेषण के ढाँचे के अंतर्गत आंका जाए अर्थात् लागत ढाँचे के अंतर्गत।

दूरस्थ शिक्षा शिक्षण-अधिगम एक "समीपस्थ" अवस्था में घटित नहीं होता है। इसका अध्यापक तात्कालिक पर्यवेक्षण नहीं कर पाते और शिक्षण पहले से निर्मित विषयवस्तु (सामग्री) के माध्यम से होती है। नियमित शैक्षिक व्यवस्थाएँ दूरस्थ शिक्षा की अपेक्षा अधिक महँगी होती हैं। भारत में दूरस्थ शिक्षा की लागत नियमित शिक्षा की लागत की $^1/_5$ भाग एक का पांचवां हिस्सा होती है। इसके अतिरिक्त, औपचारिक शिक्षा अभिगम्यता के औचित्य, गुणवत्ता, तथा समानता सम्बन्धी सीमाएँ भी होती हैं।

दूरस्थ शिक्षा में अधिक अन्तर्निहित अभिगम्यता की क्षमता तथा संभाव्यता होती है और इसमें कम लागत से समान शैक्षिक अवसरों का ध्यान भी रखा जा सकता है। अति आधुनिक

सूचना तथा संप्रेषण प्रौद्योगिकियों के उपयोग से यह संभव हो पाया है कि दूरस्थ शिक्षा के द्वारा न केवल बहुत सारे अध्येताओं तक पहुँचा जा सकता है और आवश्यकता आधारित शिक्षा प्रदान की जा सकती है, बल्कि विभिन्न श्रेणिों के व्यवसायों की निरंतर (सतत्) व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। इन व्यावसायिक श्रेणियों में चिकित्साशास्त्र, कम्प्यूटर शिक्षा, इंजीनियंरिंग तथा प्रौद्योगिकी, अधिक प्रभावी रूप से शिक्षा आदि सम्मिलित हैं। तथापि, इस संदर्भ में इस बात को समझना आवश्यक है कि इस ग़ैर-संस्पर्षी या औपचारिक अधिगम में सम्मिलित सामग्री तथा प्रक्रियाओं की गुणवत्ता का ध्यान रखने के लिए पर्याप्त निवेश किया जा सके। दूरस्थ शिक्षा अनिवार्यतः सार रूप में मीडिया अनुकूल होती है और इसमें बहुत सारे जनसंचार माध्यम जैसे मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, रेडियो, टेलीविजन, स्वीकृत या मान्य अध्ययन केन्द्रों तथा वेब केन्द्रों इत्यादि के माध्यम से स्वतंत्र दूरस्थ शिक्षा समृद्ध होती है। इस पद्धति में इन माध्यमों को उपयुक्त रूप में जोड़ा जाता है ताकि प्रभावी और सक्रिय अधिगम के अधिकतम लाभ प्राप्त किए जा सकें। यह पद्धति साक्षरता तथा विस्तार कार्यक्रम तथा कौशल-आधारित उच्च व्यावसायिक विकास कार्यक्रम प्रदान करने में प्रभावी सिद्ध हुई है।

जहाँ सामान्य रूप से शिक्षा एक निवेश है, दूरस्थ शिक्षा से यह अधिगम और सुकर बन जाता है क्योंकि इससे हमारे जैसे कल्याणकारी समाज में उच्च शिक्षा की अभिगम्यता अधिक व्यापक रूप धारण कर लेती है। जब सतत् व्यावसायिक विकास, पाठ्यक्रम संगठन का लचीलापन तथा शैक्षिक स्थापन को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में उचित स्थान दिया जाता है तो यह इक्कीसवीं शताब्दी में एकमात्र प्रतिद्वंदी बन जाती है। इसका एक अतिरिक्त लाभ यह भी है कि यह अपने साथ सभी प्रौद्योगिकीय विकास को मिला लेती है।

वर्तमान मुख्य उच्च शिक्षा के समक्ष आजकल अभिगम्यता, गुणवत्ता, औचित्य तथा संसाधन दबाव की चुनौतियाँ खड़ी है। दुनिया भर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने में सक्षम है और कई बार तो उच्च और आगामी शिक्षा में सुधार लाने के लिए वाद-विवाह और अनुप्रयोगों का विषय बनी है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के पक्ष में महत्वपूर्ण तर्क यह है कि पूर्णकालिक, लाभकारी व्यवसाय में रहते हुए भी व्यक्ति इस पद्धति से आगे पढ़ सकता है। या ऐसी अवस्था में जब कोई व्यक्ति परंपरागत संस्थाओं में प्रवेश लेने में अक्षम है या किन्हीं अन्य बाधाओं जैसे समय अभाव, वित्तीय बाधाओं या गतिशीलता का अभाव के कारण नहीं पढ़ पाता।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) दूरस्थ शिक्षा किस रूप में एक निवेश समझी जाती है? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

15.3 मानव पूँजी निर्माण तथा राष्ट्रीय विकास

भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा राष्ट्रीय तथा राज्यों के माध्यम से किए गए निरंतर प्रयासों से भौतिक (संरचनागत) तथा मानव पूँजी में महत्वपूर्ण विकास हुआ है। यद्यपि संरचनागत पूँजी का विकास मानव पूँजी की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से हुआ है। शिक्षा मानव पूँजी निर्माण में योगदान देने वाला एक महतवपूर्ण घटक समझी जाती है चाहे वह पूर्व बाल्यकाल अवस्था अथवा प्रौढ़ावस्था या जीवन की बाद की अवस्थाएँ हों। शिक्षा को जीवनपर्यन्त अधिगम की दृष्टि से देखा जाता है जिसके द्वारा समाज में उपलब्ध सभी संसाधन व्यक्तियों के अधिगम अनुभवों का एक पाटी बनाता हैं।

15.3.1 शिक्षा एवं मानव पूँजी निर्माण

पूँजी का सम्बन्ध उन परिसम्पत्तियों से होता है जिनसे भविष्य में आय की उत्पत्ति हो सकती है। भौतिक पूँजी में साजो सामान, मषीनरी, भवन जैसी चीजें सम्मिलित होती हैं जिनमें उत्पादी क्षमता होती है। मानव पूँजी में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों आयाम होते हैं। मात्रात्मक आयामों का सम्बन्ध अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या, रोजगार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों का अनुपात और किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए आवश्यक घंटों की संख्या। दूसरी ओर, गुणात्मक आयाम का संदर्भ, कौशलों की विविधता, ज्ञान का विस्तार या परिमाण, अभिवृत्ति, अभिक्षमता और मानव व्यक्तित्व के अन्य लक्षण जो मानवों की उत्पादनशीलता को प्रभावित करते हैं। भौतिक पूँजी का प्रभावी प्रयोग मानव पूँजी की गुणवत्ता तथा मात्रा पर निर्भर करता है जिनका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यों के निष्पादन में किया गया है या किया जाता है। तथापि, ऐसे कारक जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, जॉब पर रहते हुए प्रशिक्षण, गृह निर्माण तथा स्वच्छता, तकनीकी शिक्षा का आधुनिकीकरण, कर्मियों की गतिशीलता मानव पूँजी की गुणवत्ता तथा उत्पादनशील कार्य करने की योग्यता को निर्धारित हैं।

शिक्षा तथा प्रशिक्षण को मानव पूँजी का महत्वपूर्ण भाग माना जाता है; जितनी ऊँची शिक्षा या प्रशिक्षण का स्तर होगा, उतना ही ऊँचा व्यक्तियों द्वारा ज्ञान तथा तकनीकी जानकारी को उत्पन्न करने, उसका संरक्षण करने तथा उसका प्रचार करने की गुणवत्ता तथा क्षमता का स्तर होगा। शिक्षा तथा प्रशिक्षण जॉब या व्यवसाय के बेहतर संचालन में योगदान करते हैं। इनका योगदान वैज्ञानिक स्वभाव या मूल्य के विकास में भी होता है जो निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त निर्णय लेने के लिए अनिवार्य हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा तथा प्रशिक्षण नवाचार करने सम्बन्धी योग्यता के विकास की ओर ले जाते हैं जो आधुनिकीकरण तथा उत्पादकता में बढ़ोतरी के लिए सर्वाधिक अनिवार्य हैं।

शिक्षा का स्तर तथा इसकी विषयवस्तु मानव पूँजी निर्माण को निर्धारित करती है, अर्थात् कार्य बल, नए ज्ञान, कौशल, अनुभव तथा अभिवृत्ति की प्राप्ति का स्तर तथा विस्तार। शिक्षा तथा प्रशिक्षण का ऊँचा स्तर प्रबंधनीय, उद्यमीकरण तथा प्रशासकीय कौशलों के विकास की ओर योगदान देता है जिसकी आवश्यकता मानव पूँजी के प्रभावी और कुशल विकास के लिए पड़ती है जो उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक है। मानव पूँजी विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें काफी समय लगता है। किसी अभियंता, चिकित्सक, प्रबंधक अथवा अध्यापक को बनाने या प्रशिक्षित करने में काफी समय लगता है। कई कारक इस प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं जिसमें भोजन, कपड़े, मकान, शैक्षिक सुविधाएँ तथा अन्य संसाधन (जो व्यक्तिगत भी हो सकते हैं तथा सामाजिक भी)। इन सभी कारकों की आवश्यकता शिक्षा को जारी रखने के लिए तथा इसके अतिरिक्त लोगों की अभिवृत्ति और

इच्छा या सहयोगशीलता की आवश्यकता पड़ती है ताकि वे इस लम्बी कवायद को कर सकें। शिक्षा के द्वारा मानव पूँजी के निर्माण का स्तर उसकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर और कुल आबादी के लिए विभिन्न स्तरों पर श्रम बल का अनुपात से जाना जा सकता है।

15.3.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मानव पूँजी निर्माण

मानव पूँजी निर्माण को बढ़ाने के संदर्भ में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का महत्व और भी अधिक हो जाता है क्योंकि इससे भौतिक पूँजी निर्माण को या उत्पादकता को आगे बढ़ाया जा सकता है। कक्षाकक्ष आधारित परंपरागत शिक्षा से भिन्न मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की क्रियाविध में टीम कार्य, पूर्व निर्मित पाठ्यक्रम तथा बहुमीडिया अनुदेशात्मक वितरण सम्मिलित होते हैं जहाँ एक ओर मुद्रण, श्रव्य और दृश्य जनसंचार माध्यमों का उपयोग होता है, और दूसरी ओर कौशल विकास के लिए आकस्मिक या नियमित प्रत्यक्ष संपर्क सुविधाएँ, समूह चर्चा, व्यक्तिगत आधारित तथा समूह परियोजनाएँ तथा प्रयोगात्मक कार्य सम्मिलित होते हैं। तथापि, मुख्य रूप से अधिकांश शिक्षण-अधिगम दूर से ही होती है। (समय और स्थान दोनों की दृष्टि से)।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में ज्ञान हस्तांतरण कम लागत पर बहुत बड़े अध्येता समूह को किया जा सकता है। इस प्रणाली में ज्ञान का अद्यतन तथा उन्नयन निरंतर समवृत्तिक विकास कार्यक्रमों द्वारा संभव है। दूरस्थ शिक्षा में श्रव्य-दृश्य तथा वीडियो जनसंचार माध्यमों का व्यापक उपयोग चाक्षुष निदर्शन द्वारा कौशलों का विकास करता है, फिर भी इस प्रणाली में ट्यूटरों/मैंटरों की आवश्यकता होती है ताकि प्रभावी रूप में कौशल विकास हो सके। इसके अतिरिक्त, अल्पकालिक अधिगम के लिए खाली समय का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में, अपनी रूचि के क्षेत्र में, बहुत प्रयोज्य है। दूरस्थ शिक्षा उन लाभकारी लक्ष्य (हाबीस) की भी संतुष्टि करती है जो हम अपने व्यवसाय करते हुए सीखना चाहते हैं या अधिगम के दौरान कमाई करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा शैक्षिक गुणवत्ता तथा जीवन पर्यंत अधिगम/शिक्षा के लक्ष्य की ओर योगदान देती है क्योंकि इसके लिए ग़ैर-औपचारिक कक्षा की आवश्यकता होती है जिसके लिए सामुदायिक शिक्षा संसाधनों को अधिकतम उपयोग करना चाहिए होगा।

15.3.3 शिक्षा/मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में उत्पादन प्रकार्य

संसाधन आबंटन पर निर्णयों की प्रभाविता का अध्ययन करने के लिए अर्थशास्त्रियों प्रायः उत्पादन प्रकार्य का उपयोग एक सैद्धान्तिक सम्प्रत्यय के रूप में करते हैं। किसी फर्म में उत्पादन की संभावनाएँ निवेश और निर्गत के सम्बन्ध पर निर्भर होती है, अर्थात् इस बात पर निर्भर होती है कि कुछ दिए गए निवेशों के समुच्चय या संयोजन से अधिकतम निर्गत कैसे किया जा सकती है। इसी प्रकार, एक शैक्षिक प्रणाली में उत्पादन प्रकार्य, निवेश-निर्गत सम्बन्ध पर भी होता है। शैक्षिक उत्पादकता, जो हम सबका सरोकार है, वह वर्तमान शैक्षिक निर्गत है (जैसे विद्यार्थियों, शैक्षिक सामग्री, नवाचारी विधियों और जनसंचार माध्यम, अच्छा प्रबंधन शैलियाँ इत्यादि), जिसे भूतकाल में मानव, वित्तीय तथा पदार्थिक संसाधनों से प्राप्त किया गया है। किसी नियत समय पर समग्र शैक्षिक निर्गत तथा समग्र शैक्षिक निवेश का सम्बन्ध शिक्षा की ***औसत शैक्षिक उत्पादकता*** कहलाती है तथा बढ़ी हुई निर्गत, जो शैक्षिक निवेश की अतिरिक्त इकाई से निकला है, इसे ***शिक्षा की सीमांत उत्पादकता*** कहलाती है।

इस प्रकार, शिक्षा में उत्पादन प्रकार्य वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक निवेश और शैक्षिक निर्गत के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में निवेश इस प्रकार

होगाः अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों की संख्या, विद्यार्थियों की संख्या, संस्था का आकार, शिक्षण प्रक्रिया, अध्यापक-विद्यार्थी अनुपात और अंतःक्रिया, शैक्षणिक सामग्री, नियत कार्य (सत्रीय कार्य) पर दी गई टिप्पणियाँ तथा ग्रेड, अध्ययन केन्द्रों पर दिया गया परामर्श और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है दूर विद्यार्थियों द्वारा किया गया निजी अध्ययन। बताए आप निर्गत के विषय में क्या सोचते हैं? स्पष्टतः एक चर जो समझ में आता है वह है प्रणाली से निकले स्नातक अन्य निर्गत हो सकते हैं। कर्मचारियों की योग्यता जिससे वे अपने व्यवसाय में ज्ञान और कौशलों का अनुप्रयोग कर सकते हें, उनकी ऊर्ध्वाधर सम्वृत्तिक (व्यावसायिक) गतिशीलता, भविष्य में उनकी अर्जन प्रोफाइल इत्यादि। दूरस्थ शिक्षा में, कुछ क्रियाकलाप, जैसे पाठ्यक्रम स्वरूपन तथा विकास तथा उत्पादन, विद्यार्थियों के प्रवेश से पूर्व ही पूरे किए जाते हैं। अतः इन निष्पत्तियों को भी निर्गत ही कहा जाता है। इस प्रकार, शिक्षा उत्पादन प्रक्रिया का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से निवेश की निश्चित मात्रा/गुण निर्गत में रूपांतरित किए जा सकते हैं और जो आर्थिक विकास तथा सामाजिक/सांस्कृतिक रूपांतरण के लिए अनिवार्य है जैसे प्रणाली के अंतर्गत उत्तीर्ण हुए स्नातक अथवा तैयार की गई शिक्षण सामग्री। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह रूपांतरण घटित होता है दूरस्थ शिक्षा में प्रायः अदृश्य होती है। दूरस्थ शिक्षा में अध्येता का अधिगम सभी क्रियाकलापों का केन्द्र माना जाता है और यह अधिगम प्रक्रिया इसमें सम्मिलित अधिकांश व्यक्तियों के लिए अज्ञात होती है।

अतः कार्यक्रम मूल्यांकन के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि उन अदृश्य प्रक्रियाओं की जाँच की जाए ताकि इनका सम्बन्ध आर्थिक परिप्रेक्ष्यों से स्थापित किया जा सके और सार्थक निष्कर्ष निकाले जा सके। यद्यपि मात्रात्मक आँकड़ों तथा संकेतक ऐसे मूल्यांकन के लिए अनिवार्य होते हैं तथापि भविष्य में प्रक्रिया को सुधारने और इसकी अच्छी समझ प्राप्त करने के लिए गुणात्मक आँकड़े ही अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। जैसा कि आपने इकाई 14 में अध्ययन किया है, उत्तरदायित्व परिप्रेक्ष्य के आधार पर और मात्रात्मक (संख्यात्मक) आधार पर किया गया मूल्यांकन जाँच की जा रही घटना की व्याख्या करने के लिए अपर्याप्त होगा। प्रक्रिया पर लगी लागत को भी यदि अलग से अध्ययन किया जाए तो यह भी भ्रामक होगी और इन्हें भी प्रक्रिया के संदर्भ में देखना अनिवार्य है, अर्थात् विद्यार्थियों के अधिगम की गुणवत्ता तथा दी गई सेवाओं की गुणवत्ता – ताकि सार्थक निष्कर्षों और अनुषंसाओं तक पहुँचा जा सके।

15.3.4 लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता

जैसा कि हमने इस इकाई की प्रस्तावना में देखा कि, दूरस्थ शिक्षा में आर्थिक विश्लेषण तथा कार्यक्रम मूल्यांकन के लिए लागत-प्रभाविता और लागत-क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लागत प्रभाविता का अर्थ है भौतिक, मानव तथा वित्तीय संसाधनों की दी गई मात्रा के अंदर पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की संप्राप्ति। जबकि लागत-क्षमता का अर्थ है कम लागत के साथ दी गई निर्गत की संप्राप्ति या दी गई लागत के साथ निर्गत में बढ़ोतरी करना। यदि हम मल्टीमीडिया पैकेज का निर्माण समय पर कर देते हैं, समय पर विद्यार्थियों को प्रवेश दे पाते हैं और सामग्री को समय पर बंटित कर देते हैं, परामर्श और सतत् मूल्यांकन को उचित तरीके से व्यवस्थित कर देते हैं, विद्यार्थियों का निर्देशन उनकी संतुष्टि के अनुसार प्रभावी रूप से कर देते हैं, समय पर परीक्षा का आयोजन कर लेते हैं और परिणाम की घोषणा भी समय पर कर देते हैं और डिग्रियाँ भी समय पर प्रदान कर देते हैं और ये सभी चीजें निर्धारित खर्च के अंदर और सभी क्रियाकलाप के लिए पूर्व निर्धारित निष्पादन संकेतकों के अनुरूप तो समझिए कि हम अपनी संक्रियाओं में लागत-प्रभावी हैं। दूसरी ओर, यदि हम दिए गए समय और लागत के अंदर अधिक कुशलता और अधिक निर्गत या यदि हम उन्हीं

उद्देश्यों/निर्गत को कम समय या घटी लागत से प्राप्त कर सकते हैं तो हम लागत-कुशल कहलाएँगे।

ऊपर दर्शाए गए क्रियाकलापों का मूल्यांकन करने के लिए, विभिन्न प्रकार के प्रतिदर्शों का अलग-अलग उपकरणों की संचालित करने की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन सम्बन्धी कवायद करते समय प्रायः लागत-प्रभाविता तथा लागत-क्षमता की अवहेलना कर दी जाती है। इससे न केवल हमें इस बात का पता चलता है कि संसाधनों का उपयोग किफायती रूप से कैसे किया जाए या किस भाँति प्रभावी वैकल्पिक उपयोगों के लिए किस प्रकार निर्णय लिए जाएँ अपितु यह भी पता चलता है कि हमारे पास उपलब्ध शैक्षणिक और मानव संसाधनों की ***प्रभाविता का स्तर*** क्या है। और ये सभी चीजें संगठन या व्यवस्था की कुशलता और निर्गत को बढ़ाने के लिए अति महत्वपूर्ण हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) संक्षिप्त रूप में बताएँ कि मानव पूँजी निर्माण के लिए शिक्षा किस प्रकार योगदान देती है।

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 विभिन्न प्रकार के लागत : कारक तथा प्रकार्य

शैक्षिक कार्यक्रमों तथा प्रणाली की कुशलता के मूल्यांकन में इस बात का अनुमान लगाना कि कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें कितने धन की आवश्यकता पड़ेगी और इसका उपयोग कितने किफायती ढंग से किया गया है, महत्वपूर्ण होता है। वह आधार जिन पर इनके विश्लेषण किए जाते हैं, "इकाई लागत" कहलाती हैः अर्थात् प्रति विद्यार्थी लागत या प्रति कोई अन्य इकाई। इससे पूर्व कि हम उन विभिन्न कारकों का पता लगाएँ जो दूरस्थ शिक्षा की लागत को प्रभावित करते हैं और इन लागतों की गणना करें, आइए, दूरस्थ शिक्षा के आर्थिक विश्लेषण में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की लागतों पर एक नजर डालें।

15.4.1 लागत के प्रकार

लागतों के प्रकार जिनकी विवेचना शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा में की जाती है उन्हें लेखा-बही (लेखाशास्त्र या लेखाविद्या) तथा आर्थिक सिद्धान्त से उद्धृत किया गया है। लेखा-बही में जिन विभिन्न की लागतों का जिक्र किया जाता है वे हैंः श्रम लागत, सीमांत लागत, पूँजी लागत, परिचालन लागत, प्रत्यक्ष लागत, अप्रत्यक्ष लागत इत्यादि। दूसरी ओर, लागत विश्लेषण की दृष्टि से जिन्हें आर्थिक सिद्धान्तों से उद्धृत किया गया है, लागतों के प्रकार हैंः निश्चित या अचल लागत, परिवर्ती या चल लागत, औसत लागत, सीमांत लागत, कुल लागत इत्यादि। शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा के लिए लागत विश्लेषण में लागत गणना और

विभिन्न संस्थाओं की व्यवस्थाओं और प्रणालियों या राष्ट्रीय सीमाओं की तुलना करने में दूसरी श्रेणी की लागत का प्रयोग किया जाता है। इन लागतों के प्रकार निम्नलिखित हैं।

अचल (निश्चित) और परिवर्ती लागत

शिक्षा प्रणाली के लागत निर्धारण में लागत को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है : अचल लागत और परिवर्ती लागत। अचल लागत वे होती हैं जो प्रणाली के संचालन के परिमाण में परिवर्तन के बावजूद भी नहीं बदलती तथा परिवर्ती लागत वे होती हैं जो संक्रिया के परिणाम में या उत्पादन में परिवर्तन के साथ बदलती रहती हैं। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि कैम्पस (परिसर) आधारित शिक्षा में भवन निर्माण में लगाई गई पूँजी अचल लागत कहलाएगी; जबकि प्रति वर्ष उनके रखरखाव में होने वाली लागत परिवर्ती लागत कहलाएगी। ये परिवर्ती लागत परिमाण पर निर्भर करती हैं जेसे कक्षाकक्षों, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, हॉस्टल इत्यादि की संख्या और उनके आकार। निश्चित (अचल) लागत प्रायः शैक्षिक संस्थाओं द्वारा एकमुष्त लगाई गई लागत है, उन सभी के लिए जो व्यवस्था से सम्बन्धित हैं। इससे आगे, हम कह सकते हैं कि इन लागतों को प्रयोक्ताओं के किसी समूह को इकाई लागत की गणना करने के लिए नहीं दिया जा सकता है, निःसंदेह इकाई लागत के आँकलन के लिए उन विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों या क्रियाकलाप में इकाई लागत की गणना करने के लिए विभाजित किया जा सकता है। अचल लागतों को ग़ैर-आवंतक लागत भी कहा जाता है।

जहाँ एक ओर अचल लागते संस्था की सक्रिय मापनी पर निर्भर नहीं करती, जबकि परिवर्ती लागतें विशिष्ट संक्रियाओं की मापनी अथवा परिमाण पर निर्भर करती है। ये बाद वाली लागतें प्रणाली संक्रिया के परिवर्ती कारकों पर निर्भर करती है। उदाहरणार्थ, स्थाई अध्यापकों के वेतन पर किया गया खर्च अचल लागत कहलता है (जो किसी कक्षा में प्रवेश विद्यार्थियों की संख्या पर निर्भर नहीं करता) जबकि प्रयोगशाला के लिए खरीदे गए तथा प्रयुक्त रासायनिकों पर आया खर्च परिवर्ती लागत कहलाएगा क्योंकि यह विद्यार्थियों की संख्या पर निर्भर करता है। ये लागतें आवर्ती लागतें कहलाती है और इनका निर्धारत अध्यापक-विद्यार्थी अनुपात, भवन की क्षमता, पाठ्यक्रम की प्रकृति इत्यादि पर होती है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि ये लागतों के खंड हैं जो विद्यार्थियों की संख्या और अन्य संबद्ध कारकों पर निर्भर करती है। ऐसी लागतें परिवर्ती लागत कहलाती है।

दूरस्थ शिक्षा में पूँजीगत निवेश काफी लम्बे समय के लिए निश्चित होते हैं, इसी प्रकार स्थायी संकाय और अन्य कर्मचारियों का वेतन भी निष्यित होता है क्योंकि यह इस बात पर निर्भरर नहीं करता कि कितने विद्यार्थियों का पंजीकरण है। अचल लागत ऐसे मदों के लिए भी लागू होती है जैसे मुद्रित सामग्री कैमरा रेडी कॉपी (सी.आर.सी.) का निर्माण तथा उत्पादन या श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम की प्रथम प्रति। ये लागतें तो अनिवार्य रूप से आएँगी ही चाहे संस्था में एक विद्यार्थी पंजीकृत हो अथवा दस हजार विद्यार्थी किसी कार्यक्रम विशेष में पंजीकृत होते हैं। परंतु, जब इन मॉडल सामग्रियों की बहुत सारी कापी चाहिए और इन्हें बड़े पैमाने पर उत्पादित करने की आवश्यकता हो तो जो विद्यार्थियों की संख्या पर निर्भर करता है तो यही मद आवर्ती लागत बन जाती है।

औसत और सीमांत लागत

मुख्य रूप से, दो प्रकार की लागत प्रयोग में लाई जाती हैंः समग्र लागत तथा इकाई लागत। इकाई लागत का प्रयोग बेहतर समझ तथा संस्था के अंदर विभिन्न संस्थाओं की तुलना करने के लिए किया जाता है। इकाई लागत एक इकाई की लागत पर आधारित होती है – जैसे एक विद्यार्थी, पाठ्यक्रम, कार्यक्रम, क्रेडिट इत्यादि। प्रति विद्यार्थी लागत का

अर्थ प्रति पंजीकृत विद्यार्थी, प्रति विद्यार्थी जो पाठ्यक्रम विशेष में पंजीकृत है या प्रति स्नातक इत्यादि। लागतों की तुलना प्रायः प्रति पंजीकृत विद्यार्थी को ध्यान में रखकर की जाती है। पंजीकृत विद्यार्थियों की इकाई लागत मापने के दो तरीके होते हैं, औसत लागत अर्थात् लागत प्रति पंजीकृत विद्यार्थी (इसे कुल पंजीकृत विद्यार्थी के कुल खर्च को कुल विद्यार्थियों की संख्या से विभाजित करके निकाला जाता है), तथा सीमांत लागत अर्थात लागत प्रति अतिरिक्त पंजीकृत विद्यार्थी – उन विद्यार्थियों से भिन्न जो पहले पंजीकृत हो चुके हैं (इसकी माप करने के लिए अतिरिक्त लागत को अतिरिक्त विद्यार्थियों की संख्या से विभाजित किया जाता है)।

लागत और इकाई के आकार के मध्य सम्बन्ध औसत और सीमांत लागत के मध्य सम्बन्ध के विचरण को निर्धारित करता है। जब पंजीकरण बढ़ता है तो स्पष्टतया कुल लागत बढ़ जाएगी परंतु इस अवस्थिति में औसत लागत और सीमांत लागत का व्यवहार कुछ अलग होगा। शैक्षिक अवस्थितियों में यह अचल और परिवर्ती लागतों की प्रकृति के कारण होता है। हम एक उदाहरण के माध्यम से इस बिंदु को देखते हैं। कल्पना कीजिए कि किसी दूर शिक्षा कार्यक्रम में 1000 पंजीकृत विद्यार्थी हैं और संस्था की ओर से इस कार्यक्रम पर कुल खर्च 50,000 रुपए किया गया है जिसमें 30,000 रुपए अचल लागत है और 20,000 रुपए परिवर्ती लागत है। इस अवस्था में औसत कुल लागत 50 रुपए होगी (कुल लागत ÷ विद्यार्थियों की कुल संख्या)। औसत अचल लागत 30 रुपए होगी (कुल अचल लागत ÷ विद्यार्थियों की कुल संख्या) तथा औसत परिवर्ती लागत 20 रुपए होगी (कुल परिवर्ति लागत ÷ विद्यार्थियों की कुल संख्या)। अब कल्पना कीजिए कि उक्त संस्था ने एक अतिरिक्त विद्यार्थी पंजीकृत किया जिसपर कुल लागत 200 रुपए आई। ऐसी अवस्था में, इस अतिरिक्त लागत ने सभी प्रकार की लागतों को प्रभावित कर दियाः कुल लागत 50,200 रुपए होगी जिसमें 30,000 रुपए अचल लागत है और 20,200 रुपए परिवर्ती लागत है। तथापि, औसत लागत सार्थक रूप से बदल जाएगी : इस अवस्था में, औसत अचल लागत 29.97 रुपए होगी; औसत परिवर्ती लागत 20.18 रुपए; तथा औसत कुल लागत 50.15 रुपए; जबकि जबकि सीमांत लागत 200 रुपए ही होगी। इन लागतों के अवलोकन से आप पाएँगे कि औसत अचल लागत में कमी आई है परंतु औसत परिवर्ती लागत तथा औसत कुल लागत में बढ़ोतरी हो गई है। अतः सीमांत लागत में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है कि क्या लागत का अधिकांश भाग अचल है अथवा परिवर्ती, और क्या संसाधनों का उपयोग अधिकतम सीमा तक हुआ है और बिना अतिरिक्त खर्च किए वर्तमान लागत में अतिरिक्त विद्यार्थियों को पंजीकृत किया जा सकता है अथवा नहीं।

15.4.2 लागत को प्रभावित करने वाले कारक

किसी भी दूरस्थ शिक्षा संस्था के संचालन में बहुत सारे लागत केन्द्र और लागत मद होते हैं जो या तो अचल होंगे या परिवर्ती। संक्रिया के मुख्य शीर्षकों में पाठ्यक्रम रूपरेखा (डिजाइन) तथा विकास (मुद्रित या ग़ैर-मुद्रित पैकेज दोनों), प्रचार तथा प्रवेश, सामग्री मुद्रण तथा वितरण, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ, और मूल्यांकन तथा प्रमाणन। संस्था के विभिन्न निकायों के संचालन के लिए एक मुख्य चर जिसमें कुल खर्च का मुख्य भाग (40 प्रतिशत – 50 प्रतिशत) खर्च हो जाता है। वह है वेतन। बल्कि कैम्पस-आधारित प्रणाली में वेतन का हिस्सा कुल आवर्ती खर्च का लगभग 95 प्रतिशत हो जाता है। मुख्य कारक जो दूरस्थ शिक्षा में लागत को प्रभावित करते हैं, निम्नलिखित होते हैं :

i) **प्रस्तावित पाठ्यक्रमों की संख्या** : किसी दूरस्थ शिक्षा संस्था द्वारा जितने अधिक पाठ्यक्रम प्रस्तावित किए जाएँगे उसका अर्थ होगा कि उतना ही अधिक डिजाइन तथा विकास करना होगा और अतः उतनी ही अधिक उसकी कुल लागत बढ़ेगी।

पाठ्य सामग्री में इसका मुद्रण, श्रव्य, दृश्य और अन्य सहायक सामग्री होगी और इनके विकास में कुछ अचल लागत सम्मिलित होंगी जो विद्यार्थियों की संख्या से सम्बन्धित नहीं होती। इस कारक के कारण लागत उस अवस्था में बढ़ती है जब विद्यार्थियों के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों की संख्या में बहुत सारे विकल्प होंगे। लागत के अंदर कार्यक्रम का कार्यान्वयन, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम रखरखाव, तथा इनका पुनरीक्षण सम्मिलित होते हैं।

ii) **पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया :** शायद आपको पहले से विदित है कि, ब्रिटिश मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम डिजाइन तथा विकास के लिए अपनाए गए पाठ्यक्रम उपागम के फलस्वरू टीम उपागमों की अपेक्षा बहुत अधिक व्यय करना पड़ा, यद्यपि इस उपागम के द्वारा जो पाठ्यक्रम सामग्री तैयार हुई उसकी गुणवत्ता औरों की अपेक्षा बहुत अधिक थी। कुल लागत को जो कारक प्रभावित करते हैं वे हैं : अपनाई गई प्रक्रिया, लगाया गया समय, कुछ व्यक्तियों की संख्या जो सम्मिलित होते हैं और उनकी विशेषज्ञता तथा निपुणता इत्यादि। ऐसा करने के लिए अन्य विधियाँ भी हैं, जैसे विशिष्ट व्यक्तिगत प्रशिक्षण तथा व्यक्तियों द्वारा पाठ्यक्रम सामग्री का विकास, कार्यशालाओं के माध्यम से पाठ्यक्रम सामग्री का विकास और उसके लिए दिया गया प्रशिक्षण इत्यादि। टीम उपागम की अपेक्षा इस दूसरी विधि में कम संसाधनों का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त, इस प्रकार के निर्णय कि क्या नए पाठ्यक्रमों का विकास करना है अथवा पहले से विकसित पाठ्यक्रमों को अपनाना है, क्या इन पाठ्यक्रमों को दूसरी भाषाओं में अनुवादित करना है अथवा उन्हीं शीर्षकों पर दूसरी भाषाओं में नई सामग्री लिखवानी है, और पूर्णकालिक संकाय का उपयोग करना है अथवा अंशकालिक संकाय सदस्यों को लगाना है; उपर्युक्त, निर्णय सस्था या कार्यक्रम की इकाई लागत को प्रभावित करते हैं। चूंकि पाठ्यक्रम विकास में सम्मिलित व्यक्तियों पर की गई लागत काफी अधिक होती है, अतः यदि अंशकालिक संकाय सदस्यों का उपयोग किया जाए तो कुल लागत काफी कम हो सकती है।

iii) **संकाय सदस्यों का उपयोग** : यदि कोई दूरस्थ शिक्षा संस्था अंशकालीन संकाय सदस्यों का उपयोग करती है जैसा कि ब्रिटिश मुक्त विश्वविद्यालय या इग्नू में होता है तो कुल लागत काफी हद तक कम हो जाएगी। यदि किसी नए शैक्षणिक पाठ्यक्रम के लिए स्थायी आधार पर एक नए संकाय सदस्य को लगाया जाता है तो इससे कार्यक्रम की कुल लागत को बढ़ जाएगी परंतु इसका लाभ यह होगा कि यह संकाय सदस्य कल इसके रखरखाव की ओर योगदान देगा और इसे भविष्य में इसकी इकाई लागत कम हो जाएगी (यदि यह स्थायी संकाय सदस्य कोई अन्य मुख्य पाठ्यक्रम विकास कार्य नहीं करता है)। बहुत से दूरस्थ शिक्षा संस्था ऐसे हैं जो कुल लागत को कम करने में सफल हुए हैं और इस प्रकार इकानॉमी ऑफ स्केल प्राप्त की है; परंतु इसके लिए उन्होंने परामर्शदाता के रूप में अंशकालिक संकाय सदस्यों को लगाया है। वैकल्पिक रूप में, जैसा कि ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों में देखा गया है, पूर्णकालिक कैम्पस आधारित अध्यापक दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों को भी पढ़ाते हैं, और इस प्रकार आवर्ती खर्च कम कर देते हैं।

iv) **विद्यार्थी पंजीकरण :** यदि कोई संस्था विद्यार्थी पंजीकरण को एक परिणाम के रूप में देखती है तो बढ़ता हुआ पंजीकरण यद्यपि आवर्ती लागत को बढ़ाता है, परंतु इससे इकाई लागत कम हो जाती है, क्योंकि इससे अचल लागत बढ़ते हुए विद्यार्थियों की संख्या से विभाजित हो जाती है। इस वजह से एक दूरस्थ शिक्षा संस्था अपने पाठ्यक्रम डिजाइन तथा विकास प्रक्रियाओं की गुणवत्ता को बढ़ाने में सफल हो जाती है (जिसमें पाठ्यक्रम लेखकों, संपादकों, शैक्षणिक डिजाइनरों तथा मीडिया विशेषज्ञों

को ऊँची दर से अदायगी सम्मिलित है) और इस प्रकार पाठ्यक्रम पैकेजों की गुणवत्ता बढ़ जाती है क्योंकि यह अतिरिक्त लागत बढ़े हुए विद्यार्थियों में विभाजित हो जाती है। दूसरी तरफ, इन प्रक्रियाओं पर अधिक निवेश करना मुश्किल हो जाता है, अगर शुरुवात में यह साफ हो जाता है कि प्रस्ताव पर कुछ ही विद्यार्थियों कार्यक्रमा में प्रवेश ले लेते हैं। अतः कुल कार्यक्रम लागत को कम करने के लिए या तो पंजीकरण को बढ़ाना पड़ेगा या विद्यार्थियों के शुल्क में वृद्धि करनी पड़ेगी। जब विद्यार्थी पंजीकरण कम होगा तो परिवर्ती लागत तो कम होगी परंतु यदि विद्यार्थियों की संख्या अधिक होगी तो इकॉनॉमी ऑफ स्केल (बड़े पैमाने पर की गई किफायत) संभव हो जाएगी यदि परिवर्ती लागत के अंतर्गत आने वाले खर्च के कुछ मद अचर लागत की ओर स्थानांतरित कर दिए जाए।

v) **आनुदेशिक मीडिया का चयन** : भारत में और संभवतः अन्य देशों में भी अधिकांश दूरस्थ शिक्षा संस्थाएँ दूरस्थ शिक्षण-अधिगम के मुद्रण मीडिया का प्रयोग करते हैं जो स्व-अनुदेशी मुद्रण सामग्री के रूप में होती है। कुछ, एक जैसे कि चीन का केन्द्रीय रेडियो और टेलीविजन विश्वविद्यालय तथा कनाडा का अथाबस्का विश्वविद्यालय मुख्यतः ग़ैर-मुद्रण मीडिया का प्रयोग करते हैं। प्रायः अधिकांश दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं में मल्टीमीडिया पैकेज (मीडिया-मिक्स) का प्रयोग करते हैं जिसमें परिष्कृत मीडिया या तो पूरक अनुपूरक रूप में सम्मिलित करते हैं। परिष्कृत इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग, जैसे टेलीकॉन्फ्रेंसिंग तथा इंट्रैक्टिव वीडियो से अचल लागत में वृद्धि हो जाती है। इस रूपरेखा के अंतर्गत यदि मीडिया आधारित पाठ्यक्रमों को उत्पाद के रूप में समझा जाएगा तो मीडिया का बड़े पैमाने पर उपयोग अचर लागत को बढ़ाएगा और यदि विद्यार्थियों को उत्पाद के रूप में लिया जाएगा तो विद्यार्थियों का अधिक पंजीकरण इकाई लागत और सीमांत लागत को कम करेगा। ऐसी अवस्था में दूरस्थ शिक्षा कैम्पस आधारित शिक्षा की तुलना में अधिक सस्ती हो जाएगी और अतः यह वहन करने योग्य होगी।

15.4.3 लागत के प्रकार्य

ऊपर दिए गए भाग 15.4.1 में, आपने देखा कि अचर और परिवर्ती लागत दोनों मिलकर कुल लागत कहलाती है। यदि क्रियाकलाप की मात्रा या परिमाण बदल भी जाए तो भी अचल लागत नहीं बदलती, सिवाय उस अवस्था के जब क्रियाकलाप का परिमाण (स्केल) में सार्थक परिवर्तन हो जाए। दूसरी ओर, परिवर्ती लागतें क्रियाकलाप की स्केल से सीधे रूप में सम्बन्धित होती हैं और तदनुसार ये बदलती रहती हैं। परंपरागत औपचारिक शिक्षा में लागत कार्य परिवर्ती लागतों से अत्यधिक रूप में प्रभावित होता है जो विद्यार्थियों की संख्या पर निर्भर करता है। दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक मीडिया की श्रेणी से प्रतिस्थापित हो जाता है जिसका प्रयोग एक अप्रत्यक्ष (mediated) संप्रेषण के लिए होता है, और यह प्रतिस्थापन दूरस्थ शिक्षा में लागत प्रकार्य को बदल देता है। विद्यार्थियों के प्रवेश लेने से पूर्व कुछ मदों और प्रक्रियाओं पर काफी मात्रा में धन खर्च किया जाता है। इन में स्व-अनुदेशी पाठ्य सामग्री जैसे मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, रेडियो तथा टेलीविजन कार्यक्रमों की तैयारी शामिल है। और, इन सामग्रियों का मुद्रण या उत्पादन लागत किसी कार्यक्रम/ पाठ्यक्रम में पंजीकृत विद्यार्थियों की वास्तविक संख्या पर निर्भर करती है।

दूरस्थ शिक्षा में लागत के प्रकार्य सरलतम रूप में नीचे दिए जा रहे हैं :

$TC = F + VN$ जहाँ,

TC = कुल लागत

F = अचल लागत

V = परिवर्ती लागत

N = उत्पादन की गई इकाइयों की संख्या

रैखिक लागत प्रकार्यों (linear cost function) की अवस्था में (कुल लागत की दृष्टि से) औसत लागत की गणना अचल लागत को निर्गत से विभाजित करने तथा परिणाम में परिवर्ती लागत जोड़ने से की जाती है।

$AC = F/N + V$

जहाँ,

AC = औसत लागत

F = अचल लागत

N = निर्गत की गई इकाइयों की संख्या

V = परिवर्ती लागत

दूरस्थ शिक्षा में, पंजीकृत कुल विद्यार्थियों की संख्या और उत्पादित पाठ्यक्रमों की संख्या मुख्य रूप से कुल लागत का निर्धारण करती हैं। इस प्रकार, कुल लागत को पुनः इस प्रकार लिखा जा सकता है :

$TC = a + bx + cy$

जहाँ,

TC = Total Cost

a = अचल लागत

b = प्रति पाठ्यक्रम औसत लागत

c = प्रति विद्यार्थी औसत लागत

x = पाठ्यक्रमों की संख्या

y = विद्यार्थियों की संख्या

प्रति पाठ्यक्रम और प्रति विद्यार्थी औसत लागत का निर्धारण विद्यार्थियों तथा पाठ्यक्रमों की कुल लागत को क्रमशः विद्यार्थियों की कुल संख्या तथा पाठ्यक्रमों की कुल संख्या से विभाजित कर निकाला जा सकता है (स्मरण रहे कुल जितने पाठ्यक्रम मुद्रित किए गए हैं आवश्यक नहीं कि वे सभी नए ही हो)। पाठ्यक्रम में वे भी हो सकते हैं जो पहले से उत्पादित हैं और अब वे चल रहे हैं इन्हें केवल सुरक्षित रखा जाता है तथा वे हो सकते हैं जिन्हें पहली बार नए सिरे से विकसित किया गया है। इस अवस्था में, लागत प्रकार्य आगे विस्तारित हो जाता है और इसमें दोनों परिप्रेक्ष्यों को सम्मिलित किया जाता है :

$TC = a + bCn + cCm + dSn$

जहाँ,

TC = कुल लागत

a = अचल लागत

b = नए पाठ्यक्रमों की संख्या का गुणांक

Cn = नए पाठ्यक्रमों की संख्या

c = सुरक्षित रखे गए पाठ्यक्रमों की संख्या का गुणांक

Cm = सुरक्षित रखे गए पाठ्यक्रमों की संख्या

d = नए विद्यार्थियों की संख्या का गुणांक

Sn = विद्यार्थियों की संख्या

नए पाठ्यक्रमों, सुरक्षित रखे गए पाठ्यक्रमों तथा विद्यार्थियों के गुणांकों की गणना तीनों मदों की कुल लागत को क्रमशः उस वर्ष में प्रस्तावित नए पाठ्यक्रमों की संख्या, उस वर्ष सुरक्षित रखे गए पाठ्यक्रमों की संख्या और विद्यार्थियों की वास्तविक संख्या से विभाजित कर निकाले जा सकते हैं।

लागत प्रकार्य उस अवस्था में परिवर्तित हो जाता है जब निर्गत या गतिविधि की मात्रा पर लागत की निर्भरता को ध्यान में रखा जाता है। किसी भी दूरस्थ शिक्षा संस्था के लिए चार तंत्रों महत्वपूर्ण और उभयनिष्ठ होती हैं और लगभग सभी क्रियाकलापों को इनसे प्रत्येक तंत्र में वर्गीकृत किया जा सकता है। वे चार तंत्र जो दूरस्थ शिक्षा के कुल व्यवस्था का निर्माण करती हैं अथवा उसके भाग हैं, निम्नलिखित हैं :

- उत्पादन तंत्र (p)
- आनुदेशिक तंत्र (i)
- मूल्यांकन तंत्र (e)
- प्रशासनिक तंत्र (a)

यदि कुल लागत कुल अचल लागत और कुल परिवर्ती लागत के योग के समान है तो, इसका समीकरण निम्न प्रकार से होगा :

$TC = TF + TV$

तो कुल अचल लागत होगी,

$TF = TFp + TFi + TFe + TFa$

जहाँ,

TFp = उत्पादन तंत्र की कुल अचल लागत

TFi = आनुदेशिक तंत्र की कुल अचल लागत

TFe = मूल्यांकन तंत्र की कुल अचल लागत

TFa = प्रशासनिक तंत्र की कुल अचल लागत

कुल परिवर्ती लागत होगी :

$TV = TVp + TVi + TVe + TVa$

जहाँ,

TVp = उत्पादन तंत्र की कुल परिवर्ती लागत

TVi = आनुदेशिक तंत्र की कुल परिवर्ती लागत

TVe = मूल्यांकन तंत्र की कुल परिवर्ती लागत

TVa = प्रशासनिक तंत्र की कुल परिवर्ती लागत

अतः कुल लागत सभी चारों तंत्रों की कुल अचल लागत और कुल परिवर्ती लागत के योग के समान होगी :

$TC = (TFp + TFi + TFe + TFa) + (TVp + TVi + TVe + TVa)$

किसी दूरस्थ शिक्षा संस्था की लागत की अंतिम गणना अतः उत्पादन, अनुदेश मीडिया मिक्स के साथ मूल्यांकन और प्रशासन के तरीके पर निर्भर करेगी।

15.5 दूरस्थ शिक्षा में मितव्ययता या अर्थव्यवस्था के पैमाने/माप-लाघव

किसी कार्यक्रम के मूल्यांकन के संदर्भ में, कुछ सूक्ष्म क्षेत्रों के साथ-साथ निर्णयन प्रक्रिया से सम्बन्धित कुछ स्थूल या वृहत विषयों को भी ध्यान में रखा जाता है। किसी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की व्यवहार्यता के लिए परिमाण लाघव (बड़े पैमानें की किफायतें) एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्षण होता है।

दत्त (1988) ने भारतीय विश्वविद्यालयों में औपचारिक कैंपस आधारित और पत्राचार शैक्षिक कार्यक्रमों के अध्ययन में पाया कि आर्थिक रूप से व्यवहार्य होने के लिए किसी विश्वविद्यालय में कम से कम 10,000 (दस हज़ार) विद्यार्थी होने अनिवार्य हैं। भारत में विश्वविद्यालयों में पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रम इस निकष (मानदंड) पर खरे नहीं उतरते।

आइए, हम इग्नू के संदर्भ में इसकी परख करें और देखें कि किस सीमा तक कोई विश्वविद्यालय बड़े परिमाण लाघव (पैमानें की किफायतें) को प्राप्त कर सकता है। पंजीकरण की अनुकूलतम सीमा (परिमाण) जिसमें कोई विश्वविद्यालय परिमाण लाघव को प्राप्त कर सकता है के लिए निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ दी जाती हैं। दिए गए आँकड़े पिल्लाई और नायडू (1991) द्वारा किए गए अध्ययन पर आधारित हैं :

- पंजीकरण का परिमाण कोई भी हो कुल अचल लागत (प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष) दोनों अचल रहेंगी।
- अर्ध परिवर्ती लागतों का कुछ भाग (उदाहरणार्थ कर्मचारियों का वेतन), वर्तमान के इस निर्णय के निरपेक्ष कि अधिक या कम विद्यार्थी पंजीकृत करने हैं, पहले ही खर्च किया गया है। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय ने पहले ही विश्वविद्यालय के कुछ प्रभागों पर 12,50,80,000 रुपए कर्मचारियों के वेतन पर खर्च कर दिए हैं जिनमें प्रवेश प्रभाग (पंजीकरण प्रभाग), मूल्यांकन प्रभाग, उस समय का संचार विभाग, क्षेत्रीय सेवाएँ प्रभाग, उस समय का सामग्री वितरण प्रभाग इत्यादि सम्मिलित हैं; और इसके अतिरिक्त, सन् 1989-90 में 45,859 भारित 32 क्रेडिट समतुल्य विद्यार्थियों के साथ उन सभी विद्यार्थियों के अभिमुखीकरण कार्यक्रम में भी एक बहुत बड़ी राशि व्यय कर दी गई है। अतः उन विद्यार्थियों पर जो उस समय पंजीकृत हो चुके थे (45,859 भारित (वैटेड) पूर्णकालिक समतुल्य विद्यार्थी) किया गया खर्च अचल लागत के रूप में समझा जा सकता है; और इसके अतिरिक्त पंजीकृत विद्यार्थियों पर किया गया खर्च सीमांत लागत कहलाएगा।

45,859 भारित पूर्ण-कालिक समतुल्य विद्यार्थियों (वर्ष 1989-90) के अतिरिक्त पंजीकृत विद्यार्थियों की कुल परिवर्ती लागत जो 597.07 रुपए प्रति विद्यार्थी आई, कुल लागत से जुड़ जाएगी।

पंजीकृत विद्यार्थियों की कुल लागत, औसत लागत और सीमान्त लागत, 5,000 से 3,00,000 विद्यार्थियों के लिए, नीचे सारणी 15.1 में दर्शाई गई है।

सारणी 15.1: विभिन्न स्तरों के पंजीकृत विद्यार्थियों की कुल लागत, औसत लागत और सीमांत लागत

पंजीकरण विद्यार्थी	कुल लागत (Rs. in '000s)	औसत लागत (Rs.)	सीमांत लागत (Rs.)
5,000	5,95,22	11,904.47	597.07
10,000	6,25,08	6,250.77	597.07
20,000	6,84,78	3,423.92	597.07
30,000	7,44,49	2,481.64	597.07
40,000	8,04,20	2,010.50	597.07
46,000	8,40,02	1,826.14	597.07
50,000	8,75,20	1,750.40	869.82
60,000	9,62,18	1,603.64	869.82
70,000	10,49,16	1,498.81	869.82
80,000	11,36,15	1,420.18	869.82
90,000	12,23,13	1,359.03	869.82
1,00,000	13,10,11	1,310.1 l	869.82
2,00,000	21,79,93	1,089.97	869.82
3,00,000	30,49,75	1,016.58	869.82

सारणी 15.1 से आप निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं:

- ज्यों-ज्यों पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाएगी उसी अनुपात में कुल लागत बढ़ जाएगी।
- विद्यार्थी पंजीकरण बढ़ने से औसत लागत में कमी आती है और यदि पंजीकरण का आकार 70–80 हजार विद्यार्थी हो जाते हैं तो औसत लागत स्थिर हो जाती है।
- उपर्युक्त आकार के मध्य बिंदु तक, अर्थात लगभग 40-50 हजार विद्यार्थी संख्या तक सीमांत लागत स्थिर रहती है (अर्थात् 45,859 विद्यार्थी हमारी स्थिति में वर्ष 1989-90 के लिए)। इससे ऊपर सीमांत लागत बढ़ने लगती है और जब विद्यार्थियों की संख्या 50,000 तक पहुँच जाती हैं तो यह स्थिर हो जाती।

औसत लागत में कमी आने के कारण तथा सीमांत लागत के स्थिरीकरण के कारण कुल लागत में बढ़ोतरी की दर कम होने लगती है। जब विद्यार्थियों का पंजीकरण 50,000 के आसपास हो जाता है तो सीमांत लागत स्थिर हो जाती है। इस विश्वविद्यालय (अर्थात् इग्नू) 80 हजार विद्यार्थियों के पंजीकरण तक परिमाण लाघव का लाभ उठा सकता है। तथापि, क्योंकि औसत लागत की अपेक्षा सीमांत लागत अब भी कम है, अतः 3,00,000 विद्यार्थी पूँजी निर्माण की संख्या तक परिमाण लाघव संभव है।

इस स्तर पर, जैसा कि नीचे आकृति 15.1 तथा आकृति 15.2 में दर्शाया गया है हमें औपचारिक और दूरस्थ शिक्षा के लागत फलनों पर ध्यान देना अनिवार्य है।

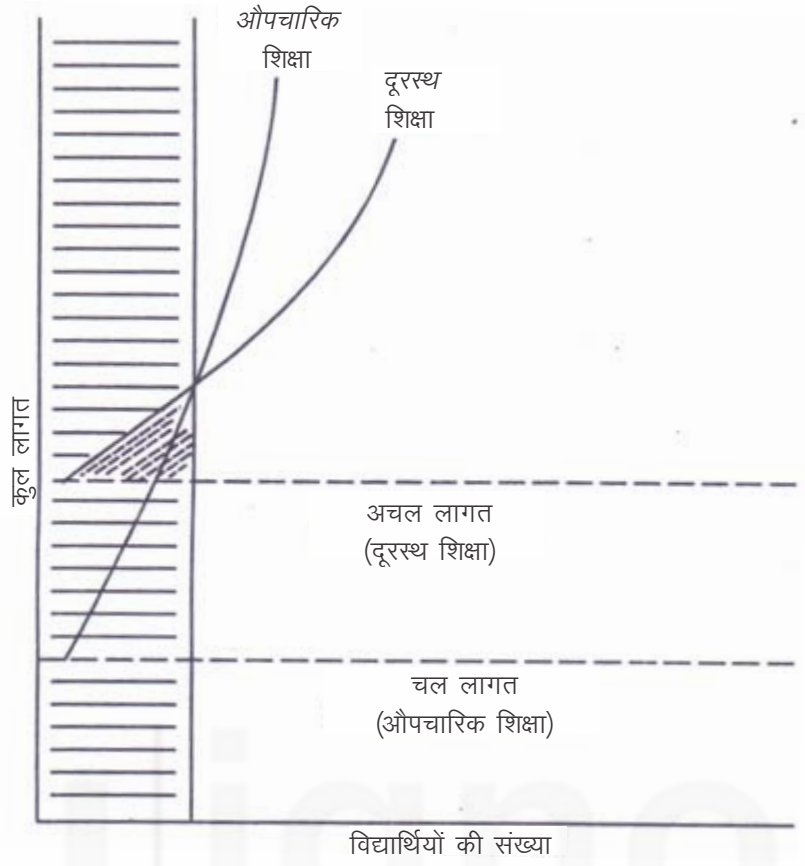

आकृति 15.1: औपचारिक और दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों के लागत फलन (कुल लागत)

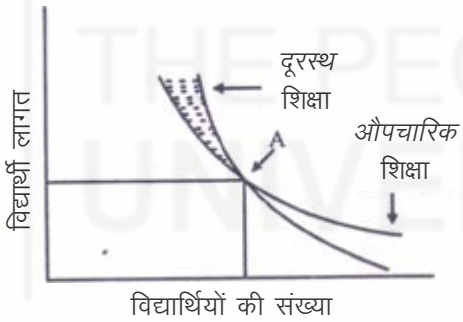

आकृति 15.2: औपचारिक और दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों के लागत फलन (विद्यार्थी लागत)

आकृति 15.1 के अवलोकन से आप देखेंगे कि यद्यपि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की अचल लागत औपचारिक शिक्षा की अचल लागत से अधिक है परंतु दूरस्थ शिक्षा में आने वाली वृद्धि दर औपचारिक लागत की वृद्धि दर से बहुत कम है। इसके अतिरिक्त औपचारिक शिक्षा की कुल लागत में अधिक कमी नहीं आती है क्योंकि कैंपस आधारित महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी पंजीकरण एक सीमा से अधिक नहीं हो सकता है। दूसरी ओर, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की स्थिति में यद्यपि विद्यार्थियों के बढ़ने पर कुल लागत बढ़ेगी परंतु प्रत्येक अतिरिक्त विद्यार्थी के पंजीकरण के फलस्वरूप लागत के बढ़ने की दर घटती चली जाएगी। और, दूरस्थ शिक्षा संस्था में (इग्नू, उदाहरणार्थ) बहुत सारे अतिरिक्त विद्यार्थियों को पंजीकृत कर सकता है (जो किसी भी औपचारिक संस्था के विद्यार्थियों की संख्या से अधिक होगी) कुल लागत में बढ़ोतरी की दर क्रमशः कम होती चली जाएगी क्योंकि इसके फलस्वरूप प्रति विद्यार्थी औसत लागत कम हो जाएगी और सीमांत लागत प्रति विद्यार्थी स्थिर हो जाएगी।

आइए, अब आकृति 15.2 में दर्शाई गई विद्यार्थी लागत (औपचारिक और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली दोनों में) के फलन पर विचार करते हैं।

आकृति 15.2 दर्शाती है कि कम विद्यार्थी पंजीकरण की अवस्था में दूरस्थ शिक्षा की प्रति विद्यार्थी लागत औपचारिक शिक्षा की प्रति विद्यार्थी लागत से अधिक होती है। परंतु यह रूझान बिन्दु "ए" पर उलट जाता है, जहाँ पर विद्यार्थी पंजीकरण तथा विद्यार्थी लागत दोनों अवस्थाओं में समान है। इसके पश्चात्, दूरस्थ शिक्षा की अवस्था में जैसे-जैसे विद्यार्थी पंजीकरण में वृद्धि होती जाएगी, प्रति विद्यार्थी लागत घटती चली जाएगी। आपने आकृति 15.1 में देखा है कि ज्यों-ज्यों औसत विद्यार्थी लागत 3,00,000 विद्यार्थियों की संख्या तक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली परिमाण लाघव का लाभ उठाते रहेंगे।

15.6 सारांश

इस इकाई में, हमने निम्नलिखित पर चर्चा की है : (क) शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा, एक निवेश और खपत के रूप में, तथा (ख) शिक्षा (और दूरस्थ शिक्षा) का मानव पूँजी निर्माण में तथा कर्मियों की गुणवत्ता या दक्षता बढ़ाने में योगदान। अपनी अन्तर्निहित नमयता तथा और अधिकाधिक अभिगमन की क्षमता के कारण, कम लागत से बहुत अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच सकती है और इसमें गुणवत्ता को स्थिर रखा जा सकता है। इस प्रक्रिया को सूचना तथा संप्रेषण प्रौद्योगिकियों के उपयोग से सुकर बनाया जा सकता है। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन करते समय लागत निर्धारण एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की विभिन्न कार्यात्मक उप प्रणालियों पर आधारित लागत को कैसे निकाला जाए, पर की गई चर्चा में हमने देखा कि दूरस्थ शिक्षा पद्धति की लागत औपचारिक शिक्षा की मुख्यधारा के मुकाबले लगभग 1/5 आती है और दूरस्थ शिक्षा में परिमाण लाघव प्राप्त करने की क्षमता है यदि इसमें विद्यार्थी पंजीकरण को एक सीमा तक बढ़ा दिया जाए। यद्यपि, इसकी एक अधिकतम सीमा भी होती है। यदि उस सीमा से परे पंजीकरण होगा तो सीमांत लागत बढ़ जाएगी।

लागत-प्रभाविता, लागत-कौशल दो संकेतक हैं जो लागत की दृष्टि से कार्यक्रम प्रभाविता का मूल्यांकन करने में हमारी सहायता कर सकते हैं। इकाई लागत निकालने की विधि (तकनीक) की सहायता से हम किसी शैक्षिक कार्यक्रम का व्यापक मूल्यांकन कर सकते हैं क्योंकि हम कार्यक्रम तथा इसके विभिन्न पक्षों की प्रभाविता को सुनिश्चित करने योग्य हो जाएँगे। हमारे संदर्भ में जब दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन और व्यापक ढाँचे में मूल्यांकन किया जाता है तो कार्यक्रम मूल्यांकन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

15.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) शिक्षा (और वह शिक्षा जो तात्कालिक प्रयोग के लिए कौशलों का विकास करती है) को मानव मात्र के लिए एक निवेश समझा जाता है; तथा यह एक जीवनपर्यन्त निवेश है। शिक्षा की भाँति दूरस्थ शिक्षा भी (जो शिक्षा का एक अन्य प्रकार या रीति है) मानव विकास के लिए एक निवेश है। दूरस्थ शिक्षा अधिक अभिगम्यता और शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान करती है जिससे कम लागत में गुणवत्ता शिक्षा को प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यह वयस्कों की सतत शैक्षिक और विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करती है।

2) भौतिक पूँजी के प्रभावी उपयोग के लिए एक गुणवत्ता युक्त मानव पूँजी की आवश्यकता होती है; और इससे अतिरिक्त, मानव पूँजी की आवश्यकता उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए महत्वपूर्ण होती है। मानव पूँजी निर्माण का संदर्भ मुख्यतः गुणात्मक आयाम से है, और व्यक्ति जो शिक्षा की प्रक्रिया को पूरा करते हैं, वे ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं और ऐसी अभिवृत्तियों का विकास करते हैं जिनसे उत्पादकता बढ़ती है। अपने आप में शिक्षा एक मानव पूँजी है; जितनी ऊँची शिक्षा होगी उतनी ही ऊँची ज्ञान और कौशलों को उत्पन्न करने की क्षमता और गुणवत्ता होगी जिससे उत्पादकता बढ़ेगी।

15.8 संदर्भ ग्रंथ

Dutt, K. (1988). "Distance Education versus Traditional Higher Education: A Cost Comparison", in B. N. Koul, et. al. (eds.), *Studies in Distance Education.* AIU and IGNOU, New Delhi.

Freeman, A. M. (2002). Environmental Policy Since Earth Day I: What Have We Gained? *Journal of Economic Perspectives,* Vol.16, No.1, pp.125-146.

Kruss, G., McGrath, S., Petersen, I., and Gastrow, M. (2015). Higher education and economic development: The importance of building technological capabilities. *International Journal of Educational Development,* Vol.43, July, pp.22-31, https:/ /www.elsevier.com/atlas/story/ people/higher-education-is-key-to-economicdevelopment — Retrieved on 22-03-2017.

Lundvall, B. (2011). Notes on innovation systems and economic development, *Innovation and Development,* Vol.1, No.1, pp.25-38.

McMahon, W. W. (1999). *Education and Development: Measuring the Social Benefits.* New York: Oxford University Press.

Nelson, R. R., and Winter, S. G. (1982). *An Evolutionary Theory of Economic Change,* The Belknap Press of Harvard University Press, Cambridge, Massachusetts.

Pillai. C. R., and Naidu, C. G. (1991). *Cost Analysis of Distance Education,* IGNOU, New Delhi.

15.9 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ पर दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत उत्तर लिख सकते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ या ऐसे उत्तर आपकी सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अन्त्य प्रश्न

1) व्याख्या कीजिए कि किस भाँति दूरस्थ शिक्षा एक खपत है और एक निवेश भी। (500 शब्दों में)।

2) शिक्षा तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा किस प्रकार मानव पूँजी निर्माण और राष्ट्रीय विकास दोनों के प्रति योगदान प्रदान करती है? चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

3) आप लागत-प्रभाविकता तथा लागत-क्षमता में भेद किस प्रकार करेंगे? (250 शब्दों में)।

4) विभिन्न प्रकार की लागतें तथा उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा कीजिए। (250 शब्दों में)।

5) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लागत प्रकार्यों पर लघु टिप्पणी कीजिए। (500 शब्दों में)।

6) आप दूरस्थ शिक्षा में परिमाण लाघव से क्या समझते हैं? (500 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) जिस संगठन में आप काम कर रहे हैं उसके संदर्भ में लागत प्रकार्यों की व्याख्या कीजिए।

क्रियाकलाप

आपके विद्यालय में विभिन्न प्रकार की लागतें कौन-कौन सी हैं? उन्हें आधार मानकर अपने विद्यालय में परिमाण लाघव की रचना करें (एक अन्य कागज पर)।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 16 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

संरचना

16.0 प्रस्तावना

16.1 उद्देश्य

16.2 ज्ञान निकाय में योगदान

16.3 शोध प्रवृत्तियाँ तथा क्षेत्र

16.3.1 शोध प्रवृत्तियाँ

16.3.2 शोध के क्षेत्र

16.4 प्रणालीगत शोध

16.4.1 क्षेत्र तथा सरोकार

16.5 क्रियात्मक शोध

16.5.1 अवधारणा

16.5.2 प्रक्रिया

16.5.3 सिद्धान्त

16.5.4 शोध का प्रयोग कब होता है?

16.5.5 क्रियात्मक शोधकर्त्ता की भूमिका

16.5.6 क्रियात्मक शोध के प्रकार

16.6 शैक्षिक क्रियात्मक शोध

16.6.1 प्रतिमान

16.6.2 नीतिगत विचार

16.6.3 लाभ

16.6.4 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम से कुछ केस अध्ययन

16.7 सारांश

16.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

16.9 संदर्भ ग्रंथ

16.10 इकाई अंत अभ्यास

16.0 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के खंड 1, 2 तथा 3 के अध्ययन से आपको राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सिद्धान्त तथा अभ्यास काफी समझ आ गई होगी। इकाई 14 में हमने दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन पर चर्चा की जिसका बल इस बात पर था कि दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम मूल्यांकन कितनी सीमा तक करना चाहिए जो गुणवत्ता सुनिश्चयन में एक उपकरण का काम दे सके। गुणवत्ता सुधार के लिए शोध धारणीयता एक अन्य महत्वपूर्ण साधन होता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शोध इस क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियाँ, सिद्धान्त और व्यवहार में संभावित नवाचारों तथा नई दिशाओं की ओर संकेत करता है।

इस इकाई में, हम दूरस्थ शिक्षा के सिद्धान्त तथा व्यवहार और कुल मिलाकर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के व्यापक विकास में शोध के योगदान पर चर्चा करेंगे। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कार्यक्षेत्र, इसकी क्षमताओं और नवाचार के लिए बढ़ते हुए शोध अवसरों तथा

इस क्षेत्र (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा) प्रणाली के संशोधित निष्पादन की नई दिशाओं को भी जान सकेंगे।

16.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में ज्ञान समूह को उन्नत करने के लिए शोध के योगदान के महत्व को प्रशंशा कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शोध के वर्तमान व्यापक प्रवृत्तियां और क्षेत्रों को पहचान पाएंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के विकास में सुव्यवस्थित शोध की भूमिका की विवेचना कर सकेंगे; तथा
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम और अन्य पद्धतियों को उन्नत करने में क्रियात्मक शोध को कार्यान्वित कर सकेंगे।

16.2 ज्ञान निकाय में योगदान

किसी अन्य क्षेत्र की भाँति दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अध्ययनों ने ज्ञान समूह के प्रति योगदान दिया है। हम इस संदर्भ में आगे चर्चा करने से पहले यह समझें कि ज्ञान समूह किसे कहते हैं।

एक ज्ञान समूह अवधारणाओं, पदों, तथा क्रियाकलाप का एक पूर्ण समुच्चय होता है जो एक संवृत्तिक अधिकारक्षेत्र का निर्माण करते हैं। यह किसी ज्ञान संगठन द्वारा निर्मित ज्ञान-निरूपण का एक प्रकार होता है। यह किसी विशिष्ट अधिकारक्षेत्र के लिए एक स्वीकृत सत्तामीमांसा है तथा समुदाय को एकीकृत करने का एक साधन है। यह एक संरचनाबद्ध ज्ञान है जो किसी विद्या विशेष के सदस्यों द्वारा अपने काम या प्रक्रिया को दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। (https://en.wikipedia.org/wiki / Body_of_knowledge) किसी भी क्षेत्र में, ऐसा ज्ञान समूह नेटवर्किंग या सहभागिता द्वारा सहयोग तथा शोध क्षमता का निर्माण और शोध निष्कर्षों का प्रचार-प्रसार करने द्वारा संभव हो पाता है।

इस भाग में, हम यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि किस ऐसे ज्ञान का योगदान तथा निरूपण दूरस्थ शिक्षा में एक ऐसी स्वीकृत सत्तामीमांसा बन जाता है जिससे यह योगदान निरंतर चलता रहे।

क) नेटवर्किंग तथा सहभागिता द्वारा सहयोग

शोध सहयोग का अर्थ है कि नए वैज्ञानिक ज्ञान उत्पत्ति के साझे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शोधकर्ताओं एक साथ काम करना। जबकि साझेदारी का अर्थ है दो या दो से अधिक सहभागियों द्वारा स्थापित औपचारीकृत संस्थाओं का अस्तित्व, जिसमें कोई भी दूसरे के साथ अनुबंध में नहीं हो और जिसका उद्देश्य ऐसे वास्तविक या स्वायत्त लक्ष्यों को प्राप्त करना हो जिसे इनमें से कोई भी सहभागी अपने आप प्राप्त न कर सके। सहयोग और सहभागिता विभिन्न स्तरों पर हो सकती है जिसमें व्यक्ति, समूह, विभाग, संस्थाएँ, खंड और देश सम्मिलित हो सकते हैं।

शोध सहयोग और सहभागिता की आवश्यकता क्या होती है? अन्य संगठनों या संस्थाओं के साथ साझेदारी में काम करना हमारे लिए मौलिक है जिसमें हम अपने रणनीतिक लक्ष्य को संतुष्ट कर सकते हैं और क्षेत्रीय आर्थिक विकास में योगदान दे सकते हैं। वर्तमान शैक्षिक ढाँचे में शोधकर्त्ता अन्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों सरकार, निजी संस्थानों और अन्य के साथ सहयोग और सहभागिता के महत्व को समझते हैं। अपने मूल स्तर पर सहयोग उस समय घटित होता है जब शोधकर्त्ता अनौपचारिक रूप से एक दूसरे के साथ परामर्श करते हैं, एक दूसरे के संस्थानों का दौरा करते हैं, एक दूसरे को सलाह देते हैं, और सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा अन्य मंचों में भागीदार होते हैं। अन्य सहयोगी रूपों में शामिल हैं : सामूहिक शोध परियोजनाओं का निर्माण करना, शोध सुविधाओं को साझा करना, ढाँचागत सुविधाओं को बाँटना, संकाय सदस्यों द्वारा आदान प्रदान कार्यक्रम को बढ़ावा देना, शोध आँकड़ों को उपयोग में लाने के लिए अनुमति प्रदान करना तथा शोध केन्द्रों और आभासी (वर्चुअल) नेटवर्कों को जोड़ना। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शोध सहयोग विभिन्न रूपों में देखे जा सकते हैं जैसे सूचना विनिमय के लिए सहयोगात्मक नेटवर्कों का विकास, निधियन, छात्रवृत्ति और शोध के लिए सहभागिता तथा सुविधाएँ और आपसी आदान-प्रदान के माध्यम से शोध तथा व्यावसायिक विकास आदि।

कई कारक हैं जो सहयोग और सहभागिता को बढ़ावा देते हैं। बढ़ती हुई जटिलता तथा शोध की लागत, विशेषतः उन अध्ययन विषयों (विद्या विशेषों) में जिन विशिष्ट सुविधाओं और उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है, सहयोग को अनिवार्यता प्रदान करते हैं। साथ-साथ अन्तर-विषयी तथा बहुविषयी शोध का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है क्योंकि शोध के निष्कर्षों में सार्वजनिक लोगों की अपेक्षाएँ अधिक समग्र और वैश्विक प्रतीत होती हैं। शिक्षा और शोध जैसे क्षेत्रों में सहयोगात्मक साहसिक कार्यों से देनों भागीदारों को लाभ मिलता है। सहयोगात्मक भागीदारी प्रायः ऐसे व्यक्तियों को साथ ले आती है जिनका ज्ञान आधार, अनुभव, अभिवृत्तियाँ तथा धारणाएँ काफी भिन्न हों। प्रत्येक सहभागी का ज्ञान तथा कौशल अनुपम होते हैं जिससे दूसरे सहभागी को लाभ मिलता है। सहभागियों जैसे-जैसे साझी कार्यनीतियों का निर्माण करते हैं और आगे बढ़ते हैं वे अपने लिए तथा दूसरों के लिए अवसरों का निर्माण करते हैं। विकासशील देश विकसित देश के सहभागियों की विशेषज्ञता, उपकरण तथा वित्तीय संसाधनों का उपयोग करते हैं। इसी प्रकार, अविकसित देश विकसित तथा विकासशील देशों से लाभ उठा सकते हैं।

इस संदर्भ में, आप खंड 1 की इकाई 4 का पुनः निरीक्षण कर सकते हैं जो आपको राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर विभिन्न संस्थाओं, संघों तथा अभिकरणों पर पाए जाने वाले सहयोग और सहभागिता का व्यापक वर्णन प्रदान करती हैं।

ख) शोध क्षमता का निर्माण और शोध निष्कर्षों का प्रचार–प्रसार करना

किसी भी उच्च शिक्षा संस्था के लिए, जिसमें मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भी सम्मिलित है, क्रमबद्ध ज्ञान के विकास में शोध का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। उच्च शिक्षा संस्थाओं का एक मुख्य कार्य शोध क्रियाकलाप के माध्यम से ज्ञान की वृद्धि करना तथा ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना होता है। अनुसंधान के माध्यम से संसाधनों को एकत्र करने में एक नवीनता संभव है। यद्यपि, शोध क्रियाओं में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है, तथापि भारत में शोध क्षमता के निर्माण में अब भी काफी कमी है। शोध क्षमता का निर्माण व्यक्तिगत और संस्थागत विकास की प्रक्रिया होता है ताकि कुशलतापूर्वक तथा प्रभावशाली रूप से शोध करने के कौशल और योग्यताएँ प्राप्त की जा सकें तथा पहले से किए गए शोधों के परिणामों के प्रभावी उपयोग द्वारा आगे किए जाने वाले शोधों को संभाला जा सके या कायम रखा जा सके।

शोध के परिणामों को संचालित करना एक प्रकार से एक खिड़की का काम करता है जिसके माध्यम से मुद्रित और वेबसाइटों से इलैक्ट्रॉनिक रूप में सर्व विदित हो जाती है। जब शोधकर्त्ता अपनी-अपनी सूचनाओं को दूसरों के साथ सांझा करते हैं तो इससे विद्वानों, व्यावसायिकों और नीति-निर्माताओं में ये शोध निष्कर्ष व्यापक रूप से साझा हो जाते हैं। इस प्रकार की सहभागिता उस क्षेत्र में भावी शोधकर्त्ताओं के लिए बेहतर मानक स्थापित करने में सहायता करती है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सदस्यों द्वारा एक ज्ञान समूह संगठित करने तथा उस संगठित ज्ञान समूह को अपने व्यवसाय को मार्गदर्षित करने में बहुत सारे प्रयास हुए हैं। कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन इस प्रकार हैंः सेरिवेन (1991); पांडा (1992); जेगेडे (1994); कॉबल तथा बंकर (1997); मिश्रा (1997); बर्गे तथा मरोज़ोवस्की (2001); राउर्के तथा स्जाबो (2002); ली, ड्रिस्कॉल तथा नेलसन (2004); रिचटर, बेकर तथा वोग्टी (2009); ज़वाकी-रिचटर (2009); रिट्स्हॉप्ट, स्टेवार्ट, स्मिथ तथा बैरन (2010); यूएन, जिंग तथा चुन (2016); और जावाकी, रिचटर तथा नायडू (2016)। तथापि, ज्ञान समूह को सुव्यवस्थित करने में किया प्रषंसनीय योगदान को जावाकी-रिटचर (2009) में देखा जा सकता है जो एक अनुवर्ती शोध है जिससे मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में शोध करने में सहायता मिलती है। अपने शोध में, जावाकी ने निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य किया : (i) दूरस्थ शिक्षा में शोध क्षेत्रों का वर्गीकरण उपकरण विकसित करना; (ii) दूरस्थ शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करना; तथा (iii) दूरस्थ शिक्षा में सर्वाधिक उपेक्षित क्षेत्रों की पहचान करना। एक व्यापक साहित्य समीक्षा के आधार पर और डैल्फी अध्ययन का प्रयोग करते हुए तीन व्यापक शोध स्तरों – वृहत् स्तर, मध्य स्तर तथा सूक्ष्म स्तर – को मालूम किया गया तथा इसके साथ 15 शोध क्षेत्र व्युत्पत्ति किए जो दूरस्थ शिक्षा में ज्ञान समूह निर्मित या स्थापित करते हैं। जावाकी–रियटर तथा एंडर्सन (2014) ने पाया कि डैल्फी अध्ययन से दूरस्थ शिक्षा में शोध क्षेत्रों की संरचना के विषय में लाभदायक चर्चा आरंभ हुई जिसका संदर्भ आगे किए गए शोध समीक्षाओं में इनका जिक्र किया और इसी ढाँचे पर वे आगे बढ़े। इन्होंने ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड विश्वविद्यालयों के एक शोध संकाय (संघ) के शोध का एक उदाहरण रेखांकित किया जिन्होंने 2011–2021 के लिए एक शोध कार्यक्रम विकसित किया है, जिसमें शोध विषय उपर्युक्त तीन स्तरों में वर्गीकृत किए गए हैंः वृहत् स्तर, मध्य स्तर तथा सूक्ष्म स्तर तथा 15 शोध क्षेत्र जो डैल्फी अध्ययन में मालूम किए गए थे।

अगले भाग 16.3 में, हम विशिष्ट शोध प्रवृत्तियों तथा क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में ज्ञान समूह के योगदान का व्यापक रूप में उन्नत बोध प्रस्तुत करेंगे।

16.3 शोध प्रवृत्तियाँ तथा क्षेत्र

मुक्त, नम्य, तथा दूरस्थ शिक्षा में शोध अभी अपेक्षाकृत अपरिपक्व ही है, जो कि सन् 1960 में आरंभ हुआ था। शुरु-शुरु में, शोध मुक्त तथा नम्य प्रणाली में दूरस्थ शिक्षण और अधि गम के व्यवहार से आरंभ हुआ। इस शोध का अधिकांश भाग मुख्यतः स्वभाव से विवरणात्मक था और अधिकांशतः इसकी आलोचना इस आधार पर की जाती रही कि इसे ग़ैर-सैद्धान्तिक, अव्यवस्थित तथा खराब तरीके से अभिकल्पित किया गया समझा गया (मूर, 1985)। तथापि, पीटरस (2014, p.xii), जो कि दूरस्थ शिक्षा के सिद्धान्त तथा अभ्यास के क्षेत्र में पथ प्रदर्षक या पुरोगामी, ने अनुभव किया कि सन् 1960 के आरंभ से ले कर दूरस्थ शिक्षा शोध और विद्वता के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की गई। उसके बाद के वर्षों में; दूरस्थ शिक्षा का साहित्य परिपक्व होता चला गया और इसमें भरपूर रूप से सुधार आया जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र की व्यावसायिकता बढ़ती चली गई।

16.3.1 शोध प्रवृत्तियाँ

सन् 1950 के दशक के आरंभिक वर्षों में, पत्राचार अध्ययन क्षेत्र के अग्रणियों के प्रयत्नों के बावजूद अध्ययन को स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी और इसके बावजूद भी शैक्षिक पंडितों की नजर में यह क्षेत्र संदिग्ध ही समझा जाता रहा। इस अवधि में, शोध ने इस क्षेत्र की स्वीकार्यता को तथा विस्तार को आगे बढ़ाया। सन् 1960 तथा 1970 के मध्य, औपचारिक उच्च शिक्षा के बहुत सारे विकल्प विकसित हुए। सन् 1970 के अंतिम और 1980 के आरंभिक वर्षों में, केबल और सेटेलाइट टेलीविजन को दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के वितरण माध्यम से प्रयोग में लाया जाने लगा (राइट, 1991)। इस अवधि के मध्य किए गए अध्ययन ग़ैर-सैद्धान्तिक तुलनात्मक अध्ययनों से सिद्धान्त-आधारित शोध अध्ययनों के बीच में फैले हुए थे। सन् 1980 के दशक में, 'श्रव्य-दृश्य साधनों' के उपयोग की प्रस्तुति ने प्रौद्योगिकी के उपयोग की बजाय एक 'यंत्र उपागम' का संकेत दिया। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सिद्धान्त तथा अभ्यास का एक असाधारण गति से विकास हुआ। आजकल ज्ञान तथा सूचना के रूपांतरण में इंटरनेट तथा वेबसाइट, ई-लर्निंग तथा मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओ.ई.आर.) ने शोध प्रवृत्तियों में एक मुख्य स्थान बना लिया है। समय के साथ-साथ संचार माध्यमों को अधिगम अनुभवों के साथ जोड़ने की महत्वपूर्ण चेष्टा की गई है ताकि अधिगम सामग्री को संवर्धित किया जा सके। आजकल ई-लर्निंग तथा ऑनलाइन लर्निंग का प्रवेश मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में एक शोध का विषय बन गया है। जबकि एम-लर्निंग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण शोध परिदृश्य के एक अंश का निर्माण करती है। सन् 1990 के दशक के अंतिम और 2000 के दशक के आरंभिक वर्षों में, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी की एक किस्म व्यक्तियों तथा संस्थाओं के प्रयोग के लिए उपलब्ध थी। इस प्रकार, आप देख सकते हैं कि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के साथ दूरस्थ शिक्षा में शोध का केन्द्र बदल गया है अब शोध का केन्द्र स्व-अधिगम सामग्री (जिसके फलस्वरूप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के विकास को बल मिला) के अभिकल्पन, निर्माण तथा वितरण की ओर हो गया है।

पिछले 35 वर्ष में, (1980 से 2014 तक) दूरस्थ और मुक्त शिक्षा के क्षेत्रों पर *'दूरस्थ शिक्षा'* पित्रका में छपे शोध पत्रों और सारों का विश्लेषण करके जवाकी-रिचटर तथा नायडू (2016) ने व्यापक ऊर्जावान विषयों को 1980-84 से 2010-14 तक सात पाँच साल वाले संगत समय के अवधियों में पाया। इस अवधि में छपे शोध पत्रों का विषय में व्यवसायीकरण तथा संघटन या समेकन, आनुदेशिक अभिकल्पन तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी, दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन, विद्यार्थी सहायता तथा ऑनलाईन लर्निंग के प्रारंभिक स्तर, आभासी (वर्चुअल) विश्वविद्यालयों का विकास इत्यादि रहा। नीचे सारणी 16.1 में विकसित हुए विषयों और उनका संगत समय दिया गया है।

सारणी 16.1: *दूरस्थ शिक्षा* में शोध प्रवृत्तियाँ

पाँच वर्ष की अवधि	उभरती हुई प्रवृत्तियाँ
1980 – 1984	व्यावसायीकरण तथा संस्थागत संघनन या समेकन
1985 – 1989	अनुदेशिक अभिकल्पन तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी
1990 – 1994	दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन
1995 – 1999	विद्यार्थी सहायता तथा ऑनलाईन लर्निंग के प्रारंभिक स्तर
2000 – 2004	आभासी (वर्चुअल) विश्वविद्यालयों का आविर्भाव
2005 – 2009	सहयोगात्मक लर्निंग तथा ऑनलाइन अन्तःक्रियात्मक प्रारूप
2010 – 2014	अन्तःक्रियात्मक लर्निंग, व्यापक मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (Massive Open Online Courses-MOOCs) तथा मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओ.ई.आर.)

इससे आगे पाँच-पाँच वर्ष की अवधियों में दर्शाई गई उपर्युक्त प्रवृत्तियों से शोधकर्त्ताओं ने संस्थागत तथा व्यक्तिगत शोध परिप्रेक्ष्य को दर्षाने वाली तीन एकांतर तंरग देखी जो नीचे आकृति 16.1 में दी गई हैं।

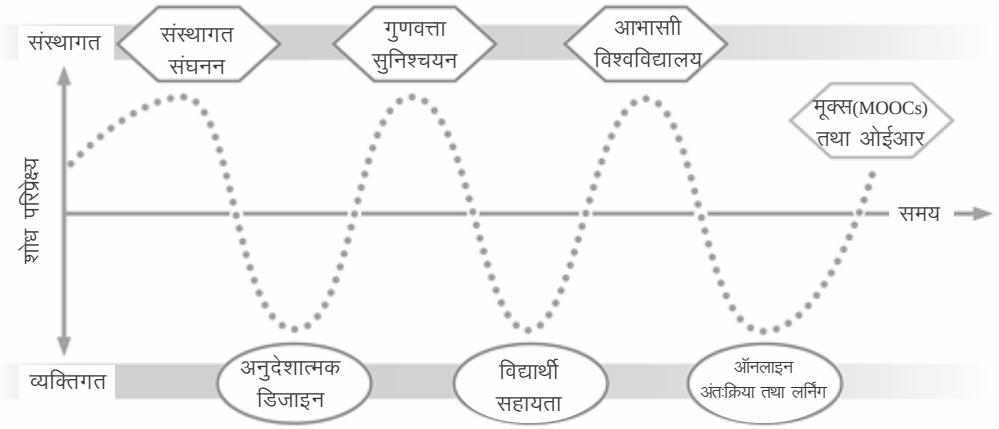

आकृति 16.1: समय के साथ-साथ संस्थागत तथा व्यक्तिगत शोध परिप्रेक्ष्य

श्रोत: जावाकी रिचटर तथा नायडू (2016)

उपर्युक्त आकृति 16.1 से हम विषयों पर शोध की तीन एकान्तर तंरग देख सकते हैं जिनके साथ एम.ओ.ओ.सीज (MOOCs) तथा मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओ.ई.आर.) वर्तमान उभरते हुए क्षेत्रों के रूप में।

आइए, अब दूरस्थ शिक्षा में शोध सम्बन्धी विशिष्ट क्षेत्रों को ध्यान से देखें।

16.3.2 शोध के क्षेत्र

पिछले कुछ वर्षों में दूरस्थ शिक्षा साहित्य पर कई समीक्षाएँ छपी हैं सेरिवेन (1991); पांडा (1992); जेगेडे (1994); कॉबल तथा बंकर (1997); मिश्रा (1997); बर्गे तथा मरोज़ोवस्की (2001); राउर्के तथा स्जाबो (2002); ली, ड्रिस्कॉल तथा नेलसन (2004); रिचटर, बेकर तथा वोग्टी (2009); ज़वाकी-रिचटर (2009); रिट्स्हॉप्ट, स्टेवार्ट, स्मिथ तथा बैरन (2010); जिनमें सम्बन्धित लेखकों ने उन शोध क्षेत्रों पर वर्गीकरण स्कीम विकसित की जिनकी उन्होंने उन चयनित शोध पत्रिकाओं में योजना बनाई। बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दियों के दौरान इन अध्ययनों ने दूरस्थ शिक्षा में विभिन्न शोध क्षेत्रों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इसका सार यह हे कि अधिकांश वर्गीकरणों में कई आम क्षेत्र शामिल थे, लेकिन कई शोध क्षेत्रों को मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में बदलते हुए और विकसित होने वोले अभ्यासों के कारण कुछ नए क्षेत्र भी शामिल थे। इससे आगे, अलग-अलग समय अवधियों में विभिन्न शोध पत्रिकाओं में शोध के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में शोध का ध्यान बिन्दु बदलता रहा है।

उपर्युक्त वर्णित शोध क्षेत्रों की तुलना में जावाकी-रिचटर (2009) ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य और अन्तर-विषयक शोध क्षेत्रों को संरचित करने का प्रयास किया। इसके फलस्वरूप तीन स्तरों पर 15 क्षेत्रों की एक व्यापक वर्गीकरण योजना सामने आई जो नीचे दी गई है।

1) वृहत स्तर: दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तथा सिद्धान्त

- अभिगमन (पहुँच), औचित्य (निष्पक्षता) तथा नीतिशास्त्र
- शिक्षा का वैष्वीकरण तथा अन्तर-सांस्कृतिक पहलुओं
- दूरस्थ शिक्षण प्रणाली तथा संस्थाएँ
- सिद्धान्त तथा मॉडल
- दूरस्थ शिक्षा में शोध विधियाँ तथा ज्ञान-अंतरण

2) मध्य स्तरः प्रबंधन, संगठन तथा प्रौद्योगिकी

- प्रबंधन तथा संगठन
- लागत तथा लाभ
- शैक्षिक प्रौद्योगिकी
- नवाचार और परिवर्तन
- संवृत्तिक (व्यावसायिक) विकास तथा संकाय सदस्यों का समर्थन
- विद्यार्थी सहायता सेवाएँ
- गुणवत्ता सुनिश्चयन

3) सूक्ष्म स्तरः दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम

- आनुदेशिक अभिकल्प
- अधिगमोन्मुख समुदायों में अंतःक्रिया तथा संप्रेषण
- अध्येता विशेषताएँ

जैसा कि जावाकी-रिचटर (2009) ने बताया कि सभी मामलों में शोध क्षेत्रों को उनके भिन्न-भिन्न वर्गों में अलग करना संभव नहीं है। कुछ शोध क्षेत्रों को भिन्न स्तरों पर देखा जाता है। उन मामलों में जिनका सम्बन्ध गुणवत्ता सुनिश्चयन तथा मूल्यांकन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा अन्तर-सांस्कृतिक प्रेक्ष्यों से है उन में अंतर-विभागीय शोध ही किया जाता है (http://www.avu.org/avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/)।

सारणी 16.2: स्तरानुसार शोध क्षेत्र

वृहत स्तरः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तथा सिद्धान्त	मध्य स्तरः प्रबंधन, संगठन तथा प्रौद्योगिकी	सूक्ष्म स्तरीः दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम
1. अभिगमन (पहुँच), औचित्य (निष्पक्षता) तथा नीतिशास्त्र	6. प्रबंधन तथा संघटन	14. आनुदेशिक या अधिगम अभिकल्प
2. शिक्षा का वैष्वीकरण तथा अन्तर-साहित्यिक परिप्रेक्ष्य	7. लागत तथा लाभ	15. अधिगम समुदायों में अन्तःक्रिया तथा संप्रेषण
3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा ई-लर्निंग प्रणाली तथा संस्थाएँ	***8. मूलभूत सुविधाएँ*** आधारिक संरचना (भूमिकारूप व्यवस्था)	16. अध्येता विशेषताएँ
4. सिद्धान्त तथा मॉडल	9. शैक्षिक प्रौद्योगिकी	
5. मुक्त, दूरस्थ ई-अधिगम में शोध विधियाँ तथा ज्ञान-अंतरण	10. नवाचार और परिवर्तन	
	11. संवृत्तिक (व्यावसायिक) विकास तथा संकाय सदस्यों का समर्थन	
	12. विद्यार्थी सहायता सेवाएँ	
	13. गुणवत्ता आश्वासन	

स्रोतः http://www.avu.org/avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/

फिर भी, पॉल और उबवा (2013), उदाहरण के लिए, तंजानिया के ग्रामीण क्षेत्रों में उपस्थित दूरस्थ शिक्षा केंद्रों में सौर ऊर्जा का उपयोग कैसे किया जा सकता है पर अध्ययन किया। इस तरह के विकास को ध्यान में रखते हुए अफ्रीका वर्चुवल युनिवर्सिटी (AVU) ने शोध समुदाय के लाभ के लिए 15 अनुसंधान क्षेत्रों (जवाकी-रिचटर, 2009 देखें) के व्यापक अनुसंधान ढ़ाँचे को अपनाया और अनुकलित किया। वृहत स्तर पर मुक्त, दूरस्थ और ई-अधिगम शब्द को अपनाया गया है और एक अतिरिक्त शोध क्षेत्र (दूरस्थ शिक्षा में शोध विधियाँ तथा ज्ञान-अंतरण) को जोड़ दिया गया है और मध्य स्तर पर एक अतिरिक्त शोध क्षेत्र (मूलभूत सुविधाएं) जोड़ा गया है।

सारणी 16.2 में शोध क्षेत्रों का सारांश प्रस्तुत है जो कुल मिलाकर 16 है और जिन्हें तीन स्तरों – वृहत्, मध्य और सूक्ष्म – में विभाजित किया गया है और जिसका उपयोग अफ्रीकन वर्चुअल विश्वविद्यालय (African Virtual University - AVU) ने शोध समुदाय के हित में किया है:

उपर्युक्त सारणी 16.2 में आप ध्यान दे सकते हैं कि बिन्दु 3 और 5 के दो क्षेत्रों को जावाकी-रिचटर (2009) से वर्गीकृत में अपनाया गया है, और मध्य स्तरीय के अंतर्गत बिन्दु 8 के रूप में एक 'क्षेत्र मूलभूत सुविधाएँ' को भी इसमें सम्मिलित किया गया है, जो आज तक वर्गीकरण ढाँचे को और अधिक व्यापक बनाता है।

वर्णित अफ्रीकन वर्चुअल विश्वविद्यालय का ढाँचा शोध समुदाय के लिए विशेषकर सहायक समझा जाता है जिसके कई कारण हैं जैसे इसके आधार पर और संभावित (http://www.avu.org/ avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/)

- अंतराल, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान और शोध दिशाओं का पता लगाना;
- शोध पत्रिका के लिए शोधपत्रों को मँगवाने के लिए विज्ञापन देना जिसमें विशेष अंक के लिए भी पत्र सम्मिलित हैं;
- विभिन्न स्तरों, शोध क्षेत्रों तथा मामलों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने में मदद करना;
- अग्रिम, विकसित और संशोधित शोध में लीन होना; तथा
- सहयोग के लिए अवसर प्रदान करना।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शोध क्षेत्रों का स्तर-वार वर्गीकरण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

16.4 प्रणालीगत शोध

भाग 16.4 में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में हुए शोध पर ध्यान केन्द्रित किया। उच्च शिक्षा में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक निरंतर बढ़ती रूचि का विषय बन गया है और बहुत से लोग इसे उच्च शिक्षा में एक सर्वांगी परिवर्तन के रूप में देखते हैं। आप जानते हैं कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली परंपरागत प्रणाली की तुलना में एक उन्मंजी प्रणाली है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली इसकी वृद्धि और विकास के लिए स्पष्ट रूप में शोध पहलों और क्रियाकलाप पर निर्भर करती है जो सर्वांगी तथा अनुप्रयुक्त दोनों है। आइए, यह समझने का प्रयास करेंगे कि सर्वांगी शोध या प्रणालीगत शोध किसे कहते हैं।

शब्द ***सिस्टैमिक*** का अर्थ है समस्त प्रणाली में व्याप्त या किसी समूह अथवा प्रणाली से संबद्ध (जैसा कि शरीर, अर्थव्यवस्था या बाजार)। सर्वांगी को क्रमबद्ध शब्द नहीं समझना है (http://www.businessdictionary. com/definition/systemic.html)। इस स्पष्टता के पश्चात् आइए अब मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सर्वांगी शोध पर नज़र डालें।

16.4.1 क्षेत्र तथा सरोकार

सर्वांगी शोध सर्वांगी ज्ञान समूह को प्रोत्साहित करता है और इस प्रकार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास होता है। जैसा हमें विदित है कि, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को विद्यार्थी-केन्द्रित खुला और लचीला बना दिया है। सर्वांगी शोध इस प्रणाली के दर्शनशास्त्र, इसकी प्रकृति, प्रक्रिया तथा व्यवहार से सम्बन्धित है। आपने भाग 16.3 में देखा है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में वैश्विक स्तर पर काफी शोध हो चुके हैं जिसमें इसके विभिन्न विषयों और क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। तथापि, भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं की संस्थागत संस्कृति तथा इन संस्थाओं का ध्यान शोध फ्रंट पर कोई बहुत उत्साहजनक नहीं रहा है क्योंकि शोध को प्राथमिक विषय ही नहीं समझा गया है। फलस्वरूप, शैक्षिक कार्यक्रम विकसित करने में लगी हैं और अतः शोध की अपेक्षा ये संस्थाएँ उच्च शिक्षा में स्थूल पंजीकरण अनुपात – जी.ई.आर. (Gross Enrollment Ratio - GER) के राष्ट्रीय लक्ष्य को बढ़ाने में लगी हुई हैं। यही कारण है कि हमें मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में उच्च शिक्षा की औपचारिक प्रणाली की तुलना में बहुत कम शोध देखने को मिलते हैं।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अधिकाधिक सर्वांगी शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है जिनका ध्यान अपने शोध में संस्थागत संक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं पर होना चाहिए ताकि उन के अभ्यास में सुधार लाया जा सके।

i) जैसा कि आपको विदित है कि दरूस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की योजना बनाने, कार्यान्वयन, मॉनीटरिंग तथा मूल्यांकन में बहुत अधिक संख्या में कर्मी कार्यरत हैं। अध्यापक, मीडिया उत्पादक, शैक्षणिक परामर्शदाता जैसे बहुत से व्यक्ति इस प्रणाली के विभिन्न उप-प्रणालियों और स्तरों पर कार्यरत हैं। अतः यदि इन कर्मियों की आवश्यकताओं, बाधाओं, समस्याओं व सहायक आवश्यकताओं पर शोध किए जाएँ तो उनको कार्यों में तथा समग्र प्रणाली को उन्नत करने के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रतिपुष्टि मिल सकती है।

ii) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में बढ़ता हुआ पंजीकरण यह दर्षाता है कि विद्यार्थियों तथा अन्य लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों तक इस प्रणाली को पहुँचाने की तीव्र आवश्यकता तथा कार्यक्षेत्र है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में शोध की आवश्यकता है ताकि अधिकाधिक व्यक्तियों तक इसका लाभ पहुँच सकें।

iii) वैश्विक बाजार के लिए कौशलयुक्त व्यक्तियों की आवश्यकता है क्योंकि आजकल सरकार द्वारा भी कौशल विकास के क्षेत्र को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जा रहा है। अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की भूमिका, क्षमता तथा प्रभाविता को खंगालने की भी आवश्यकता है। इन सबके लिए प्रणालीगत शोध की आवश्यकता है।

iv) मुकत एवं दूरस्थ शिक्षा संदर्भ में, गुणवत्ता बनाम मात्रा का विषय भी एक बढ़ता हुआ सरोकार है, जिसमें उपयुक्त शोध की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में किया गया शोध प्रणाली को प्रभावित करेगा।

v) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से यह अपेक्षा है कि विशेषतः विकासशील देशों में कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के तेजी से गिरते मूल्य मानकों को शोध का विषय बनाएँ। इस क्षेत्र में शोध की प्रबल आवश्यकता है ताकि हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मूल्यपरक बना सकें।

vi) दूरस्थ विद्यार्थी के ड्रापआउट, धारण, शैक्षणिक कार्यक्रम की सफल संपूति आदि ऐसे विषय हैं जिनपर किया गया शोध इस प्रणाली की प्रभाविता, कुशलता तथा कार्यान्वयन के विषय में महत्वपूर्ण निष्कर्ष या परिणाम दे सकती है। इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इनमें बहुत कम शोध उपलब्ध है।

vii) विद्यार्थियों की विशेषताएँ, अध्ययन प्रारूप तथा बदलते हुए हालातों के अनुकूल होना या रूपांतरित होना विद्यार्थियों के अभिप्रेत नियंत्रण तथा उपलब्धि पर निश्चित प्रभाव होता है। अतः इन पक्षों पर किया गया शोध या सर्वांगी शोध विद्यार्थियों में सतत् अधिगम के प्रोत्साहन के लिए मूल्यवान दिशा प्रदान करेगा।

viii) पाठ्यक्रम अभिकल्पन तथा विकास, पाठ्यक्रम लेखकों के अभिमुखीकरण तथा प्रशिक्षण, शिक्षण-अधिगम परिवेश तथा प्रस्तुतीकरण तथा अन्य पहलुओं में सुधार लाने के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी पर आधारित निरंतर प्रयोगीकरण तथा नवाचार की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में शोध के आधार पर प्राप्त बेहतर व्यवहार को अपनाने की आवश्यकता है। इससे समस्त प्रणाली की प्रभाविता तथा कुशलता को प्रोत्साहन मिलेगा।

ix) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को नई परिवृद्धियों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। ऐसी नई प्रवृत्तियों में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं जैसे मुक्त शैक्षिक संसाधन, व्यापक मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (Massive Open Online Courses - MOOCs), वर्चुअल विश्वविद्यालय तथा सहयोगात्मक शैक्षिक अवसर इत्यादि।

x) वर्तमान पाठ्यक्रमों के तुलनात्मक तथा लागत-प्रभाविता जैसे क्षेत्र में किए गए शोध मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अभिगमन, निरपेक्षता, धारणीयता, सफलता आदि के लिए काफी लाभदायक हैं।

xi) एक से अधिक सामाजिक मीडिया उपकरणों के उपयोग पर किया गया शोध मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के अधिगम वातावरण को प्रबलित कर सकता है।

xii) सहयोग के प्रच्छन्न/संभावित क्षेत्रों और इनका शिक्षण, अधिगम तथा प्रशिक्षण पर प्रभाव एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें किया गया शोध सर्वांगी व्यवहार में निश्चित रूप से सुधार ला सकता है।

अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में और इन संस्थाओं द्वारा शोध के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने की सख्त आवश्यकता है। इसके लिए निम्नलिखित पर ध्यान देने की आवश्यकता है :

- संस्थाओं की नीतियों और कार्यक्रमों के ध्यान को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में सर्वांगी शोध के संवर्धन की ओर मोड़ना।

- उन्नत पद्धतियों के लिए संस्थाओं का वित्तीयन/वित्त पोषण।
- संकाय सदस्यों और शोध विद्यार्थियों में तथा अन्य कर्मियों में जो संस्था में कार्यरत हैं, में शोधपरक कार्य संस्कृति का विकास।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शोधकर्त्ताओं तथा औपचारिक उच्च शिक्षा की संकाय सदस्यों के मध्य शोध सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- शोध सेमिनार, कार्यशाला तथा इस प्रकार के आयोजनों का निधियन तथा सुकरीकरण और शोध निष्कर्षों का प्रचार-प्रसार करना।

उपर्युक्त पहल या सुझाव मात्र हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सारी अन्य पहलुओं की शोध की जा सकती हैं जिससे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धी सर्वांगी व्यवहार में सुधार लाने के लिए संस्थाओं में कार्यान्वित किया जा सकता है।

16.5 क्रियात्मक शोध

क्रियात्मक शोध बहुत से कारणों से दूरस्थ शिक्षा अध्यापकों, अध्यापक-शिक्षकों और शिक्षाविदों तथा शैक्षिक प्रबंधकों के लिए सार्थक होती है। इस भाग में, क्रियात्मक शोध की अवधारणा उसकी प्रक्रियाओं, सिद्धान्तों और अन्य पहलुओं के विषय में ध्यान देंगे। इससे आप दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक क्रियात्मक शोध जो आगे भाग 16.6 में वर्णित है को अच्छी प्रकार से समझ जाएँगे।

16.5.1 अवधारणा

कुर्ट लैविन को क्रियात्मक शोध (एक्शन रिसर्च) का जनक कहा जाता है। इस शब्द का निर्माण सर्वप्रथम लैविन ने सन् 1946 में अपने शोधपत्र "क्रियात्मक शोध और अल्पसंख्यकों की समस्याएँ" में किया। उन्होंने क्रियात्मक शोध को इस प्रकार अभिलक्षित किया : "यह विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रिया और शोध की अवस्था और प्रयासों पर एक तुलनात्मक शोध है जो सामाजिक क्रिया की ओर ले जाता है'' और यह ''कदमों की एक सर्पिल है, जिसमें हर कदम एक चक्र से बना है जिसमें योजना, कार्यवाही तथा उसकी परिणाम के तथ्यों की खोज शामिल है (ओ, ब्रायन, 1998)।

क्रियात्मक शोध का लक्ष्य एक पारस्परिक रूप से स्वीकार्य नीतिपरक ढाँचे में सामूहिक सहयोग की भावना से तात्कालिक समस्यात्मक अवस्थिति में लोगों के व्यावहारिक सरोकारों में तथा सामाजिक विज्ञान के लक्ष्यों में योगदान देना है (रैपोपोर्ट, 1970, पृ.499)। क्रियात्मक शोध में दोहरी वचनबद्धता होती हैः एक प्रणाली का अध्ययन करना और साथ-साथ प्रणाली में कार्यरत व्यक्तियों के साथ सहयोग करना ताकि प्रणाली को एक वांछनीय दिशा में परिवर्तित किया जा सके। इसके लिए शोधकर्त्ता तथा क्लाइंटस (विद्यार्थियों) के मध्य सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है और इस प्रकार यह सह-अधिगम के महत्व पर बल देता है जो शोध प्रक्रिया का एक प्राथमिक पक्ष है (थोमस गिलमोट, जिम क्रान्टज तथा रफेल रमिरेज, 1986; ओ' बायन, 1998 में उद्धृत)। यह एक सर्वांगी जाँच है जो सामूहिक, सहयोगात्मक, स्व-विमर्शक, विवेचनात्मक अध्ययन है जो प्रणाली में सम्मिलित सहभागियों द्वारा की जाती है (मैककट्टियान तथा जंग, 1990 पृ.148)। यह गतिशील समस्या-समाधानात्मक क्रियाकलाप द्वारा समाधान को उभारने की प्रक्रिया है। इसके परिणामों का लक्ष्य व्यवहार में सुधार लाना और मुद्दों को संबोधित करना है। इस प्रक्रिया में कई सहभागी सम्मिलित होते हैं और यह जाँच क्रियाओं द्वारा की जाती है न कि सैद्धान्तिक प्रतिक्रिया के रूप में (http://www.businessdictionary.com /definition/action-research.html)।

वे कौन सी बाते हैं जो क्रियात्मक शोध को अन्य प्रकार के शोध और सामान्य समवृत्तिक व्यवहार, परामर्श दैनिक समस्या-हल आदि से अलग करती हैं। क्रियात्मक शोध के कुछ ऐसे लक्षण होते हैं जो नीचे दिए जा रहे हैं और जो इसे एक विशिष्ट रूप प्रदान करते हैं :

- क्रियात्मक शोध का बल वैज्ञानिक अध्ययन पर होता है। शोधकर्त्ता समस्या को क्रमबद्ध तरीके से देखता है और अपने आपको आश्वस्त करता है कि जो भी मध्यस्थता की गई है वह सैद्धान्तिक विचारों के अनुकूल है।
- इसका एक सामाजिक आयाम होता है। शोध वास्तविक दुनियादारी की अवस्थिति में घटित होता है और उस समस्या के समाधान पर लक्षित होता है।
- इस पर कार्य करने वाले व्यक्ति शोधकर्त्ताओं के साथ सक्रिय भागीदार भी होते हैं।
- भागीदारों का अधिकांश समय विधितंत्रात्मक उपकरणों के परिष्करण पर व्यय हो जाता है ताकि विधितंत्र स्थिति की अपेक्षाओं के अनुकूल हो सके। इसके अतिरिक्त आँकड़ों के संग्रहण, विश्लेषीकरण तथा प्रस्तुतीकरण चालू चक्रीय आधार पर होता है।
- यह सहयोगात्मक अधिक होता है और भागीदार इसके परिणामों का अनुप्रयोग स्वेच्छा से करते हैं क्योंकि उन्होंने वे परिणाम स्वयं निकाले हैं।

जुबेर-स्कैरिट (1991, पृ.2) ने इस प्रकार के शोध में चार प्रकरण मालूम किए जो इस प्रकार हैं : भागीदारों का सषक्तिकरण; सहभागिता के द्वारा सहयोग; ज्ञान की प्राप्ति; तथा सामाजिक परिवर्तन। इस प्रकार के शोध की प्रक्रिया की चार अवस्थाएँ होती हैं जो इस प्रकार हैं: योजना बनाना, क्रियान्वयन, प्रेक्षण और चिंतन। आइए, अब क्रियात्मक शोध को विस्तार से समझने का प्रयास करें।

16.5.2 प्रक्रिया

कुर्ट लैविन ने सन् 1940 के दशक के मध्य में क्रियात्मक शोध के एक सिद्धान्त की रचना की, जिसके अनुसार क्रियात्मक शोध में "कुंडलित चरणों में कार्यवाही करते हैं जिसके

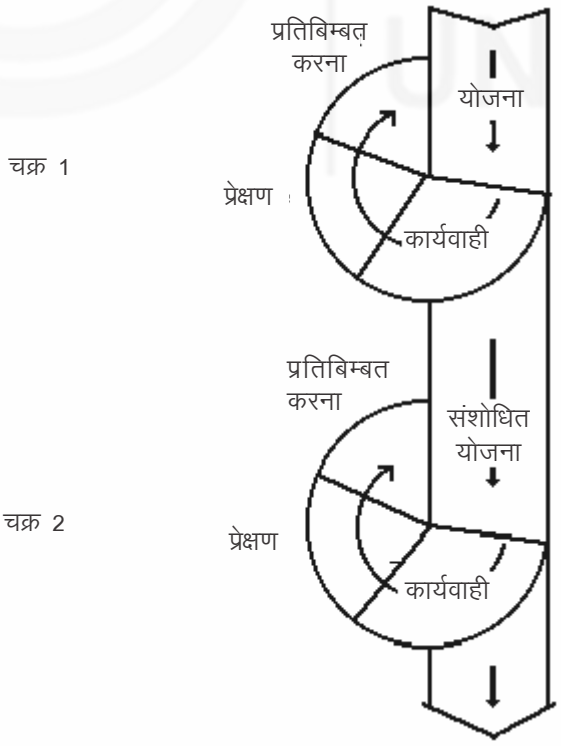

आकृति 16.2: सरल क्रियात्मक शोध प्रतिमान

स्रोत: रॉरी ओ'ब्रियन (1988) http://www.web.ca/~robrien/papers/arfinal.html

अंतर्गत प्रत्येक चरण में क्रिया जैसे आयोजना, क्रियान्वयन तथा क्रिया का प्रतिफल का मूल्यांकन होता है (केम्मिस तथा मैकटाग्गेट, 1990, p.8)। स्टीफेन क्रैमिस ने क्रियात्मक शोध की चक्रीय प्रकृति पर आधारित एक सरल प्रतिमान तैयार किया जिसके प्रत्येक चक्र में चार चरण होते हैं : योजना बनाना, क्रिया करना, प्रेक्षण करना तथा चिंतन या प्रतिबिम्बत करना। इस प्रक्रिया को नीचे दी गई आकृति 16.2 में दर्शाया गया है (मकआईसक, 1995; ओ' ब्रिमन, 1998 में उद्धृत)।

सुस्मन (1983; ओ' ब्रियन, 1998 में उद्धृत) ने इस प्रक्रिया की कुछ अधिक विस्तृत सूची देता है। सुसमन ने प्रत्येक शोध चक्र के भीतर आयोजित पांच चरणों को अलग करता है, जो आकृति 16.3 में निर्दिष्ट है।

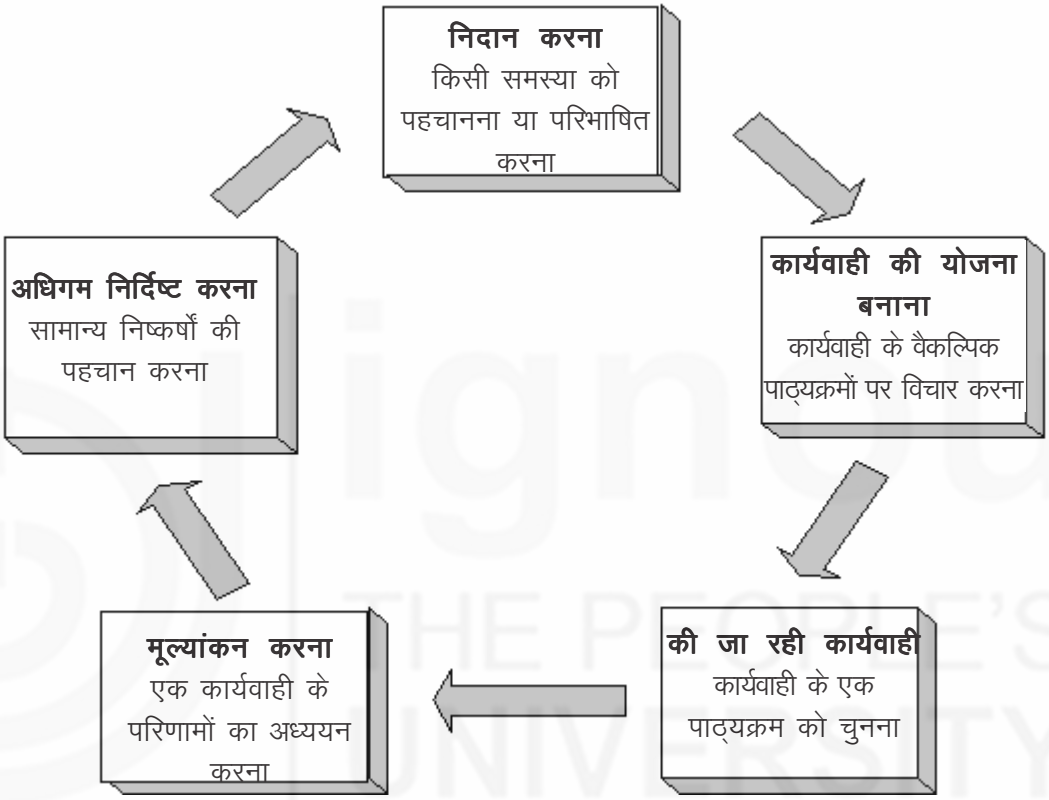

आकृति 16.3: क्रियात्मक शोध के चक्र

स्रातः रोरी ओ' ब्रियन, 1998 में उद्धृत, http://www.web.ca/~robrien/papers/arfinal.html

16.5.3 सिद्धान्त

विंटर (1989) ने क्रियात्मक शोध के मुख्य छेः निर्देशक सिद्धान्तों का व्यापक सारांश दिया जो नीचे स्पष्ट किया गया है।

1) **चिंतनात्मक समीक्षा** : इस सिद्धान्त के अंतर्गत व्यक्तियों को आश्वस्त किया जाता है कि वे मुद्दों तथा प्रक्रियाओं पर चिंतन करें तथा उनकी व्याख्याओं, पूर्वाग्रहों, पूर्वधारणाओं और सरोकारों को स्पष्ट करें जिनके आधार पर निर्णय लिए गए हैं। इस प्रकार, औपचारिक, सत्य तथा व्यावहारिक विवरण के आधार पर सैद्धान्तिक विचार बन सकते हैं।

2) **द्वंद्वात्मक समीक्षा :** हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम घटना तथा इसके संदर्भ ओर घटना को निर्मित करने वाले तत्वों के मध्य सम्बन्ध को समझे। मुख्य तत्व जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए उन घटकों को कहेंगे जो अस्थिर है या एक दूसरे के विरोधी हैं। ये ऐसे घटक हैं परिवर्तन लाने में सर्वाधिक उत्तरदायी हैं।

3) **सहयोगात्मक संसाधन :** इस सिद्धान्त की यह पूर्व धारणा है कि प्रत्येक सहभागी के विचार (एक सह शोधकर्त्ता के रूप में) विश्लेषण के व्याख्यात्मक वर्गीकरण के एक संभावित संसाधन के रूप में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

4) **जोखिम :** एक दूसरे के भय को दूर करने के लिए क्रियात्मक शोध के आरंभकर्त्ता इस सिद्धान्त का उपयोग करकें और यह बता कर सहभागिता आमंत्रित करेंगे कि वे भी, उसी के अधीन होंगे, प्रक्रिया और यह कि जो भी परिणाम, सीखने की जगह होगी।

5) ***बहुल संरचना :*** क्रियात्मक शोध स्वभावतः अनेकवादी होता है जिसके अंतर्गत अनेक विचार, टिप्पणियाँ और समीक्षाएँ आ सकती हैं जिनके आधार पर बहुत सारी व्याख्याएँ तथा क्रियाएँ संभव होती हैं।

6) ***सिद्धान्त, व्यवहार और रूपांतरण :*** क्रियात्मक शोधकर्त्ताओं के लिए यह समझना आवश्यक है कि व्यवहार सिद्धान्त पर आधारित होता है और व्यवहार सिद्धान्त का परिष्करण करता है और इस प्रकार एक निरंतर रूपांतरण होता रहता है। हमारी क्रियाएँ हमारी अप्रत्यक्ष (अन्तर्निहित) पूर्वधारणाएँ, सिद्धान्तों तथा परिकल्पनाओं पर आधारित होती हैं और प्रत्येक प्रेक्षित परिणाम से सैद्धानितक ज्ञान में वृद्धि होती है। ये शोधकर्त्ता पर निर्भर करता है कि दिए गए औचित्य के आधारों पर प्रश्नचिन्ह लगाए।

सभी क्रियात्मक शोधकर्त्ताओं, जो सामाजिक विज्ञान, शिक्षा तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं, के लिए अनिवार्य है कि वे उपर्युक्त सिद्धान्तों को ध्यान में रखें।

16.5.4 शोध का प्रयोग कब होता है?

चूँकि क्रियात्मक शोध का मुख्य ध्यान वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए होता है अतः इस शोध का प्रयोग वास्तविक स्थितियों में किया जाता है न कि कल्पित या प्रयोगात्मक समस्याओं के लिए। तथापि, इसका प्रयोग सामाजिक विज्ञानियों द्वारा किसी पायलट अध्ययन या आरंभिक अध्ययन के लिए किया जा सकता है, विशेष कर उस अवस्था में जिस में अवस्थिति बहुत अस्पष्ट या बहुअर्थी है और स्पष्ट रूप से समस्या का कथन नहीं किया जा सकता।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में कोई अध्यापक जो अपने शिक्षण अभ्यास में सुधार लाना चाहता है अथवा अपने अभ्यास के समझने में सुधार लाना चाहता है क्रियात्मक शोध का प्रयोग कर सकता है।

16.5.5 क्रियात्मक शोधकर्त्ता की भूमिका

किसी क्रियात्मक शोधकर्त्ता की भूमिका बदलती रहती है, यह इस बात पर निर्भर करती है कि क्या क्रियात्मक शोधकर्त्ता एक व्यक्ति के रूप में करने जा रहा है अथवा शोधकर्त्ताओं के एक समूह के रूप में। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि क्रियात्मक शोध किस स्तर पर किया जा रहा है, अर्थात् स्तर, विद्यालय स्तर, प्रणाली स्तर, स्थानीय स्तर अथवा और अन्य स्तर। इसके अतिरिक्त, इसमें सम्मिलित सहभागियों के स्तर या प्रकृति पर, शोध के उद्देश्यों पर भी निर्भर करता है।

यदि यह सामाजिक स्तर पर है तो शोधकर्त्ता को स्थानीय नेताओं को प्रशिक्षित करना पड़ेगा। कि वे इस प्रक्रिया का उत्तरदायित्व ले सकें। इस प्रकार के विभिन्न कार्यों को संपादित करने के लिए शोधकर्त्ता को इस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर बहुत सारी भूमिकाएँ अदा करनी पड़ेगी : जैसे योजनाकार, नेता (अगुआ), उत्प्रेरक, अभिकल्पक, सुसाध्यक, अध्यापक, श्रोता, प्रेक्षक, सहानुभूतिकर्त्ता तथा रिपोर्टर।

16.5.6 क्रियात्मक शोध के प्रकार

सन् 1970 के दशक मध्य तक क्रियात्मक शोध का क्षेत्र 4 धाराओं में विकसित हो गया था : परंपरागत, प्रसंगाश्रितर (क्रियात्मक अधिगम) उग्र या आत्यांतिक तथा शैक्षिक।

i) ***परंपरागत क्रियात्मक शोध*** : यह उपागम रूढ़िवादिता की और झुकता है और सामान्यतः संगठनात्मक शक्ति संरचना के प्रति यथापूर्व स्थिति को बनाए रखने का प्रयास करता है।

ii) ***ढाँचागत (क्रियात्मक अधिगम) शोध*** : इसके अंतर्गत एक समाजीय परिवेश में कार्यकर्त्ताओं के मध्य संरचनात्मक सम्बन्धों को पुनः निर्माण किया जाता है, इस रूप में कि इसमें सभी प्रभावित हिस्सेदार तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्ति सम्मिलित होते हैं और प्रत्येक सहभागीपूर्ण प्रक्रिया को समझता है और इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि सभी सहभागी परियोजना अभिकल्पक तथा सह-शोधकर्त्ता के रूप में कार्य करें।

iii) ***उग्र या आत्यंतिक क्रियात्मक शोध*** : रेडिकल-आत्यंतिक धारा जिसका मूल मार्कस्जिम के डायालेक्टिकल मैटिरियलिज्म (द्वंद्वात्मक भौतिकवाद) और एंटोनियो ग्राम के प्राक्सिस उन्मुखीकरण में है, का ध्यान शक्ति असंतुलन से छुटकारा पाना है। इसके उदाहरण हैं : सहभागिता–युक्त क्रियात्मक शोध है। इसका उद्देश्य सामाजिक रूपांतरण है।

iv) ***शैक्षिक क्रियात्मक शोध*** : इस धारा का आधार जॉन डिवे के लेखों में खोजा जा सकता है जिसकी आस्था है कि व्यावसायिक शिक्षाविदों को चाहिए कि वे समुदाय की समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दें। इसके कर्त्ता (व्यवसायी) पाठ्यचर्या विकास, व्यावसायिक विकास और अधिगम का अनुप्रयोग समाजीय संदर्भ में करने पर बल देते हैं। प्रायः ऐसा देखा गया है कि विश्वविद्यालयों में कार्यरत शोधकर्त्ता समुदाय-परियोजना पर कार्यरत हैं। वे प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयी अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ कार्य करते हैं। भाग 16.6 में हम शैक्षिक क्रियात्मक शोध की विस्तार से विवेचना करेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) i) क्रियात्मक शोध की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) क्रियात्मक शोध प्रक्रिया में कौन से चरण सम्मिलित हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

16.6 शैक्षिक क्रियात्मक शोध

फैरेंस (2000) के अनुसार क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें से सहभागी स्वयं अपने शैक्षिक अभ्यास की जाँच करते हैं। ऐसा करने के लिए वे शोध तकनीकों का प्रयोग करते हैं। शिक्षा में क्रियात्मक शोध में एक अकेला अध्यापक हो सकता है जो किसी अपनी समस्या की जाँच अपनी ही कक्षा में करें अथवा अध्यापकों का एक समूह भी हो सकता है या अध्यापकों और अन्य व्यक्तियों की एक टीम हो सकती है जो विद्यालय-व्याप्त अथवा क्षेत्र-व्याप्त किसी समस्या की जाँच करें। इन बातों को ध्यान में रखते हुए फैरेंस ने शैक्षिक क्रियात्मक शोध की चार किस्में मालूम की :

- *अकेले अध्यापक द्वारा शोध :* ऐसे शोध में प्रायः कक्षा की किसी अकेली समस्या पर ध्यान दिया जाता है। इसके अंतर्गत अध्यापक कक्षा प्रबंधन, आनुदेशिक व्यूह रचनाएँ, अध्यापन, सहायक सामग्री का उपयोग अथवा विद्यार्थी अधिगम सम्बन्धी किसी समस्या के समाधान का प्रयत्न कर सकता है। इस प्रकार के शोध की कमी यह है कि इसके परिणामों को अध्यापक अन्य अध्यापकों के साथ साझा नहीं कर सकता, जब तक कि यह इन परिणामों को संकाय सदस्यों की बैठक में सबके सामने प्रस्तुत नहीं करता। अथवा वह उस शोध की रिपोर्ट बनाकर उसकी शोध पत्रिका या समाचारपत्र में नहीं छपवाता।

- *सहयोगात्मक क्रियात्मक शोध* : इसमें ऐसे 2 या 2 से अधिक अध्यापक या अन्य व्यक्ति हो सकते हैं जोकि कक्षा अथवा विभाग की समस्या को संबोधित करने में रूचि रखते हों। यह मामला एक कक्षा से सम्बन्धित अथवा एक साझी समस्या जो बहुत सारी कक्षाओं में अनुभव की जाती है, हो सकता है। शोध कार्य में इन अध्यापकों की सहायता या समर्थन कक्षा के बाहर के व्यक्तियों द्वारा किया जा सकता है जैसे विश्वविद्यालय अथवा समुदाय सहभागी।

- *समस्त विद्यालय व्याप्त शोध* : इस प्रकार के शोध में वे मामले उठाए जाते हैं जो सभी कक्षाओं में समान रूप से विद्यालय में व्याप्त हो। उदाहरण के लिए, एक विद्यालय विद्यालयी क्रियाकलाप में अभिभावकों सहभागिता का अभाव को महसूस करता है और यह मालूम करना चाहता हो कि अधिकाधिक अभिभावकों को सार्थक रूप में विद्यालय के क्रियाकलाप में कैसे सम्मिलित किए जाए। यदि इस शोध को सफलतापूर्वक संपादित किया जाए तो अभिभावकों के मन में विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना विकसित हो जाएगी और इस प्रकार स्वतः ही हर कार्य में उनका सहयोग प्राप्त हो जाएगा।

- *जनपद अथवा जिला (डिस्ट्रिक्ट) व्याप्त शोध* : यह शोध अधिक जटिल होता है और इसे पूरा करने में अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, तथापि इसका पारितोशिक भी उतना ही बड़ा होगा। ये समस्याएँ संगठनत्मक, समुदाय-आधारित, निष्पादन-आधारित अथवा निर्णय पर पहुँचने की प्रक्रिया आदि हो सकती है। एक जिला ऐसी समस्याओं को संबोधित करने के लिए ले सकता है जो बहुत सारे विद्यालयों में साझी हो अथवा किसी ऐसे संगठनात्मक प्रबंधन को भी चुन सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रायः क्रियात्मक शोध का उपयोग सूचना एकत्रित करने के लिए करते हैं जिसे कक्षा में शिक्षण, पाठ्यचर्या विकास तथा कक्षा में विद्यार्थी का व्यवहार के विषयों का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध काफी सर्वप्रिय है क्योंकि इस क्षेत्र में हमेशा सुधार के अवसर विद्यमान रहते हैं। क्रियात्मक शोध शिक्षण-अभ्यास के क्षेत्र में लाभकारी होता है (http://study.com/academy/lesson/action-research-in-education-examples-methods-quiz. html)। इसके अन्य लाभ है विद्यालयी समस्याओं या सामूहिक समस्याओं और रूचि के क्षेत्र, विभिन्न प्रकार के संवृत्तिक विकास को प्रोत्साहित करना, संप्रेषण में सुधार लाना, कक्षा या विद्यालय परिवेश पर चिंतन, पारस्परिक सहयोग का निर्माण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ाना, अधिगम सम्बन्धी क्रियाकलाप में विद्यार्थी-सहभागिता को बढ़ाना या प्रोत्साहित करना, मूल्यांकन की गुणवत्ता को उन्नत करना आदि।

16.6.1 प्रतिमान

शैक्षिक साहित्य में क्रियात्मक शोध के तीन प्रतिमान विवेचित किए जाते हैं, उदाहरणार्थ – तकनीक, प्रायोगिक तथा विवेचनात्मक (विल्लाकनस डी कास्ट्रो, 2014)।

i) ***तकनीक क्रियात्मक शोध प्रतिमान :*** इसका संदर्भ विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के सामूहिक परियोजनाओं के अनुभवों से है जहाँ विद्यालय प्रारंभिक विचार और अभिरूचियों को प्रदर्शित करते हैं।

ii) ***प्रायोगिक क्रियात्मक शोध प्रतिमान :*** इसका सम्बन्ध वर्तमान समस्याओं से है और प्रायः अध्यापकों द्वारा अथवा उनकी संस्थाओं द्वारा समस्याओं को प्रदर्शित किया जाता है। वे निष्पादन को अपनी शैक्षिक संस्था के अवसरों और अड़चनों के मध्य अधिकतम करने का प्रयास करते हैं। ये अनुभव प्रायः कार्यक्षेत्र या उद्देश्यों की दृष्टि से छोटे-छोटे होते हैं और समकक्ष समीक्षित जर्नलों में प्रकाशित होने लायक नहीं होते।

iii) ***विवेचनात्मक क्रियात्मक शोध प्रतिमान :*** इस प्रतिमान के राजनीतिक तथा उद्धारकारी प्रच्छन्न भाव होते हैं। इनका विषयीकरण सामान्यतया उस क्रियात्मक शोध पर आश्रित होता है जो सहभागियों के आत्मबोध को समाज में व्यक्तियों के रूप में अनुमत करता है।

16.6.2 नीतिगत विचार

बेनेगास और विल्लाकनस डी कास्ट्रो (2015) के अनुसार, जब एक अध्यापक-शोधकर्त्ता क्रियात्मक शोध के तकनीकी, प्रायोगिक तथा विवेचनात्मक प्रतिमानों में कार्य करना आरंभ करता है तो उसके सम्मुख कुछ बहुत सारे नीतिगत समस्या आती हैं। नीतिगत आयाम (पहलू) वास्तव में क्रियात्मक शोध का एक अन्तर्निहित भाग होता है। इसका कारण है क्रियात्मक शोध सहयोगात्मक प्रकृति, तथा सहयोगियों की अलग-अलग अभिप्रेरणाएँ, परिप्रेक्ष्य तथा संस्थागत भूमिकाएँ।

- *सहयोग और सहभागिता :* सहयोग और सहभागिता दोनों स्वैच्छिक होनी चाहिए और सहभागी कभी भी अपने आपको बिना किसी हानि के क्रियात्मक शोध से बाहर कर सकता हो।

- *जब छोटे विद्यार्थी सम्मिलित हों :* पिंटर (2013) के अनुसार जब सहभागी छोटे बच्चे हो तो क्रियात्मक शोध में भाग ले रहें हों तो तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए – बच्चे विषय या पात्र के रूप में, बच्चे व्यक्ति के रूप में तथा बच्चे सह-शोधकर्त्ता के रूप में। इसका एक विशेष पक्ष, डोयले (2007) के अनुसार यह है कि : क्या एक अध्यापक विद्यार्थियों को चालाकी से प्रभावित करेगा ताकि वे सकारात्मक आँकड़े दे सकें, उस अवस्था में जबकि शोध अध्यापक के संवृत्तिक विकास का भाग हों क्योंकि बच्चे वहाँ अध्यापक के संवृत्तिक विकास की खातिर नहीं है। अपितु मामला इससे उलटा है। अर्थात् अध्यापक वहाँ पर बच्चों के विकास के लिए है।

- *शक्ति* : सहयोग के पीछे नीतिगत द्वंद्व पूर्व-सिद्ध भूमिकाओं, स्थितियों और सम्बन्धों से जुड़े हैं। उदाहरणार्थ, यदि एक विद्यालय का प्रधानाचार्य अपने विद्यालय पर शोध करे जिसमें अध्यापक भी सम्मिलित हों तो द्वंद्व का होना स्वाभाविक है।

- *गोपनीयता (विश्वसनीयता) तथा गुमनामी :* ये दोनों बातें प्रतिभागियों को आमतौर पर सूचित सहमति और सम्मान के साथ संबोधित किया जाता है।

- *रचनाकारित और स्वामित्व :* गुमनामी कर्त्तव्य और स्वामित्व नीतिगत मामलों से जुड़ी होती है। ऐसी बात भी हो सकती है कि सहभागी अपने वास्तविक नाम के साथ सम्मिलित होना चाहते हों क्योंकि उन्हें पता है या विश्वास है कि जो आँकड़े दिए गए हैं वे उनके अपने हैं, विशेषकर उस अवस्था में जब अनुभव उनके विषय में सकारात्मक चित्र पेष करते हों।

- *प्रतिनिधित्व तथा आवाज :* स्वामित्व के पीछे जो मामले छुपे हैं वे प्रतिनिधित्व तथा आवाज के साथ जुड़े हो सकते हैं। आँकड़ों की पुष्टि, तथा व्याख्या तथा आँकड़ों का संशोधित करने के अधिकार (यदि वे यह अनुभव करें कि उनकी बात का गलत अर्थ निकाला गया है या उनकी एक नकारात्मक तस्वीर पेष की गई है) का सम्मान किया जाना चाहिए।

- *लाभ :* किसी भी क्रियात्मक शोध के दुष्परिणाम भी हो सकते हैं तथा लाभ भी। लाभों पर चर्चा करना ईमानदारी तथा पारदर्षिता पर निर्भर करता है। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए सहभागी अपनी भिन्न-भिन्न अभिप्रेरणाओं को स्वीकार करते हैं जैसे-जैसे शोध आगे बढ़ता जाए लाभों पर आरंभ से ही बात होनी चाहिए।

- *धारणीयता :* जब क्रियात्मक शोध का उद्देश्य पहले से विद्यमान अच्छे व्यवहारों को सुधारना हो अथवा या किसी-किसी चुनौतीपूर्ण परिदृश्य को रूपांतरित करना हो तो इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि क्या यह परियोजना इस शोध के पूर्ण होने पर जब निधियन बंद हो जाए और बाहरी सुविचार वापिस (उसी विश्वविद्यालयों में) चले जाएँ जहाँ से ली गई थी।

क्योंकि क्रियात्मक शोध का संचालन वास्तविक हालातों में किया जाता है और इसमें सम्मिलित व्यक्तियों के बीच खुला तथा निकट का संप्रेषण होता है, अतः शोधकर्त्ता को चाहिए कि वह नीतिगति सम्बन्धी मामलों पर विशेष ध्यान दें। विंटर (1996) ने कुछ ऐसे नीतिगत सिद्धान्तों को नीचे दिए अनुसार सूचीबद्ध किया है :

- इस बात को सुनिश्चित करें कि संगत व्यक्तियों, समुदायों तथा अधिकारियों की राय ली गई हैं, और उन सिद्धान्तों को जो इस शोध को दिशा निर्देश देते हैं पहले से ही सभी संबद्ध व्यक्तियों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।
- सभी सहभागियों को यह अनुमति होनी चाहिए कि वे अपनी राय स्वतंत्रता से दे सकें और जो व्यक्ति इसमें सम्मिलित नहीं होना चाहते उनकी इच्छाओं का सम्मान होना चाहिए।
- कार्य की प्रगति सभी को दिखाई देती रहनी चाहिए और दूसरों का सुझावों को खुलेमन से स्वीकार करना चाहिए।
- इस उद्देश्य के लिए दिए गए प्रलेखों का आंकलन करने या जाँच करने से पहले उनकी अनुमति अवश्य ले लेनी चाहिए।
- दूसरों के कार्य या दृष्टिकोण के विवरणों को प्रकाशित करने से पूर्व सम्बन्धित व्यक्ति से बातचीत अवश्य करनी चाहिए।
- शोधकर्त्ता को गोपनीयता कायम रखने के लिए उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहिए।
- सुनिश्चित करें कि शोध की दिशा या उसके परिणामों के विषय में लिए गए निर्णय सामूहिक हैं।
- सुनिश्चित करें कि शोधकर्त्ता आरंभ से ही शोध प्रक्रिया की प्रकृति के विषय में स्पष्ट है, सभी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और हितों समेत।
- सुनिश्चित करें कि प्रक्रिया द्वारा उत्पादित सभी सूचनाएँ सभी प्रतिभागियों के लिए समान रूप से अभिगम्य हैं।
- बाहरी शोधकर्ता और प्रारंभिक डिजाइन टीम को एक ऐसी प्रक्रिया बनाना चाहिए जो सभी प्रतिभागियों की भागीदारी के लिए अवसरों का अधिकतम करता है।

16.6.3 लाभ

क्रियात्मक शोध करने वाले अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों के उनके लिए बहुत से लाभ हैं जो निम्नलिखित हैं (केर्री डैक) :

i) सुधार प्रयासों को निर्देशित करने के लिए अध्यापकों या अध्यापक-शिक्षकों द्वारा आँकड़ों का प्रयोग करने में उनकी सहायता करता है।

ii) इस शोध से विद्यार्थियों की गुणवत्ता तथा अध्यापकों की व्यावसायिक वृद्धि दोनों प्रभावित होते हैं। तार्किक रूप से यह विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक प्रभावी रूप से सीखने और अध्यापकों के लिए अत्याधिक प्रभावी रूप से शिक्षण करने की एक मानक कार्यनीति होगी।

iii) यह अध्यापक व अध्यापक-शिक्षकों को प्रत्यक्ष रूप से कार्यवाही करने के लिए प्रेरित करता है जिससे वातावरण में परिवर्तन आ सकता है। एक बार कोई अध्यापक कक्षा की स्थिति पर चिंतन करना आरंभ करता है तो वह प्रायः उन क्रियाओं को कार्यान्वित करने में अधिक समय नहीं गंवाता जो उस द्वारा संचालित क्रियात्मक शोध पर आधारित है।

iv) यह विशिष्ट शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों को उन्नत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्रियात्मक शोध के कारण अध्यापकों की शिक्षण पद्धति में बहुत सारे परिवर्तन आए हैं। क्रियात्मक शोध ने किस प्रकार पाठ्यचर्या को परिवर्तित कर दिया उसका एक उदाहरण वह शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम से ली जा रही है। इस उदाहरण का सम्बन्ध ऐसे अभ्यासों से है जैसे रस्सी की सहायता से ऊपर चढ़ना, दण्ड बैठक लगाना और बास्केटबाल, फुटबाल आदि खेल खेलना। क्रियात्मक शोध के कारण एक बदलाव आया जहाँ अध्यापक-शिक्षकों ने अनुभव किया कि मात्र ये खेल खेलकर पर्याप्त रूप से सीख नहीं रहे थे। क्रियात्मक शोध के पश्चात् उन्होंने अनुभव किया कि इन क्रियाकलापों में सामाजिक, भावात्मक तथा संज्ञानात्मक क्षेत्रों को शारीरिक शिक्षा पाठ्यचर्या में कार्यान्वित करने की आवश्यकता है।

v) यह विद्यालय में पूछताछ की संस्कृति (वातावरण) विकसित करने तथा कक्षा अध्यापक के लिए चिंतनात्मक शैक्षिक पद्धतियों के विकास को विकसित करती है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से बहुत सारी नई तकनीकों का विकास हुआ है जिस कारण कक्षा में पूछताछ के स्तर को बढ़ाया है।

क्रियात्मक शोध यद्यपि एक लाभकारी उपकरण है, परंतु इसे अच्छी प्रकार से संचालित करने में काफी समय लग जाता है। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि समस्याएँ एक दिन में नहीं सुलझाई जा सकती हैं। अतः परिणाम भी इतनी जल्दी नहीं आ सकते जितना प्रायः हम अपेक्षा कर लेते हैं। परंतु, इसमें भी कोई संदेह नहीं कि क्रियात्मक शोध शैक्षिक पद्धतियों के विकास के लिए, वर्तमान और भविष्य में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक अनिवार्य प्रक्रिया है।

16.6.4 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम से कुछ केस अध्ययन

उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा एक वर्धमान रूचि का विषय बन गया है। बहुत से व्यक्ति इसे उच्च शिक्षा में एक सर्वांगी परिवर्तन लाने के लिए एक अवस्था के रूप में देखते हैं। ऐसे बहुत से तर्क हैं जिनके आधार पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में क्रियात्मक शोध अध्यापकों, अध्यापक-शिक्षकों, शैक्षिक प्रबंधकर्त्ताओं आदि के लिए एक सार्थक लक्ष्य हो सकता है। इनमें मुख्य हैं अपने वर्तमान ज्ञान, शैक्षिक पद्धतियों आदि को विस्तारित करने के तरीकों के विषय में जानने की इच्छा। इसके अतिरिक्त, क्रियात्मक शोध संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों तथा अन्य कर्मियों के अनुभवों की जाँच करने में सहायता करता है।

1) बॉक्स 16.1 में दिए गए एक अध्यापक का एक केस अध्ययन – चिंतनात्मक क्रियात्मक शोध – है (एलिसन ए. कैर-चैल्मन, 2000)।

2) क्रियात्मक शोध से लोकप्रियता में वृद्धि हुई है और अध्यापकों के लिए अपने स्वयं की शिक्षण रणनीतियों का आँकलन करने और उनकी प्रभावशीलता पर प्रतिबिंबित करने के लिए स्वीकृत उपकरण बन गया है। ऑनलाइन बनाम परंपरागत कक्षा अधिगम के वातावरण और उनके सम्बन्धित अधिगम परिणामों, विशेष रूप से, जब पाठ्यक्रम सामाग्री उसी शिक्षक द्वारा एक साथ वितरित की जानी थी। श्मिट (2002) ने इस दिशा में एक प्रयास किया (http://scholar.lib.vt.edu/ejournals/JITE/v40n1 / schmidt.html) (बॉक्स 16.1 देखें)।

बॉक्स 16.1: दूरस्थ शिक्षा : एक चिंतनात्मक क्रियात्मक शोध परियोजना और उचच शिक्षा के लिए इसके सर्वांगी निहितार्थ

इस चिंतनात्मक क्रियात्मक शोध परियोजना में दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धी एक अध्यापक के अनुभवों की जाँच की गई है। इस अध्ययन में मूल आनुदेशिक डिजाइन पाठ्यक्रम के दूरस्थ शिक्षा वृत्तांत का अध्यापन करने में अध्यापकों के स्वयं के अनुभवों की जाँच की गई है। इसकी तुलना उसी पाठ्यक्रम के औपचारिक रूप से पढ़ाने के साथ की गई है। इस अध्ययन के आधार पर यह मालूम हुआ कि उच्च शिक्षा में सर्वांगी परिवर्तन लाने के लिए, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में इन अध्यापकों को लगाना पड़ेगा जिन की वचनबद्धता उतनी वर्तमान वचनबद्धता से कहीं अधिक होगी। सार रूप में यह पात्र कि, दूरस्थ शिक्षा में वर्तमान अपेक्षाएँ औपचारिक अध्यापकगण के लिए अभिप्रेरणादायक नहीं हैं, क्योंकि इसमें समय बहुत लगता है, विद्यार्थियों के साथ वैयक्तिक संपर्क नहीं हो पाता ओर दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों की रूचि काफी कम होती है।

स्रोत: https://link.springer.com/article/10.1023/A:1009501716697

बॉक्स 16.2: कक्षा अध्ययन बनाम ऑनलाइन शिक्षण के संदर्भ में विद्यार्थियों की धारणाओं और अधिगम परिणामों का आंकलन : एक केस स्टडी

इस क्रियात्मक शोध में अध्यापक ने कक्षागत अध्यापन को एक ऑनलाइन अध्यापन में विभाजित किया है। ऑनलाइन अध्यापन और औपचारिक अध्यापन की तुलना करने के लिए केस अध्ययन उपागम का सहारा लिया गया। इसके परिणाम निम्नलिखित थे:

अध्यापक न केवल ऑनलाइन से अपनी अध्यापन शैली के बारे में अधिक सीखा अपितु औपचारिक कक्षा में भी काफी सीखा। विद्यार्थियों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर विशिष्ट अध्यापन मुद्दों पर अध्यापक ने दोनों अवस्थाओं में सार्थक रूप से सीखा है और एक विशिष्ट योग्यता विकसित की। इस केस अध्ययन के आधार पर शिक्षण निष्पत्तियों में कोई सार्थक सांख्यिकीय अन्तर नहीं देखा गया, जिससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि चाहे ऑनलाइन अध्यापन हो अथवा औपचारिक दोनों अवस्थाओं में अधिगम भली-भाँति घटित होता है। अतः औपचारिक कक्षाओं में भी ऑनलाइन अध्यापन-अधिगम उपकरण का प्रयोग सफल माना जाएगा।

स्रोतः http://scholar.lib.vt.edu/ejournals/JITE/v40n1/schmidt.html

सतत् वृत्तिक दूरस्थ शिक्षा (Continuing Professional Distance Education - CPDE) को समर्थित करने के लिए, एक क्रियात्मक शोध उपागम का उपयोग अवश्य ही करना चाहिए। क्रियात्मक शोध के सफल होने के लिए, स्पष्ट रूप से दिए गए शोध प्रतिमानों को अवश्य बनाया जाए तथा उनका उपयोग किया जाए। नयूनस तथा मैकफर्सन (2003) शैक्षिक प्रबंधन क्रियात्मक शोध प्रतिमान (Educational Management Action Research-EMAR) प्रस्तावित करते हैं जो शिक्षणशास्त्रीय चिंतन, पाठ्यचर्या अभिकल्पन तथा संगठनात्मक संदर्भ को एकत्रित करता है। इस क्रियात्मक शोध प्रतिमान को सतत् वृत्तिक दूरस्थ शिक्षा में परिवर्तन के प्रबंधन के लिए एक आधार के रूप में प्रस्तावित किया जाता है। प्रतिमान का निदर्शन करने और उसका समर्थन करने के लिए, लेखक ऐसे परिवर्तन का विवरण देते हैं और उनकी विवेचना करते हैं जैसे सतत् वृत्तिक दूरस्थ शिक्षा में एक परिवर्तन प्रक्रिया के रूप में। इस अध्ययन के फलस्वरूप शैक्षिक प्रबंधक अपने पाठ्यक्रमों में प्रभावी परिवर्तन ला सकेंगे।

इस प्रकार, आपने देखा कि क्रियात्मक शोध से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सर्वांगी शोध तथा विकास की काफी संभावनाएँ हैं। इस के इस की अन्तर्हित क्षमता को खोजने और उपयोग में लाने की आवश्यकता है।

16.7 सारांश

इस इकाई में, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पक्षों की विवेचना करने का प्रयत्न किया गया है। हमने यह रेखांकित करने का प्रयास किया कि दूरस्थ शिक्षा ने किस भाँति ज्ञान समूह के निर्माण में योगदान दिया है और किस प्रकार शोध के द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तथा दूरस्थ शिक्षा के विषय में सतत् योगदान दिया जा सकता है। हमने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शोध की प्रवृत्तियों और क्षेत्रों का एक सारांश प्रस्तुत किया है। हमने सर्वांगी शोध को प्रोत्साहित करने के लिए अपेक्षित अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने की आवश्यकता पर बल दिया है। हमने क्रियात्मक शोध के उन विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है जो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में सर्वांगी शोध करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त अध्यापकों, शैक्षिक प्रबंधकों, अध्यापक-शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक क्रियात्मक शोध की उपयोगिता की व्याख्या भी की गई है। शैक्षिक क्रियात्मक शोध के कुछ केस अध्ययन भी प्रस्तुत किए गए हैं जो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिए इनके निहितार्थों पर प्रकाश डालते हैं।

16.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) जावाकी रिचटर तथा अन्य शोधकर्त्ताओं ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक और अन्तर-विषयक शोध क्षेत्रों को संरचित करने का प्रयास किया, जिनका आधार एक डैल्फी अध्ययन में विशेषा अनुक्रियाओं का सर्वांगी विश्लेषण है। इस अध्ययन के फलस्वरूप तीन स्तरों के तहत 15 क्षेत्रों का एक व्यापक वर्गीकरण प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है।

क) वृहत स्तर : दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तथा सिद्धान्त

- अभिगमन (पहुँच), औचित्य (निष्पक्षता) तथा नीतिशास्त्र
- शिक्षा का वैष्वीकरण तथा अन्तर-सांस्कृतिक पहलुओं
- दूरस्थ शिक्षण प्रणाली तथा संस्थाएँ
- सिद्धान्त तथा मॉडल
- दूरस्थ शिक्षा में शोध विधियाँ तथा ज्ञान-अंतरण

ख) मध्य स्तर : प्रबंधन, संगठन तथा प्रौद्योगिकी

- प्रबंधन तथा संगठन
- लागत तथा लाभ
- शैक्षिक प्रौद्योगिकी
- नवाचार और परिवर्तन
- संवृत्तिक (व्यावसायिक) विकास तथा संकाय सदस्यों का समर्थन
- विद्यार्थी सहायता सेवाएँ
- गुणवत्ता सुनिश्चयन

ग) सूक्ष्म स्तर : दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम

- आनुदेशिक अभिकल्प
- अधिगमोन्मुख समाज में अन्तःक्रिया तथा संप्रेषण
- अध्येता विशेषताएँ

अफ्रीका तथा अन्य देशों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में हुए विकासों को समायोजित करने के लिए और इन क्षेत्रों का और अधिक व्यापक बनाने के लिए अफ्रीकन वर्चुअल विश्वविद्यालय ने उपरोक्त वर्गीकरण को अपनाया और अनुकूलित किया ताकि शोध समुदायों को लाभान्वित किया जा सके। अतः इसने "दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों तथा संस्थाओं" को ''मुक्त, दूरस्थ तथा ई-लर्निंग प्रणालियों तथा संस्थाओं'' नाम से अनुकूलित किया, तथा "दूरस्थ शिक्षा में शोध विधियों तथा ज्ञानान्तरण" नामक क्षेत्र को "ओडीईएल" (ODeL) में शोध विधियाँ तथा ज्ञानांतरण'' के रूप में अनुकूलित किया। यह सब वृहत् स्तर पर किया गया। इसके अतिरिक्त, लागत तथा लाभ तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी के मध्य एक नया क्षेत्र "आधारिक संरचना (भूमिकारूप व्यवस्था)" जोड़ा गया जो मध्य स्तर पर किया गया।

2) i) कूर्ट लैविन ने क्रियात्मक शोध को निम्न प्रकार परिभाषित किया : ''सामाजिक कार्य तथा शोध के विभिन्न रूपों की अवस्थाओं और प्रभावों पर एक तुलनात्मक शोध जो सामाजिक काग्र की ओर अग्रसर करता है'' और जिनमें एक कुंडलित पगों वाली प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है जिसमें से प्रत्येक योजना, क्रिया और क्रिया के परिणाम के विषय में तथ्यान्वेषण से निर्मित है। क्रियात्मक शोध का लक्ष्य एक तात्कालिक समस्यात्मक अवस्थिति में लोगों के प्रायोगिक मुद्दों के प्रति तथा सामाजिक विज्ञान के लक्ष्यों दोनों के प्रति योगदान देना है जो और एक पारस्परिक रूप से स्वीकार्य ढाँचे के अंदर होता है। इसके लिए शोधकर्त्ता और ग्राहक के एक संयुक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। और इस प्रकार शोध प्रक्रिया के एक मुख्य पक्ष के रूप में सह-अधिगम पर बल देता है। यह एक सर्वांगी जाँच-पड़ताल है जो सामूहिक, सहयोगात्मक, स्वविमर्शक, समालोचक होती है तथा जाँच में सम्मिलित सहयोगियों द्वारा संचालित की जाती है। यह निरंतर रूप से समस्या-समाधान क्रियाकलाप द्वारा समाधानों को स्पष्ट करने की प्रक्रिया है। इसकी निष्पत्ति से पद्धति या व्यवहार उन्नत हो जाता है। मूलतः यह सैद्धान्तिक आधार की बजाए मुक्त एवं दूरस्थ रूप में क्रियाओं द्वारा की जाती है और इसमें सहभागियों का एक समूह कार्यरत होता है।

2) ii) विशिष्ट क्रियात्मक शोध प्रक्रिया स्वभाव से चक्रीय होती है। इसके प्रत्येक चक्र में चार चरण होते हैं – योजना बनाएँ, कार्य करें, प्रेक्षण करें और अनुचिंतन करें। क्रियात्मक शोध चार मूल प्रकरणों पर बल देता हैः सहभागियों का सषक्तिकरण, सहयोग की भावना से सहभागिता, ज्ञान प्राप्ति तथा सामाजिक परिवर्तन। उस प्रक्रिया में, जिसके अंदर किस शोधकर्त्ता को गुजरना पड़ता है, क्रियात्मक शोध चक्रों की एक कुंडली होती है जिसकी चार मुख्य अवस्थाएँ होती हैं : योजना बनाना, कार्य करना, प्रेक्षण करना तथा अनुचिंतन करना। इसे और सरल रूप में कह सकते हैं कि, इसमें विश्लेषण करना (समस्या की पहचान या परिभाषा) क्रिया करना (विभिन्न वैकल्पिक रास्तों को खोजना), कार्रवाई करना, मूल्यांकन करना (कार्यवाही के परिणामों का अध्ययन करना) और अधिगम को निर्दिष्ट करना (सामान्य निष्कर्षों की पहचान करना) यह क्रिया उस समय तक चलती रहती है जब तक समस्या का समाधान नहीं हो जाता है।

16.9 संदर्भ ग्रंथ

Banegas, D. L., and Villacañas de Castro, L. S. (2015). A look at ethical issues in action research in education, *Argentinian Journal of Applied Linguistics,* Vol.3, No.1, May, pp.58-67 http://www.faapi.org.ar/ajal/issues/301/ BanegasAJALVol3(1). pdf — Accessed on 04-04-2017.

Berge, Z., and Mrozowski, S. (2001). Review of research in distance education. *American Journal of Distance Education,* 15(3), 5-19.

Bizhan Nasseh https://www.seniornet.org/edu/art/ history.html — Accessed on 01-04-2017.

Carr-Chellman, A. A. (2000). Distance Education: A Reflective Action Research Project and Its Systemic Implications for Higher Education, *Systemic Practice and Action Research*, August 2000, Vol.13, Issue 4, pp.587–612 https:// link.springer.com/article/10.1023/A:1009501716697 – Accessed on 31-03-2017.

Doyle, D. (2007). Transdisciplinary enquiry: Researching with rather than on. In A. Campbell & S. Groundwater-Smith (Eds.). *An ethical approach to practitioner research - dealing with issues and dilemmas in action research,* (pp. 75-87), Routledge, London.

Ferrance, E. (2000). Action Research: Themes in Education. Suite: LAB Northeast and Islands Regional Educational Laboratory at Brown University.

http://scholar.lib.vt.edu/ejournals/JITE/v40n1/schmidt.html — Accessed on 30-03-2017.

http://study.com/academy/lesson/action-research-in-education-examples-methods-quiz.html.

http://www.avu.org/avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/ — Accessed on 30-03-2017.

http://www.businessdictionary.com/definition/action-research.html — Accessed on 02-04-2017.

http://www.businessdictionary.com/definition/systemic.html — Accessed on 31-03-2017.

https://en.wikipedia.org/wiki/Body_of_knowledge — Accessed on 23-03-2017.

Jegede, O. J. (1994). Distance education research priorities for Australia: A study of the opinions of distance educators and practitioners. *Distance Education,* 15(2), 234-253.

Kerry Dyke. http://www.mun.ca/educ/courses/ed4361/virtual_academy/ campus_a/aresearcher/ chapter3.html – Accessed on 02-04-2017.

Koble, M. A., and Bunker, E. L. (1997). Trends in research and practice: An examination of The American Journal of Distance Education 1987-1995. *American Journal of Distance Education*, 11(2), 19-38.

Lee, Y., Driscoll, M. P., and Nelson, D. W. (2004). The past, present, and future of research in distance education: Results of a content analysis. *American Journal of distance Education,* 18(4), 225-241.

MacIsaac, D. (1995). "An Introduction to Action Research," http://www.phy.nau.edu/~danmac/ actionrsch.html (22/03/1998).

McCutcheon, G., and Jurg, B., (1990). Alternative Perspectives on Action Research, *Theory into Practice.* Volume 24, Number 3, Summer.

McKernan, J. (1991). Curriculum Action Research, *A Handbook of Methods and Resources for the Reflective Practitioner.* Kogan Page, London.

Mishra, S. (1997). A critical analysis of periodical literature in distance education. *Indian Journal of Open Learning*, 6(1&2), 39-54.

Moore, M. G. (1985). Some observations on current research in distance education. *Epistolodidaktika*, 1985, 35–62.

Nunes, J. M., and McPherson, M. A. (2003). "Action Research in Continuing Professional Distance Education". *The Journal of Computer Assisted Learning*, 19(4), 429-437.

O'Brien, R. (1998). An Overview of the Methodological Approach of Action Research, In Roberto Richardson (Ed.), *Theory and Practice of Action Research*. http://www.web.ca/~ robrien/papers/arfinal.html — Retrieved on 02-04-2017.

Panda, S. (1992). Distance educational research in India: Stock-taking, concerns and prospects. *Distance Education*, 13(2), 309-326.

Paul, D. P., and Fatma Ubwa, F. (2013). The role of photovoltaic powered ICT centers on ODL programs in rural areas in Tanzania. Paper presented at the 1st International Conference of the AVU, Nairobi Kenya under the session on Infrastructure & Capacity. http://www.avu.org/avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/ — Accessed on 30-03-2017.

Peters, O. (2014). 'Foreword' In O. Zawacki Richter & T. Anderson (Eds.), *Online distance education: Towards a research agenda*, (pp. ix–xii). Athabasca: Athabasca University Press. doi:10.15215/aupress/97819273566 23.01.

Pinter, A. (2013). Child participant roles in applied linguistics research, *Applied Linguistics*, 35(2), 168–183.

Rapoport, R. N. (1970). Three Dilemmas in Action Research. *Human Relations*, 23:6; 499, cited in McKernanJ., (1991). *Curriculum Action Research. A Handbook of Methods and Resources for the Reflective Practitioner*. Kogan Page, London.

Richter O. Z., Backer E. M., and Vogt. S. (2009). Review of distance education research (2000 to 2008): Analysis of research areas, methods, and authorship patterns, *The International Review of Research in Open and Distance Learning*, 10(6), December, Retrieved from http://www/inudorg/index.php/irrodllarticle/view/71/1433.

Ritzhaupt, A. D., Stewart, M., Smith, P., and Barron, A. E. (2010). An Investigation of Distance Education in North American Research Literature Using Co-word Analysis, *The International Review of Research in Open and Distance Learning*, Vol.11, No.1 (2010).

Rourke, L., and Szabo, M. (2002). A content analysis of the Journal of Distance Education 1986-2001, *Journal of Distance Education*, 17(1), 63-74.

Schmidt, K. (2002). Classroom Action Research: A Case Study Assessing Students' Perceptions and Learning Outcomes of Classroom Teaching Versus On-line Teaching. *Journal of Industrial Teacher Education.* Vol.40, No.1. http://scholar.lib.vt.edu/ejournals/JITE/v40n1/schmidt.html.

Scriven, B. (1991). Ten years of 'Distance Education'. *Distance Education,* 12(1), 137-153.

Susman, G. I. (1983). "Action Research: A Sociotechnical Systems Perspective." In G. Morgan (Ed). *Beyond Method: Strategies for Social Research.* Sage Publications, London, 95-113.

Thomas Gilmore, Jim Krantz and Rafael Ramirez, (1986). "Action Based Modes of Inquiry and the Host-Researcher Relationship," *Consultation* 5.3 (Fall 1986): 161, cited in O'Brien, R. (1998). op. cit.

Winter, R. (1989). Learning From Experience: Principles and Practice in Action-Research. The Falmer Press, Philadelphia, pp.43-67.

Wright (1991), mentioned in Bizhan Nasseh https://www.seniornet.org/edu/art/history.html. Accessed on 01-04-2017.

Yuen Yee Wong, Jing Zeng, Chun Kit Ho, (2016) "Trends in open and distance learning research: 2005 vs 2015", *Asian Association of Open Universities Journal,* Vol.11 Issue 2, pp.216-227, doi: 10.1108/AAOUJ-09-2016-0035 http://www.emeraldinsight.com/doi/ full/10.1108/AAOUJ-09-2016-0035 — Accessed on 30-03-2017.

Zawacki-Richter, O. (2009). Research Areas in Distance Education: A Delphi Study. *The International Review of Research in Open and Distance Learning,* Vol.10, No.3, June, http://www.irrodl.org/index.php/irrodl/article/view/674/1260 — Accessed on 30-03-2017).

Zawacki-Richter, O., and Anderson, T. (2014). Introduction: Research Areas in Online Distance Education. In Zawacki-Richter Olaf & Anderson, T. (Eds.). *Online distance education: Towards a research agenda* Pp.1-35. AU Press, Athabasca University, Edmonton, AB. http://www.avu.org/avuweb/en/open-distance-e-learning-odel-research-framework/ — Accessed on 30-03-2017.

Zawacki-Richter, O., and Naidu, S. (2016). Mapping research trends from 35 years of publications in Distance Education, *Journal of Distance Education,* Volume 37, Issue 3, http://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/01587919.2016.1185079 — Accessed on 01-04-2017.

Zuber-Skerrit, O. (1992). Improving Learning and Teaching Through Action Learning and Action Research Draft paper for the HERDSA Conference 1992 University of Queensland, cited in Masters, J. (1995) 'The History of Action Research' in I. Hughes (ed) *Action Research Electronic Reader,* The University of Sydney, on-line. http://www.behs.cchs.usyd.edu.au/ arow/Reader/rmasters.htm — Accessed on 31.03.2017.

Suggested Readings

Garrison, D., and Shale, D. (1987). Mapping the boundaries of distance education: Problems in defining the field. *The American Journal of Distance Education,* (1), 4-13.

George Siemerns. (2011). Learning Analytics: Envisioning a research discipline and a domain of practice. learninganalytics.net/LAK 12_keynote_Siemens.pdf.

Lakshmi Reddy, M. V. (2002). Students' Pass Rates: A Case Study of Indira Gandhi National Open University Programmes. *Indian Journal of Open Learning,* Vol.11, No.1, January, pp.103-125. http://cemca.org.in/ckfinder/userfiles/Lakshmi%20Reddy_MV__0249.pdf.

Lakshmi Reddy, M. V. (2011). E-mail Technology-enabled Course Team Model for Development of Self-instructional (Self-learning) Materials. *University News — A Weekly Journal of Higher Education,* Vol.49, No.40, October 3-9, pp.7-18.

Masters, J. (1995). 'The History of Action Research' in I. Hughes (ed.). *Action Research Electronic Reader,* The University of Sydney, on-line http://www.behs.cchs.usyd.edu.au/arow/Reader/rmasters.htm.

McNiff, J. (1999). *Action Research: Principles and Practice.* London: Routledge.

Sheeja, S.R. (2011). Major trends and issues in the field of distance education. *Indian Journal of Science and Technology,* 4(3), pp. 201-203.

Simonson, M., Schlosser, C., & Orellana, A. (2011). Distance education research: A review of the literature. *Journal of Computing in Higher Education,* 23, 124–142. doi:10.1007/s12528-011-9045-810.1007/s12528-011-9045-8.

16.10 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ पर दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा पूर्ण उत्तर दे सकते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ या ऐसे उत्तर सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अंत्य प्रश्न

1) व्याख्या करें कि दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान किस भाँति ज्ञान समूह में योगदान दिया है। (500 शब्दों में)।

2) दूरस्थ शिक्षा की प्रवृत्तियों तथा क्षेत्रों का विश्लेषण कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

3) एक सर्वांगी या प्रणालीगत शोध किसे कहते हैं? इस शोध के विभिन्न क्षेत्रों और मुद्दों की विवेचना कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

4) क्रियात्मक शोध में नीतिगत विचार कौन से हैं? (500 शब्दों में)।

5) शैक्षिक क्रियात्मक शोध के विभिन्न प्रकारों तथा लाभों पर चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

6) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित क्रियात्मक शोध के दो केस अध्ययनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (500 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) पिछले दशकों में दूरस्थ शिक्षा में ज्ञान का योगदान तथा निरूपण से एक स्वीकृत सत्तामीमांसा बन गई है जिससे सतत् योगदान को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप

एक अध्यापक के अपने विद्यालय की उस समस्या की पहचान कीजिए जो लम्बे समय से आप को उद्विग्न करती रही हो। इस पर क्रियात्मक शोध कीजिए और इसका समाधन निकालने का प्रयास कीजिए। अपने क्रियात्मक शोध की एक रिपोर्ट तैयार कीजिए और इसे कार्यान्वित कराने के लिए अपने विद्यालय में प्रधानाचार्य के साथ इस पर चर्चा कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY